उद्धारकर्ता का क्रूस

मार्क टेंम्पलर

आय.सी.सी.

उद्धारकर्ता का क्रूस

उद्धारकर्ता का क्रूस

यीशु और क्रूस के इर्द-गीर्द के लोगों के दृष्टीकोण सें

मार्क टेंम्पलर

भाग-२

क्रूस के आस-पास के
लोगों का चरित्र

११

पतरस

वह दूर ही दूर से यीशु के पीछे चला

वे यीशु को पकडकर ले गए। वे यीशु को महायाजक के घर में लाए। पतरस दूर ही दूर यीशु के पीछे पीछे चलता हुआ आया। परंन्तु जब वे आंगन में आग सुलगाकर उसके आसपास एकत्र हुए, वहाँ बैठे तब पतरस भी उनके साथ बैठ गया। एक नौकरानी ने उसे आग के उजियाले में बैठे हुए देखा। वह उसकी ओर ताककर बोली, "यह मनुष्य भी उसके साथ था।"

परंतु पतरस ने साफ इन्कार कर दिया, और कहा "हे लड़की, मैं उसे नहीं जानता।"

थोडी देर बाद किसी और ने उसे देखा और उससे यह कहा, "तू भी तो उन्ही में से है।"

पतरस ने कहा, "हे मनुष्य मैं उनमें से नहीं हूँ।"

एक घंटे के बाद, एक और मनुष्य ने दृढ़ता से कहा, "निश्चय, यह भी उसके साथ था; क्योंकि यह गलील प्रदेश का निवासी है।"

पतरस ने कहा, "हे मनुष्य मैं नहीं जानता कि तुम क्या कह रहे हो?" पतरस यह कह ही रहा था कि तुरंत मुर्गे ने बांग दी। तब प्रभु ने घूमकर पतरस को देखा, और पतरस प्रभु की वह याद आई जो यीशु ने उससे कही थी, 'आज रात को मुर्गे के बांग देने से पहले, तू तीन बार मुझे अस्विकार करेगा।' पतरस आंगन से बाहर निकला और फूट फूटकर रोने लगा।

लूका २२ - ५४ - ६२

शिमौन पतरस एक साधारण व्यक्ती था जिसे यीशु के प्रभाव ने असाधारण बना दिया। वह गलील में कफरनहूम में रहनेवाला एक अशिक्षित और गरम दिमाक का मछुवारा था। वह शुरूआति कलीसिया का खंबा था और शहिद होना उसके लिए तय था जिसके जिवन के शिक्षण और मृत्यू ने दो हजार वर्षो में लाखों करोडों पर प्रभाव किया। हम सभी की तरह वह भी एक कमजोर व्यक्ती था, लेकिन क्रूस और उसके प्रति उसकी प्रतिक्रिया ने हमेंशा के लिये उसका और हम में से कईयों का जिवन बदल दिया।

यीशु के साथ नये और महान अनुभव

पतरस इस पृथ्वी पर यीशु का सबसे नजदिकि मित्र था। जिन वर्षों में वह यीशु के पिछे चला, तब उसने बहोत से महान अनुभव किये। जब यीशु ने उससे कहा; "मेंरे पिछे हो लो" उसने अपना नाम और जाल वहीं छोड़कर उन के पिछे हो लिया। जब उसकी सास बीमार थी तब यीशु ने उसे चंगा किया और कफरनहूम में पतरस के घर का उपयोग सारे शहर को चंगा करने और परमेंश्वर के वचनों का प्रचार करने के लिये किया। कफरनहूम में जब यीशु ने जायरस कि बेटी को जिलाया तो उन तिन लोगों में पतरस भी एक था। जब यीशु ने कहा, "आओ", तो जिस समुद्र में पतरस मछली पकड़ता था उसी पानी पर चलने लगा, और यीशु से अपनी आँखे हटाते ही वह करीब-करीब डूब ही गया था। वह उस समय नाव में था जब शीष्य यह सोच रहे थे कि तूफान नाव को तहस-नहस कर देगा, और यीशु ने उस तूफान को शांत किया। और जब यीशु ने पाँच हजार लोगों को खाना खिलाया तब बचे हुअे भोजन को इकट्ठा करने में वह भी मदत कर रहा था।

पतरस वह पेहला शीष्य था जिसने यीशु को परमेंश्वर का पुत्र कह कर पुकारा, और यीशु ने उसे स्वर्ग के राज्य कि चाबियाँ देने का वादा किया। और जब यीशु ने क्रूस के बारे में बात कि तब पतरस ने उन्हे डाँटा। क्योंकि वह यीशु के इतना करीब था, और तब यीशु ने पलटकर उसे उसके सांसारिक विचारों के लिये उसे डाँटा। हमेंशा व्यवहारिक रहनेवाला पतरस पर्वत पर मूसा, एलिय्याह और रुपान्तरित मसीह के साथ खडा था और यह सलाह दि कि उन के सम्मान में वहा कुछ तम्बू बनाए जाएँ। उसने यीशु से प्रतिज्ञा कि वह अन्त तक यीशु के साथ रहेगा, तलवार खींच कर उस सैनिक का कान काटा जिसने यीशु को गिरफतार किया, और जब एक सेवक लड़की ने उससे प्रश्न किया तब उसने यीशु को नकारा। वह खाली कब्र में दौड़ा और वहां पर पड़े कपड़ो को देखकर हर्षीत हुआ और यीशु को किनारे पर लाने के लिये अपने नाव से बाहर कुदा।

भावनाओं कि गड़बड़ी

उस रात जब यीशु पकडवाया गया तब पतरस की भावनाएँ गड़बड़ा गईं। आखरी भोज के समय उसने बडे ही साहस से यीशु से प्रतिज्ञा कि, "यदि सब चेले आप के विषय में ठोकर खाएँ तो खाएँ, परन्तू मैं कभी भी ठोकर नही खाऊंगा।" (मत्ती २६:३३)

यीशु ने पतरस से कहा, "मैं तुझसे सच कहता हूँ आज ही इसी रात को मूर्गे की दो बार बांग देने से पहले तू तीन बार इन्कार करेगा कि तू मुझे जानता हैं" (मरकूस १४:३०) या जब यीशु गतसमनी के बाग में प्रार्थना कर रहे थे तब याकूब और यूहन्ना कि तरह जाग नहीं पाया (मत्ती २६:४०)। जब सैनिक यीशु को पकड़ने आये तब पतरस ने महायाजक के सेवक मालखूस पर तलवार चला कर उसना कान काट दिया। तब यीशु ने उसे डाँटा और तलवार वापस म्यान में रखने को कहा (यूहन्ना १८:११)। और जब यीशु को ले जाया जा रहा था तब पतरस दूर ही दूर से यीशु के पिछे चल रहा था ताकि सूरक्षीत रहे (लूका २२:५४)।

उस रात बहुत ठंड थी, और जब लोगों ने आग जलाई तो पतरस भी उन के साथ जा बैठा। एक सेवक लड़की को आग कि रोशनी में उसका चेहरा दिखाई दे रहा था। उसने पहचान लिया कि वह यीशु का अनुयायी है (लूका २२:५५-५६)। कुछ समय तक यह बात बहोत प्रसिद्ध थी - कुछ दिनों बाद लोग (हाल्लेलूया, दाऊद कि सन्तान) के नारे लगा रहे थे जब यीशु यरूशलेम में प्रवेश कर रहे थे। लेकिन अब पतरस ईतना निश्चित नही था उसने कहा, "हे स्त्री मैं उसे नही जानता"। कुछ ही मिनटों बाद किसी और ने पतरस पर यीशु के साथ होने का दोष लगाया, और उसने फिर इन्कार किया। एक घंटे बाद जब तिसरे व्यक्ति ने यह अनुमान लगाया कि पतरस यीशु का साथी हो सकता हैं क्योंकि वह भी गलील से था। तब पतरस ने उत्तर दिया "हे मनुष्य तुम किस कि बात कर रहे हो, मैं नहीं जानता।" और उसी समय मुर्गे ने बांग दि। यीशु को घर से बाहर लाया गया और यीशु ने सीधे पतरस कि और देखा, दोनो कि आँखे मिली और पतरस जान गया कि यीशु जान गये हैं। और कुछ ही घंटो पहेले कहे यीशु के शब्द उसे याद आए। उस के बाद बाहर जाकर रोने के अलावा कोई चारा नहि था।

उद्धारकर्ता के पदचिन्ह

जीवन तूफानों और तकलिफों से भरा हैं। यह निराशाओं से भरा हैं। इसकी चर्चा यीशु ने मत्ती ७:२४-२७ में कि, जब उन्होंने हम अपना जिवन कैसे बनाते हैं इस बात कि चर्चा कि थी। चाहे कुछ भी हो वर्षा तो भूमी पर ही गिरती हैं। लहरें हर प्रकार से उपर ही उठती हैं, और हवा बेहकर हमारे जीवन के घरों से टकराती हैं। लेकिन चट्टान पर बना घर यीशु के शिक्षाओं का अनुसरण करने से बनता हैं जो सदा के लिये टिका रहेगा। पतरस यीशु के पीछे चल रहा

था लेकिन कुछ दुरी से जब परीक्षा का समय आया वह असफल हुआ। दूरी कुछ ज्यादा थी।

बादमें १ पतरस २:२०-२१ में पतरस ने बयान किया : "यदि तुम ने अपराध कर के घूंसे खाए और धीरज रखा तो इसमें क्या बडाई की बात हैं? पर यदि तुम भला काम करके दुःख उठाते हो और धीरज रखते हो तो यह परमेंश्वर को भाता हैं। तुम इसी के लिए बुलाए भी गए हो; क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिए दुःख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया हैं ताकि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो।"

पतरस कहता है कि हमें यीशु के पदचिन्हो पर चलना चाहिए। यदि हम कुछ दूरी रख कर पीछे चलें तो जा नही पाएँगे कि उनके कदम कहाँ पड़े हैं। उनकी आवाज़ हमें साफ सुनाई नहीं देगी। यदि हम ठोकर खाएँ तो वह हमें संभाल नही सकेंगे। वह हमारा हाथ नही थाम सकेंगे। मैं एक बार 'होप वर्ल्डवाईड' के सन्चालक और संस्थापक डॉ. मार्क टिमलीन के साथ होप वर्ल्डवाईड के अफगानिस्तान में किये काम के लिये प्रार्थना कर रहा था। उन्होंने मुझे सख्त चेतावनी दि कि मैं बराबर उन के पदचिन्हो पर चलूँ क्योंकि युद्ध के समय के कई अ-विस्फोटित बम अभी वहाँ थे। उनकी यह सलाह मानने में मैं अत्यन्त प्रोत्साहित था।

जिवन के मार्गों को यीशु जानते हैं और, हम नही जानते। यदि हम करीब से उसके पिछे चलें तो हालाँकि हम उनकी यातनाओं में भाग ले सकते हैं, लेकिन यीशु ही हैं जो तुफानों में हमारी रक्षा करते हैं। हमें उनके करीब रहना चाहिये।

लेकिन पतरस की सलाह के बारे में हमारी क्या राय हैं? क्या हम उद्धारकर्ता के पदचिन्हों पर चल रहे हैं, भलाई करने के लिए यातना सहना (१ पतरस २-२०-२१)? या फिर हमारे और यीशु के बीच में एक बडा फांसला है जो हमें हम कहने की अनुमति देता हैं कि हम उनके पीछे चल रहे हैं; लेकिन आने वाली यातानाओ से बचाता भी है? क्या हम अपना समर्पण कर रहे हैं, जैसा हम में से कईयों ने किया था, जैसे जीवित बलिदान, परमेंश्वर को हमारा समय, पैसा और मन दे कर? क्या हम मसीह में विश्वास के कारण ठट्टा और विरोध सह रहे हैं? क्या हम पैसे और सफलता से प्रेम करने वाले संसार में उनके नाम की घोषणा कर रहे हैं? क्या हम उनके इतने करीब हैं कि उनके पसीने को सूंघ सकें, क्रूस उठाने से बहे उनके खून को देख सकें और जब वह

फूसफूसाएँ तो उन कि आवाज सुन सकें? या फिर हमें परमेश्वर कि आवाज सुनाई ही नही देती जब कि हमसे सवाल करने वाले की आवाज बहूत उँची हैं?

क्या आप मुझसे प्रेम करते हो?

मत्ती २८:७ में मत्ती लिखता हैं कि स्वर्गदूतने एक स्त्री को, यीशु के मुर्दों में से जी उठने और यीशु गलील में मिलेंगे यह समाचार शीष्यों को सुनाने के लिये भेजा। लेकिन मरकूस के सुसमाचार में (जो पतरस का प्रवक्ता था और मरकूस की किताब में पतरस का सुसमाचार दूसरी शताब्दी के कलिसीया के याजक पापायास के अनूसार लिखा), हम देखते हैं कि कैसे यीशु ने पतरस से कभी हार नही माना। मरकुस १६:७ में, "जाओ उसके चेलों" के बाद "और पतरस से कहो" यह शब्द जोडते हैं। यह जान पड़ता हैं कि यीशु के निवेदन पर, स्वर्गदूत ने स्त्री को विशेष निर्देश दिया कि जाकर पतरस को यीशु की बात बताए। पतरस के पापों के बावजूद भी यीशु ने उससे एक खास रूप से प्रेम किया। वह हमारे लिये भी ऐसा ही महसूस करता हैं।

बाद में यीशु समुद्र के किनारे पर थे जहाँ पतरस मछली पकड़ रहा था (यूहन्ना २१)। जब पतरस ने उन्हें देखा तो इतना आनंदित हुआ कि नाव से बाहर कूद गया और कठिन लहेरों से होकर किनारों पर आने लगा (यूहन्ना २१ : ७)। ठिक उसी तरह जब लूका ५ में यीशु ने पहेली बार पतरस को बुलाया, तब भी उसने बहुत सारी मछलीयाँ पकड़ी थी (यूहन्ना २१:११)। वहाँ पर यीशु ने उसके और दूसरे शिष्यों के लिए नाश्ते का प्रबंध किया।

उन्होने पतरस से तीन बार बात की (यूहन्ना २१ : १५-१९) और यह पूछा कि क्या वह "उनसे" अधिक यीशु से प्रेम करता हैं (जिसका अर्थ यह भी हो सकता हैं, "क्या तुम इन दूसरे भाईयों से बढ़कर मुझसे प्रेम करते हो?" यह तुम मुझे अपने इस मछली और जाल के व्यवसाय से अधिक प्रेम करते हो?")। पहले दो बार यीशु ने "अगापॉव" शब्द का उपयोग किया, जो एक यूनानी शब्द हैं जिसका अर्थ बीना शर्त के प्रेम जो मनुष्यों के लिये परमेश्वर के पास था, और परमेश्वर के लिये हमारे पास होना चाहिए। पतरस ने हर बार यही कर कर प्रतिक्रिया दिखाया कि वह यीशु से प्रेम करता हैं, जहाँ उसने "फिलिओ" शब्द का उपयोग किया जिसका अर्थ है; किसी को भाई कि तरह प्रेम करना। इस शब्द में "अगापॉव" शब्द से कम संकल्प और अधिक शर्त दिखाई पडते हैं। तिसरी बार जब यीशु ने पतरस से पूछा कि क्या वह यीशु से प्रेम करता हैं, तब उन्होंने "फिलिओ" शब्द का उपयोग किया - "क्या तुम मुझे

एक मित्र कि तरह प्रेम करते हो?"

इससे पतरस को चोट पहूँची। चोट इसलिए पहूँची क्योंकि यीशु उससे पूछ रहे थे कि क्या वह एक मित्र कि तरह भी उनसे प्रेम करता हैं या नहीं। इस से चोट इसलिये भी पहूँची क्योंकि यह प्रश्न तिन बार दोहराया गया - उसे यह याद दिलाते हुअे कि कैसे उसने तिन बार यीशु का इन्कार किया था। यीशु ने सिर्फ पतरस के मन को टटोला ही नहीं, लेकिन उसे एक बड़ा काम, और डरा देने वाली प्रतिज्ञा दिया। काम था उसके भेड़ों की (शिष्य) दोनों कि देखभाल। प्रतिज्ञा यह थी कि उसे भी एक दिन अपना जीवन समाप्त करने के लिये उस तरीके से ले जाया जाएगा जो वह कभी भी ना चाहता हो। पतरस के अनेक गलतीयों के बावजूद यीशु ने उस पर विश्वास किया। वह पतरस ही था जिसने यीशु के पुनरुत्थान के बाद के चालिस दिनों में यीशु को कई बार देखा और पहली कलीसिया कि अगवाई कि। (प्रेरितों के काम १ : ३, १५) वह पतरस ही था जीसने प्रेरित २ में पहले सूसमाचार का संदेश दिया। और जिसे यहूदियों को सूसमाचार प्रचार करने का काम सौंपा गया था (गलातियों २:७)। पतरस को इस बात से चोट पहूँची कि यीशु को नकारने के पाप का सामना उसे करना पड़ा और बिना शर्त उनसे प्रेम करने में उसे संघर्ष करना पड़ा। पश्चाताप चोट पहूँचाता हैं। लेकिन यीशु का प्रेम, कबूल करना और अनुग्रह लड़खड़ा रहे थे। फिर भी उन्होने पतरस को केन्द्रबिन्दू बनाया उनके संदेश को औरों तक पहूँचाने का।

पश्चाताप, चोट पहूँचाता है

सच्चा पश्चाताप चोट पहूँचाता है। २ कुरिन्थियों ७:८-११ में पौलुस ने इस के बारे में बात किया। उसने इस बात को स्विकार किया के उसके पत्र ने कुरिन्थियों को चोट पहूँचाई, लेकिन उनका दुख ईश्वरीय था जो उन्हें पश्चाताप की और ले गया। यीशु ने पतरस को उसे नाकारने कि चेतावनी दी थी। और अपनी इस चेतावनी में उन्होने मुर्गे की बात कही। (स्टिव जॉन्सन और शेरवीन मॅकिन्टोष के लिखित संगीत "अपसाइड डाऊन") में पतरस के चरित्र को रोज़ मुर्गे की बांग से सताया गया हैं। इससे उसे हर रोज अपने इन्कार किये जाने कि बात याद आती हैं। अपने जीवन के शेष दिन वह एक टूटे हुए व्यक्ति की तरह जीएगा जो कुछ दुरी से पीछे न चलेगा लेकिन अपने प्रभू और अपने मालिक यीशु मसीह के पदचिन्हो पर चलेगा। यीशु के साथ बिताए अपने दिनों को वह हमेंशा याद रखेगा, उनका रुपान्तर, पाँच हजार

लोगों को खिलाना और अन्य सभी चमत्कार। लेकिन उसे खास तौर पर याद रहा क्रूस और पुनरुत्थान, और कैसे यीशु ने उसके अंधकारमय पलों को विजय में बदल दिया। जैसा हम जानते हैं रीतियों में यह प्रचलित हैं कि पतरस को उसकी पत्नी के साथ रोम में क्रूस पर चढ़ाया गया लेकिन - सिर नीचे पैर उपर क्योंकि वह अपने आप को इस योग्य नही समझता था कि वह भी अपने प्रभू कि तरह क्रूस पर सीधा लटकाया जाए और मरे।

एक युवा व्यक्ति का बचाया जाना

गौरव, विशा और विशाल तीन भाई हैं जो कई वर्षों पहले दिल्ली कलीसिया में शिष्य बने। तीनों ही प्रभू से प्रेम करते थे। लेकिन धिरे-धिरे गौरव दूर होने लगा, वह मीटिंग में अनुपस्थित रहने लगा और प्रभू के साथ समय (प्रार्थना और पवित्र शास्त्र अध्ययन) बीताने में चुकने लगा। वह संगती और मेहमान नवाज़ी और लोगों के पास जाने में कम रूची दिखाने लगा और अपने वेटर के काम में ज्यादा व्यस्त रहने लगा जिससे उसे अच्छे पैसे मिलते थे। संसार में उसके कई मित्र थे और वह धिरे-धिरे मसिह के प्रति अपने संकल्प में पिछड़ने लगा। उसकी दोस्ती एक युवा स्त्री से हुई जो शिष्य नही थी। वह शराब और सिगारेट पीने लगा और अपने जीवन के प्रति खुला नहीं था। धिरे - धिरे यह फासला बढ़ने लगा। अन्ततः उसे काम और मसीह में से एक को चुनना था और उसने संगति और विश्वासीयों का साथ छोड़ दिया।

हालाँकि गौरव ने मसीह को छोड़ दिया लेकिन उसके भाई जो कलीसिया में थे उसके साथ संबन्ध बनाए रखा। कुछ समय के लिये उसने संसार में अपने जीवन का आनंद उठाया। एक रात जब वह अपने तीन दोस्तों के साथ करीब दो बजे रिक्षा में घर लौट रहा था। रिक्षा एक कमज़ोर वाहन है और उस रात रास्ते पर बहुत अंधेरा भी था।

अचानक रिक्षा ड्रायव्हर ने देखा रास्ते पर एक ट्रक खडा हुआ हैं और तेज जाने के कारण ट्रक से बचना मुश्किल था। ड्रायव्हर ने रिक्षा से बाहर छलांग लगा दी और पीछे बैठे तीनों असहाय्य लोगों के साथ रिक्षा ट्रक से टकराया और वह तीनों उसी में फंस गए।

दो लड़कों की उसी जगह मौत हो गई। गौरव को सिर पर गेहरी चोट लगी। दो घंटे तक उसका खून बहता रहा और वह वहीं सड़क पर पड़ा रहा। बाद में उसके दोस्तों ने किसी तरह मदत कि व्यवस्था की।

कई महिने तक किसी को यह पता नही था कि गौरव जियेगा कि नहीं।

उसके दिमाग़ में एक नली लगाई गई जिस के द्वारा तरल पदार्थ बाहर निकाले गए और वह कई ऑपरेशनों से गुजरा। डॉक्टर बहुत परिश्रमी थे और कुछ समय बाद यह बात साफ हुई, कि उसके दिमाग़ में कोई गंभीर हानी नही हुई थी और वह जीवित रह सकता था। हमने लगातार उसके लिए प्रार्थना की। कई उस के घर पर उससे मिलने जाते। कलीसिया ने उसके दवाई का खर्च उठाया और कई शिष्यों ने पैसा और खून देकर उसका ध्यान रखा। कई लोग घर में उसकी सेवा करते और उसके साथ प्रार्थना करते थे।

इसी बीच कलीसिया के बाहर के उसके मित्र बहूत कम दिखाई पड़े जो उसकी हालत जानना चाहते थे। उसे यह बात समझ आ गई कि दूर से पीछे चल कर उसने बड़ी मूर्खता की थी। उसने भाईयों से उसके साथ पवित्र शास्त्र अध्ययन करने को कहा। उसने पाप की कबूली की और आँसूओं के साथ पश्चाताप किया। और २३ ऑक्टोबर २००५ को वह मसीह में पुनःस्थापित किया गया। जहाँ सारे मसीही और उसके भाईयों ने जश्न मनाया। यह आधुनिक समय का पतरस हैं जो फिर कभी भी दूरी से पिछे न चलेगा।

निर्णय करने का समय

आओ हम यह प्रार्थना करें कि परमेंश्वर के पास लौटने के लिये हमें किसी महान आपत्ती की जरूरत ना पड़े। क्या आप कुछ दूरी से पीछे चल रहे हैं? यदि ऐसा है तो लूका १५:३-६ में के चरवाहे की तरह परमेंश्वर तुम्हे ढूंढ रहा हैं।

लूका १५ के खोए हुए पुत्र के पिताकी तरह परमेंश्वर तुम्हारा इन्तजार कर रहा हैं, जो खेतों में तुम्हारी और दौड़ने को तैयार खड़ा है। यह समय है घर लौटने का।

मन के लिये

१) यीशु के चमत्कारों की पतरस के पास अद्‌भुत यादें थी। आप के मसीह जीवन में घटे कौनसे चमत्कारों कि महान यादें आपके पास हैं?

२) क्या आप यीशु के करीब चल रहे हैं या आप के और यीशु के बीच में दूरी बनाये हो? यदि आप करीब से चल रहे हैं तो, आमेन। उसके कदम से कदम मिलाकर चलो। यदि आपने दूरीयाँ बढ़ाई हैं तो इन का कारण क्या हैं? इसे आप कैसे बदल सकते हो?

३) यदि यीशु तुम्हारे पास आकर पूछे कि, "क्या तुम इन से अधिक मुझसे प्रेम करते हो?" यह "इन" आप के जीवन में क्या होंगे? क्या आप यीशु के लिये कुछ भी त्यागने को तैयार हो?

१२

यहूदा

उसने जल्दी हार माना

"यहूदा इस्करियोती बारह प्रेरितों में से एक था। वह महायाजकों के पास गया। उस ने उन से पूछा, "यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूँ तो तुम मुझे क्या दोगे?" उन्होने उसे तीस चांदी के सिक्के तौल कर दिए। यहूदा उसी समय से यीशु को पकड़वाने का अवसर ढूँढने लगा।"

मत्ती २६:१४-१६

यहूदा इस्करियोती। इस नाम से ही गहरी भावनाएँ उभरती हैं। किसी के लिये अपने बच्चों को यह नाम देना बहूत ही मुश्किल हैं। और किसीको 'यहूदा' इस नाम से बुलाना आज के सयम में एक बड़ा अपमान माना जाता हैं।

फिर भी यहूदा आपकी और मेंरी तरह एक साधारण व्यक्ति था, औरों की तरह उसने भी यीशु के पीछे चलने के लिए सब कुछ त्याग दिया था। बारह शिष्यों में वह भी एक था। उस पर इतना भरोसा था कि उसे खजांची बनाया गया। वह यीशु और उन के गुट का पैसा लेकर चलता था (यूहन्ना १२:६)। जाने के दिन तक संगती में उसका स्वागत था।

एक मंद ढलान

समय के साथ, यहूदा के मन के साथ शायद कुछ हुआ। जैसे वह गलील के धूल भरे रास्तों पर चला; जैसे उसने जब यीशु ने ५ हजार को खाना खीलाया तो बचे हुए टुकड़े समेंटे, जैसे वह भरी हुई नाव जो तुफान में घिरी थी, जागता रहा, शायद वह वीचार कर रहा था। ("यीशु के लिए मैंने बहोत कुछ त्यागा हैं")। "मैं उत्तम चीजों का हकदार हूँ।" एक कहानी जो इतने सुंदर रुप से शुरू हुई थी दुख के साथ खत्म हुई। वह एक बुरा व्यक्ति नहीं था, लेकिन उसके चुनाव गलत थे। हम में से कोई भी उसकी तरह हो सकता हैं। तीन कमजोरीयाँ थी जीसने यहूदा को गिराया, खुलेपन का अभाव, पैसों से प्रेम और इमानदारी खोना।

खुलेपन की कमी

दूसरों पर यह स्पष्ट नहीं था कि यहूदा संघर्ष कर रहा था। किसी को

पता नहीं था। यूहन्ना - १३:२१-२२ में जब यीशु ने कहा कि कोई उसे धोका देगा, "उन के शिष्य एक दूसरे की और घूरने लगे इस बात से अंजान कि वह किस की और इशारा कर रहे थे।" यहूदा अपने संघर्ष को छुपाए था। यीशु को पता था कि यहूदा उन्हे धोका देगा। (यूहन्ना १३:११), फिर भी इस बात को उन्होने कभी प्रगट नहीं किया। जैसे एक भाई ने एक बार यह निरिक्षण कीया कि, "यहूदा पर एक भी चुटकूला नही है।" यीशु ने उसके साथ अलग व्यवहार नहीं किया, और इसीलिए शिष्यों के पास सुराग नही था कि वह यहूदा को पहचान सकें।

ऐसा लगता हैं कि यहूदा ने कभी किसीको अपने जिवन में शामिल नहीं किया। यीशु के आंदोलन में वह एक उच्च स्तर का अगुवा था लेकिन कोई भी उसे ठीक से नही जानता था। एक बार उसने यीशु को धोका दिया, तो उस के पास ऐसा कोई ना था जिस के पास वह जा सके। दुःख की बात हैं कि उसने महायाजक के पास अपने पाप की कबूली की "मैंने निर्दोष व्यक्ति को वध के लिये पकड़वाकर पाप किया हैं।" (मत्ती २७:४)

वे खुद भी धार्मिक व्यक्ति नहीं थे, इसलिए उन्होंने उसकी मदत नहीं की, यह कहकर उसे वापस भेज दिया "हमें क्या तू ही जान।"

पैसों का प्यार

यहूदा पैसे को अच्छी तरह समझता था। शायद वह पैसों का लेनदेन अच्छी तरह कर सकता था। इसीलिए उसे पैसों की थैली सौंपी गई। लेकिन बीच में कहीं कुछ गलत हो गया। उसने पैसे की थैली से पैसे चुराना शुरू किया (यूहन्ना १२:६)। क्यों? शायद उसके परिवार को पैसे की जरूरत थी। शायद उसका कोई चहिता बीमार था। या हो सकता हैं उसे ऐसा महसूस हुआ कि कोई उसकी प्रशंसा, आदर नही करता, या उसे उतना सम्मान नही मीलता होगा। उसने सोचा होगा, "मैं कड़ी मेहनत करता हूँ; मैं ज्यादा का हकदार हूँ।" दूसरे कई पापों की तरह यह शायद छोटी चोरी से शुरू हुआ और सही भी लगने लगा लेकिन यह एक आदत बन गया।

जैसे यहूदा के इमानदारी की कमी बढ़ती गई तब पैसों के बारे में यीशु के लिए निर्णय यहूदा को खलने लगे। जब मरियम ने यीशु के पैरों पर ईत्र उँडेला तब यहूदा ने देखा कि उस का हिस्सा उस बोतल से बहा जा रहा हैं और इस बात ने उसे गुस्सा दिलाया। यह बात जरूर हैं कि अपनी इस निन्दा को उसने योग्य रूप की तरह बताया, "इससे हम गरीबों की मदत कर सकते थे।"

(यूहन्ना १२:३-६) "इस ईत्र को क्यों बरबाद किया?" (मरकुस १४:४) यहूदा की नकारात्मक स्वधार्मिक शब्द सही लगे और दूसरे भी उसके साथ मिलकर कठोरता से उस स्त्री को डांटने लगे और यीशु पर भी दोष लगाया कि उन्होने इस का गलत उपयोग किया। जैसे यीशु ने यरूशलेम में प्रवेश किया यह बात स्पष्ट थी की संघर्ष की तैयारी की जा रही थी। उन के शिष्य फरिसीयों और सदूसीयों का विरोध देख रहे थे। यहूदा ने इस मौके को देखा और पूछा "यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ में पकड़वा दूँ तो तुम मुझे क्या दोगे?" (मत्ती २६:१५) उन्होंने एक एक करके तीस चाँदी के सिक्के, उसे देने के लिये गिने। फिर वह सही मौके की तलाश करने लगा कि कब यीशु को पकड़वाए।

विश्वास का खोना

यहूदा हमेंशा से एक धोकेबाज नहीं था। दूसरे शिष्यों की तरह यीशु के पीछे चलने के लिये उसने भी सबकुछ त्याग दीया था। उसने चंगाईयाँ देखी थीं। बारह शिष्यों में चुने जाने का सम्मान का आनंद भी उसने लिया था। तीन वर्षों तक रास्तों पर रहने के तकलीफ को उसने भी सहा था। उसने यीशु को मूर्दो को जिलाते देखा था। जब यीशु ने तूफान को शांत किया तब वह भी नाव में था, जब यीशु ने ५ हजार को खाना खिलाया तब उसने भी खाना खाया। यीशु के आदर्श शब्दों से उसका मन भी हिल गया था। उसने यीशु में, उनके शिक्षण में, और उनके आंदोलन में विश्वास किया था।

लेकिन यहूदा का यीशु में विश्वास इतना सक्षम नहीं था कि वह अकेले इन तूफानों को झेल सके। शायद यीशु के कहे कुछ शब्दों और कुछ कार्यों से वह असहमत था। शायद वह चाहता था कि रोमी अधिकारीयों का सामना करने और चुनौती देने में यीशु और अधिक तत्पर हों। सीधी बात यह हैं कि सच की बजाए आराम की इच्छा अधिक बढ़ गई।

जैसे पिछले अध्याय में मैंने लिखा के यीशु उन तुफानों के बारे में बात कर रहे थे जो हमारे जीवन में आते थे। दोनों ही किस्सों में जिन्होंने अपना घर चट्टान पर और जिन्होंने रेत पर बनाया - तूफान, बारीश और बाढ़ का पानी उन घरों से टकराये जो हमारे जीवन को प्रदर्शीत करता हैं। कठिनाई के समय में पुरुषों का चरित्र सामने आता हैं। एक व्यक्ति सही में किस बात पर विश्वास करता हैं यह रविवार के सुबह का उसका बर्ताव नही बताता, लेकिन परीक्षा के समय और मूसीबत जो हम सभी पर आती हैं यह हमारी सच्चे बर्ताव को सामने लाती हैं।

परमेंश्वर हर पाप को क्षमा करते हैं। लेकिन हर पाप का एक परिणाम होता हैं। धोका एक ऐसा पाप हैं जो तलाक के समान है - यह ऐसा है कि उस सीमा रेखा को लांघना जहाँ पर लौट कर आना कठिन हो जाता है। शेक्सपिअर का 'मेंकबेत' कई हत्याओं और धोके के बाद कहता है, "मैं खून में यहाँ तक आगे बढ़ चूका हूँ कि अब मैं लौटने का तकलीफ और ना लूँ, क्योंकि यह भी उतना ही कठिन होगा जितना रक्त के उपर से चलना।"

मेंकबेत के लिये लौटने का कोई रास्ता नहीं था। और यहूदा के लिये भी लौटने का कोई रास्ता नहीं था। यह सम्भव हैं कि वह भी यह नहीं चाहता था कि यीशु मरे, क्योंकि मत्ती २७:३-४ में वह कहेता हैं, "जब यीशु के पकड़वानेवाले यहूदा ने देखा कि यीशु दोषी ठहराया गया हैं, तब वह पछताया और वह तीस चांदी के सिक्के महायाजकों और धर्मवृद्धों के पास लौटा लाया। उसने कहा "मैंने निर्दोष व्यक्ति को वध के लिये पकड़वाकर पाप किया हैं।" यहूदा ने यीशु से नाता तोड़ने का एक न मोड़ने वाला निर्णय लिया था यह एक तलाक। और मलाकी २:१६ में परमेंश्वर कहते हैं, "मैं तलाक से घृणा करता हूँ", हमारे विवाह में भी इस बात में वह घृणा करता है। हमारे परिवार में वह इस बात से घृणा करता है। तुम्हारे काम में इस बात से वह घृणा करता है। और जब यदि बात कलीसिया में आती हैं और लोग एक दूसरे से अलग हो जाते हैं तो इस बात से वह घृणा करता है।

यीशु का आप के लिए क्या मोल है?

यहूदा ने तीस चांदी के सिक्कों के लिए यीशु को धोका दिया, जो पुराने नियम के समय गुलामों की कींमत हुआ करती थी, (निर्गमन २१:३२), एक बहूत ही कम कीमत। कुछ दिनों में उसे यह एहसास हुआ कि उसने एक गलत चुनाव किया। उसका विश्वास इतना मजबूत नहीं था कि वह यह विश्वास कर सके कि परमेंश्वर उसे क्षमा कर सकते हैं। जब वह मुसीबत में था, तो वह गलत लोगों, अधार्मिक महायाजकों के पास गया जिन्होंने उसे पैसे दिये (मत्ती २७: ३-४)। उन्हें उसकी समस्याओं में कोई दिलचस्पी नही थी, और वह आशाहीन होकर निकला और अपने आप को मार डाला। इसके कुछ ही घंटो पश्चात यीशु मूर्दो में से जीलाया गया। यहूदा ने बहुत जल्दी हार मान ली।

कठिनाईयों के समय, और भावनाओं के समय, यह मुम्कीन हैं कि हम उन को जिनसे हम प्रेम करते हैं, और यीशु को भी धोका दे सकते हैं, किसी हद तक यह बात रिश्तों को नुकसान पहूँचाती हैं। यीशु की कीमत एक काम से

कई बढ़कर हैं। एक सस्ते रोमांच से कहीं बढ़कर हैं। अनगिनत पैसों से भी बढ़कर हैं। बदले से बढ़कर, एक अच्छे रुतबे से बढ़कर।

क्या आप अपने जीवन के बारे में खुले हैं? क्या ऐसे धार्मिक व्यक्ति हैं जो सच में आपके विचारों को जानते हैं? क्या ऐसे लोग हैं जो आपके पारीवारीक जीवन की सच्चाई को जानते हैं? क्या आपकी आत्मा में अस्विकारे पाप ठहरे हुए हैं? क्या इस संसार की बातें, पैसों का मोह, धीरे-धीरे आपके मन और हृदय पर काबू कर रहा हैं? क्या परमेंश्वर का विश्वास इस वर्षो में कम और आपके जीवन में कमज़ोर हो रहा हैं जब आप एक के बाद एक समझौते कर रहे हैं? यदि ऐसा हैं तो अब भी समय हैं बदलने का।

चुनाव हमारा है

जब कठिन समय आता है तब हमें यहूदा के रास्ते का चुनाव नहीं करना चाहिये। हमेंशा चुनाव हमारा है, हम कैसे जीते हैं। भारत में, नई दिल्ली में, गायत्री को कलीसिया में आमंत्रण दीया गया और उसके परिवार के विरोध के बावजूद वह शिष्य बनी। उस वक्त तक उसका पति उसे छोड़ चुका था, और वह उसके भाईयों और बाकि परिवार के साथ अपने दो बच्चों की देखभाल करके रह रही थी। उसका पती जो उसे छोड़ चुका था और उसके परिवार के बाकी सदस्य कई रूप से उसके विश्वास का विरोध कर रहे थे; और कलीसिया में जाने से रोकने के लिये उसे और उसके दो बच्चों को घर में बन्द करके रखते थे। शिष्य बहने उसे मीलने जाया करती थी और उसने परमेंश्वर पर विश्वास करना नहीं छोड़ा। वह प्रार्थना करती और बाईबल पढ़ती रही और जो कुछ भी थोड़ा पैसा उसके पास होता वह दशमांश के रूप में शिष्यों के साथ भिजवा देती थी। उसके बच्चे जो कलीसिया नही जा पाते थे फिर भी परमेंश्वर के प्रति अपने माँ का विश्वास और विश्वास में बने रहने का उसका चुनाव देखा और इस बात की उन पर गहरी छाप पड़ी।

अन्ततः गायत्री ने अपने बच्चों के साथ भाग जाने का निर्णय बनाया, उनके शरीर पर जो कपड़े थे उसी के साथ वह वहाँ से भाग निकले और दयालू लेकीन गरीब मसीही के घरों में जा बसे। उसके पति के पापों के बावजूद वह अपने पति में और परमेंश्वर की शक्ती में विश्वास करती रही कि एक दिन उनका विवाहित जीवन बदले। शिष्यों के बार-बार उनके पास जाकर मदत करने प्रोत्साहन देने और सलाह देने के कारण वह और उसका पति साथ रहने लगे और कभी कभार वह कलीसिया भी आ जाया करता।

गायत्री के विश्वास का उसके बच्चों पर गहरा प्रभाव था उन्होंने उसे खुला रहने का चुनाव, परमेंश्वर के लिए अपने पैसों का त्याग करने का चुनाव, और डर और शंका की बजाए विश्वास करने का चुनाव करते देखा। यह चुनाव यहूदा के चुनावों के विपरीत थे और वह गहराई से प्रेरणादायक थे। गायत्री के दोनों बच्चों लडकी वंदना और लडके समीर ने शिष्य बनने का निर्णय कीया और मसीह में बपतिस्मा लीया। दुःख की बात है कि उसके पति ने कभी भी मसीह के प्रति कोई निर्णय नहीं लीया और शराब से लगी बिमारी से मर गया। लेकिन अन्तीम दिनों में वह उसकी पत्नी और परिवार के साथ खुशी से रहा - क्योंकि गायत्री ने यीशु पर और अपने पती पर विश्वास करने का चुनाव किया था।

इस समय गायत्री एक गैर सरकारी संस्था के लिये स्वास्थ सेविका का काम कर रही है और उत्तर प्रदेश में नैनीताल में एक छोटी कलीसिया की स्थापना का एक भाग है। वह पैसेवाली नही है, लेकिन वह एक शिष्य है, और रात में वह चैन की नींद सोती है जीसका कारण है वह चुनाव जो उसने किये।

मन के लिए

१) आप कीतने खुले हैं? किस के साथ आप पूरी तरह से खुले और इमानदार हो सकते हैं? क्या आप के भीतर कुछ ऐसा है जीस की कबूली आपने नहीं की और करना चाहते हैं? क्या आप अपना आनंद किसी के साथ बांटते हो?

२) क्या आप के काम की जगह, या कर अदा करने में या किसी और परिस्थिती में आप की इमानदारी से आपने समझौता करना शुरू कीया है? इस प्रकार की लालसाओं को जब आप नकारते हैं तो आपको कैसा लगता है?

३) क्या आपकी कलीसिया में या आपके जीवन में कोई ऐसा है जीस से आप प्रभावी रुप से अलग हो चुके हैं? इसे सही करने के लिये क्या आप कुछ कर सकते हैं?

१३

थोमा

शंका से निपटना

परन्तु बारह शीष्यों में से एक शिष्य थोमा जो दिदुमुस (जुड़वां) कहलाता हैं, उनके साथ न था जब भी यीशु आए थे। जब शिष्यों ने उसको बताया कि उन्होंने प्रभु को देखा हैं तब उसने उनसे यह कहा, "जब तक मैं यीशु के हाथों में कीलों के छेद न देख लूंगा, और उन कीलों के छेदों में अपनी उंगली और उसके पंजर में अपना हाथ न डाल लूंगा तब तक मैं विश्वास नही करुंगा।"

(यूहन्ना २०:२४-२५)

पवित्र शास्त्र के बारे में एक बात जो मुझे अत्यंत भाती है वह ये है कि इसके नायक इतने सच्चे हैं और हमारी तुम्हारी तरह मानवी कमजोरियों से भरे हैं। हमारे भाई थोमा के बारे में लिखे यह वचन उसे हमारे लिये जीवन्त करते हैं - हमें में से कईयों को उसकी याद आ सकती है जब हम वैसा ही महसूस करें जैसा उसने किया था। परमेश्वर के वचनों में मेरा मनपसंद वचन है याकूब ५:१६-१७ जो कहता है, "धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है। नबी एलीयाह भी हमारे समान दु:ख-सुख भोगी मनुष्य थे।" थोमा, एलीयाह और पतरस सभी हमारी तरह ही थे। उन्होने शंका, निराशा और भय से संघर्ष किया।

थोमा ने यीशु से इस बात का सबूत मांगा कि वे सही में परमेश्वर की ओर से हैं या नहीं। फिर भी वह और ये दूसरे लोगो ने अपने शक पर काबू पाया और उनके महान सेवक बने।

थोमा अकेला नहीं था

शक करने में थोमा ही अकेला नहीं था। जैसा अध्याय ११ में लिखा है पतरस ने भी जब वह पानी पर चल रहा था शक किया (मत्ती १४:२२-२३) और फिर मत्ती १६:२१-२३ में जब यीशु ने अपने मृत्यू के बारे में कहा तब भी उसने संदेह किया। फिलीप, अन्द्रियास और दुसरे शिष्यों ने तब भी संदेह किया कुछ रोटी और मच्छली से यीशु ५००० लोगों को कैसे खिलाएँगे (यूहन्ना ६:७-९, मरकुस ६:३७, लूका ९:१३)। जब नाव तूफान में घिरा तब भी शीष्यों ने संदेह किया और घबराए (मरकुस ४:३५ - ४१, मत्ती ८:२३-२७, लूका ८:२२-२५)।

यीशु के पुनरुत्थान के बाद जो शीष्य इम्माऊस के रास्ते पर जा रहे थे उनके मन में भी शंका थी (लूका २४:१९-२१)। जब शिष्यों ने पुनरुत्थान के बाद यीशु को देखा तो उनकी आराधना की, लेकिन फिर उनमें से कुछ ने संदेह किया (मत्ती २८:१७, लूका २४:३६-३९)!

मन में शंका के बावजूद इन सभी लोगों ने विश्वास में जीने और जीवन के अन्त तक यीशु के पीच्छे चलने का चुनाव किया, और शहीद हुए। चेन्नई में पुर्तगालियों का बनाया हुआ एक चर्च है जो एक पहाड़ पर है और उस चर्च का नाम, 'सन्त थोमा पर्वत' है। पारंम्पारिक विश्वास है कि थोमा वह पहला व्यक्ति था जिसने भारत में सुसमाचार लाया। उस समय के शासक द्वारा भेजे गुण्डों ने उसी पर्वत पर भाले से उसको मार दिया।

मेंरे लिये यह एक अत्यन्त प्रेरणा की बात है कि कैसे ये व्यक्ति और खास तौरपर थोमा अपने संदेह पर काबू पाकर विश्वास से जीये। हाँ यीशु को उनपर बहुत काम करना पड़ा।

यीशु और संदेही

जो संदेह करते हैं यीशु उनसे कोमलता से निपटते हैं। उनके सगे भाई यूहन्ना ने लिखा, "उन पर जो शंका में हैं दया करो" (यहूदा २२)। लूका ७:१८-२८ में यूहन्ना को जेल में डाला गया, शायद अपनी नश्वरतापर वह विचार मग्न था। जेल में अकेला, उसके पास सोचने का वक्त ही वक्त था। और संदेह करने का भी। तो उसने यीशु के पास अपने प्रश्नों के साथ सन्देशवाहक भेजे : "क्या तुम ही वह हो जो आनेवाले थे?" यीशु ने इसका उत्तर चमत्कारों से दिया और संदेशवाहकों से कहा उसे चमत्कारों के बारे में बताने को कहा। यीशु ने यूहन्ना की प्रशंसा में कहा परमेश्वर के राज्य के आने से पहले यूहन्ना जैसा महान व्यक्ति और कोई नही। (लूका ७:२८)

मरकुस ९ मे दुष्टात्मा से पिडीत बच्चे का पिता अपने विश्वास से झूज़ रहा था। वह विश्वास के साथ शिष्यों के पास आया, लेकिन वे उसकी मद्द न कर सके। इस बात ने उस बच्चे और उसके पिता के ईर्द-गिर्द खड़े लोगों की भावनाओं को भड़का दिया। पिता निश्चित नही था कि यीशु मद्द कर पाएँगें। उसने कहा, "यदि आप कुछ कर सकें तो हम पर तरस खाकर हमारी सहाय्यता कीजिए" (व.२२) यीशु ने कहा, "विश्वास करनेवाले के लिये सब कुछ हो सकता है (व. २३)। उस व्यक्ति की प्रतिक्रिया उसके दोहरे पन के स्वभाव को दर्शाता है; मैं विश्वास करता हूँ, मेंरे अविश्वास का उपाय

कीजिए।" यीशु उसकी मद्द करना चाहते थे।

जब यूहन्ना २० में थोमा ने संदेह किया तब यीशु ने उसे अपने हाथ और पैर दिखाए। उन्होनें थोमा को प्रोत्साहन दिया कि वह उन्हें छुए और महसूस करे कि वे सचमुच में हैं। थोमा भटक रहा था, लेकिन यीशुने उसे सच्चाई बताने के लिये समय निकाला और प्रयत्न किया। सभी शिष्य एक साथ जमा हुए पर थोमा वहाँ नही था (व. २४)। फिर भी यीशु ने संयम दिखाया। हालाँकि थोमा ने कई चमत्कार देखे थे फिर भी संदेह कर रहा था, यीशु उसके विश्वास में उसे मजबूत करने में मद्द करने के लिये फिर भी तैयार थे। हम नही जानते कि जब यीशु पहली बार शिष्यों पर प्रकट हुए तो थोमा क्यों वहाँ नही था। उसकी अनुपस्थिती का शायद कोई वैध कारण होगा, या शायद निराशा या विश्वास की कमी भी हो सकता है। चाहे कारण कुछ भी हो हम यह जानते हैं कि, एक सप्ताह बाद जब यीशु फिरसे प्रकट हुए तब वह शिष्यों के साथ था। थोमा ने जो किया उससे हम यह सीखते हैं कि शिष्यों के साथ रहने से हमारा विश्वास मजबूत बनता है।

कुचला हुआ नरकट, चोट खाया हुआ मन

मत्ती १२ में यीशु बहुत लोगों को चंगा कर रहे थे और साथ ही धार्मिक अगुवों का विरोध भी सह रहे थे। मत्ती, यशायाह ४२:१-४ का विवरण देता है, "वह कुचले हुए सरकण्डे को न तोड़ेगा; और न धुआं देती बत्ती को बुझाएगा" (व. २०)। एक नरकट जब कुचली जाती है तो, टूटने पर होती है। एक धुआं देती बत्ती बुझने पर होती ह। यीशु इतने कोमल थे कि वे कुचले हुए को न तोड़ेंगे और धुआं देती बत्ती, जो बुझने वाली है उने न बुझाएँगे। यूहन्ना २०:२४-२९ में जब थोमा का संदेह दूर हुआ, उसने यीशु को, "हे मेंरे प्रभु, हे मेंरे परमेंश्वर" कहा। वचन ३०-३१ में यूहन्ना यह वर्णन करता है कि यीशु ने कई और चमत्कार कीये जो एक पुस्तक में नहीं लिखे जा सकते, लेकिन यह बातें लिखी गईं ताकि हम विश्वास करें।

यीशु और संदेही

अनेक संदेह करनेवालों के प्रती यीशु की प्रतिक्रिया एक ही कौशल सामने लाती है वह है, विश्वास करने में उनकी मदद :

- कोमल और दयालू बनो (यूहन्ना २०:२६, यहूदा २२, १ पतरस ३:१५)
- उनके विचारों को सुनो - उन्हें इमानदार बनाओ (यूहन्ना २०:२५, मरकुस ९:२४)

- सबूत दो (यूहन्ना २०:२७, ३१; मरकुस १६:२०, प्रेरीत १:३)
- उन्हें संगती में शामिल करो (यूहन्ना २०:२४, २६; लूका २४:४३)
- उन्हें एक निर्णय लेने का मौका दो, "हे मेंरे प्रभु, हे मेंरे परमेंश्वर" (यूहन्ना २०:२७-२८, लूका २४:३८-३९)

संदेह, विश्वास और साहस का दुश्मन है। जब लोग संदेह न करने और दुचित्ता न होने के लिये प्रार्थना कर रहे थे तब याकूब ने उन्हें सचेत किया (याकूब १:६-८)। रोमियों १४:२३ कहता है, "जो कुछ विश्वास से नहीं आता वह पाप है।"

संदेह हमें पाप के रास्ते पर इतना नीचे ले जा सकता है कि वहाँ से धार्मिकता पर लौट पाना कठिन हो जाता है। अदन के बाग में शैतान ने आदम और हव्वा को परमेंश्वर से दूर करने के लिये सन्देह का उपयोग किया। वह आज भी हमें परमेंश्वर और एक दूसरे से अलग करने के लिये संदेह का उपयोग करता है। वह दोष लगाने वाला है (प्र.वा. १२:१०), जो हमें एक दूसरे और परमेंश्वर के प्रति गिरी हुई बात सोचने की लालसा देता है।

मुख्य कारण

हम में से हर एक के लिये वही चुनौती है जो थोमा की थी। "मेंरे संदेहों के साथ मैं क्या करुंगा? थोमा के पास खुले आम अपने विचार रखने का साहस था। यूहन्ना ११ में अन्य शिष्य वैतनियाह में जाकर मरने के लिये तैयार थे तब उसने उनका विरोध किया। जब शिष्यों ने उसे पुनरुत्थान के बारे में बताया तो उसने सबूत की माँग की और जब यूहन्ना २०:२४-३१ में जब उसके सामने सबूत रखे गए, तब उसने खुलेआम यीशु मसीह को दण्डवत किया (व. २८)। अंत में, उसके पास यीशु के लिए मरने का भी साहस था। एक व्यक्ति जो संदेह से भरा था उसके लिए यह एक अत्यंत आदर्श मौत थी।

टौलकिन की "लॉर्ड ऑफ रिंगस्" की तीन कहानियों पर हाल ही के वर्षों में बनी फिल्में बहूत सफल और प्रेरणादायक रहीं। इसमें अच्छाई के विरुद्ध बुराई की कहानी है, कुछ भयभीत लोगों का बहुत दूर्गम, विचित्र लोगों से टकराने के साहस की कहानी है। यह कहानी है हमारे संदेहों के बजाए हमारे विश्वास और विश्वास पीछे चलने के शक्ती की। इस फिल्म का विज्ञापन बड़े ही प्रेरणादायक रुप में किया गया था :

वहाँ.... खोए बिना विजय नहीं - बिना यातना विजय नहीं - बिना बलिदान स्वतंत्रता नही।

जब फिल्म अन्त होने पर है तो लगता है कि सब कुछ लुट जाएगा, वह छोटा फ्रोडो दण्डाज्ञा पर्वत पर 'शक्ति के गोल' का विनाश करने कभी नही पहुँच पाएगा। ॲरागॉर्न कुछ लोगों को लेक मॉरडॉर गेट पर हमला करने निकल पड़ता है, ताकि दुष्ट सेना का लक्ष विचलित करे और फ्रोडो को निकलने का मौका दे। उसके लोग सही करना चाहते हैं लेकिन वे डरे हुए और संदेह में थे, जो वास्तविक था। ॲरागॉर्न उनसे बात करता है।

मैं तुम्हारी आँखो में वही भय देखता हूँ जो मेरे मन को कमज़ोर कर दे। एक दिन ऐसा भी आएगा जब लोग अपना साहस खो बैठेंगे, जब हम अपने मित्रों को छोड़ कर संगती के सभी बन्धन तोड़ देंगे। लेकिन वह दिन आज का दिन नहीं है। भेडीयों का एक समय और छीन्न भिन्न कवच, जब मनुष्यजीवन टूट कर बिखर जाता है। लेकिन वह दिन आज का दिन नही है। आज हम लड़ेंगे।

हम इस कहानी का अन्त जानते हैं - विजय। और हम थोमा के कहानी का अन्त भी जानते हैं - विजय। लेकिन हमारी कहानी कैसे खत्म होगी? इसका मुख्य मुद्दा है कि हमारे संदेह से हम कैसे निपटते हैं?

संदेह से विश्वास की ओर

हैद्राबाद कलीसिया में व्यंकट रामन्ना एक २४ वर्षीय शिष्या है। उसे उसके छात्रावास की एक सहेली तुलसी ने जो नई शिष्या थी, कलीसिया में आने का आमंत्रण दिया। रामन्ना एक ऐसे परिवार से थी जहाँ उसकी माँ हिंदू और पिता मुस्लीम था। बचपन से ही उसे किसी भी धर्म की तालीम नहीं दी गई थी। वह यूँही प्रार्थना करती 'उस सच्चे परमेंश्वर से।'

परमेंश्वर के प्रति मन में कई संदेहों के साथ वह बड़ी हुई। वह नही जानती थी किसके पीच्छे चले। वह लगातार एक सच्चे परमेंश्वर की खोज कर रही थी, एक अप्रतीम जो हम सब की अगुवाई करता है। किसी प्रकार का निर्णय लेना उसके लिये एक दुविधा थी, क्योंकि वह क्या सही है और क्या गलत इस बात का फैसला करने में अक्षम और असमर्थ थी। उसके सबसे बेचैन समय में वह यह प्रार्थना करती, "परमेंश्वर, मैं नहीं जानती तुम कौन हो। यह जीवन कैसे बिताऊँ मैं नही जानती। इस संसार में मेंरा मकसद क्या है? परमेंश्वर, तुम ही आखरी हो। यह सब बातें जानने में तुमही मेंरी मद्द कर सकते हो। कृपया मुझे बताओ तुम कौन हो?"

व्यंकट रमन्ना को कलीसिया में लाया गया और वहाँ पवित्र शास्त्र में उसे अपने सब प्रश्नों का उत्तर मिला। उसकी शंकाएँ दूर हुई। अन्ततः उसे अपने जीवन का मकसद समझ आया। मसीह को मिलने से पहले व्यंकट रमन्ना का जीवन प्रत्यक्ष रुपसे बुरा नहीं था, लेकिन अर्थहीन था। "मसीह के पहले" हमेंशा एक खालीपन का एहसास था, हालांकि वह एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में एक जिम्मेंदारी और अच्छे वेतन पर काम कर रही थी। अभी उसका मुख्य उद्देश्य है मसीह के लिये आत्माओं को जीतना। वह बहुत ही जोशीली बहन है और कलीसिया के किसी भी जरूरत में हाथ बँटाने के लिये हमेंशा तैयार रहती है। वह प्रचार के लिये जानी जाती है। यहाँ तक कि वह अपने छात्रावास के सभी सहेलियों को काम से आने के बाद शाम की प्रार्थना में अपने साथ बैठने का प्रोत्साहन करती है। व्यंकट रमन्ना को एक संदेही, हीचकाचनेवाली महिला से एक विश्वासी परमेंश्वर की महिला में रुपान्तर हुआ है।

क्या आप भी संदेह कर रहे हो?

संसार हम पर ऐसे "खबरों" की बमवर्षा करता है जिनको हमारे विश्वास को तोड़ने के लिये बनाया गया है। क्या इसने आपके मन पर असर किया है? आपके आत्मा की गहराई में क्या ऐसे संदेह पनप रहे हैं, जो परमेश्वर के प्रति आपके विश्वास और संकल्प पर असर कर रहे हैं? क्या कुरबानी कठीन है क्योंकि आपके मन की गहराईयों में कहीं आप सही में अनिश्चित हैं कि क्या यह सब सच है या नहीं?

यदि आप संदेह से संघर्ष कर रहे हैं तो एक खुषखबर है। यीशु हमसे धीरज रखते और अती कोमल हैं। वे चाहते हैं कि अपने संदेह के बारे में आप इमानदार रहें, संगती के प्रति संकल्पित रहें, उनके प्रेम को महसूस करें, सबूत को परखें और एक निर्णय लें - "हे मेरे प्रभू, हे मेरे परमेश्वर!"

मन के लिये

१) आज सचमुच में आपका विश्वास कैसा है? वैयक्तिक कठिनाई के समय क्या आपके मन में गहरे संदेह रहते हैं जो सही करने के आपके संकल्प को कमज़ोर करते हैं? जब आप दूसरों के बारे में कुछ सुनते हो तो, क्या आप दूसरों पर भी संदेह करते हैं, बेहतर बातों की कल्पना नहीं करते?

२) यदि आप संदेह कर रहे हो तो, यीशु के पास से आप किस सबूत को पाने का प्रयत्न कर रहो हो कि जससे आपका संदेह मिट सके? क्या आप

परमेंश्वर का वचन, किताबें (वेबसाईट) पढ़ रहे हो जिससे आपका विश्वास मजबूत हो?

३) यदि आपके पास संदेह है तो क्या आपने उसे ऐसे किसी के साथ बाँटा जो आपकी मद्द कर सके? क्या आप दूसरों के साथ संगती करने और विश्वास करने का निर्णय बनाने में संघर्ष कर रहे हो? (पहली बार.... या फिर दोबारा अगर जरुरत पड़े)

१४

पीलातुस

उसका निर्णय भीड़ ने बनाया

जब पीलातुस ने देखा कि उससे कुछ बन नही पड़ रहा है; परन्तु इसके विपरीत हुल्लड़ बढ़ता जा रहा है, तब उसने पानी लेकर भीड़ के सामने अपने हाथ धोए, और कहा, "मैं इस धर्मी की हत्या के दोष से निर्दोष हूँ। तुम ही जानों!"

मत्ती २७:२४

पैंतूस पीलातुस एक चतुर व्यक्ति था जिसने यहूदिया पर एक दशक तक राज्य किया, उस समय यीशु भी अपने मिनिस्ट्री के काम में व्यस्त थे। वह २६ ए.डी. में यहूदिया में एक राज्यपाल के रुप में आया। फीलो और जोसेफस के अनुसार व घबराया हुआ था कि कहीं कोई उसे बेनकाब न कर दे, उसका सारा चरित्र एक राज्यपाल के नाते रीश्वतखोरी, अपमान, चोरी, बलात्कार, ढीठ चोटें, बिना मुकद्दमे के मौत, सतत, असीम गहरी दुष्टता, तो वह एक डरपोक शासक की तरह जिया।

वह यीशु को रीहा करना चाहता था

यहूदियों के पर्व का समय खासकर अधिकारियों के लिये बड़ा कठीन समय होता था, क्योंकि धार्मिक कारणों से बड़ी भीड़ इकट्ठा होती थी। यह फसह का पर्व भी ऐसा ही था। पीलातुस जानता था कि राज्यपाल का उसका यह रुतबा खतरे में पड़ सकता है, और ऐसा कुछ भी करना वह टालना चाहता था जिसे रोम उस बात की सुधि ले।

यीशु के मुकद्दमे के समय पीलातुस ने उनसे चुभनेवाले प्रश्न किये जैसे, "क्या तुम यहूदियों के राजा हो?" (मत्ती २७:११) इस समय जब लोग यीशु पर गलत दोष लगा रहे थे और वास्तव में जीवन और मृत्यु दाँव पर लगे थे, यीशु का चुप रहना एक ध्यान देनेवाली बात है। पीलातुस ने यहूदियों को स्वयं ही यीशु का मुकदमा चलाने को उकसाया (युहन्न १८:३१)। उसने यहूदियों पर और उनके महाजायक पर यीशु को पकड़ने का दोष लगाया (यूहन्ना १८:३५)। वह इस उलझे हुए परिस्थिती कि जिम्मेदारी नही लेना चाहता था।

पिलातुस ने फसह के पर्व के समय सदिच्छा कमाने के लिए कैदियों को छोड़ने के रिवाज़ का फायदा उठाया (मत्ती २७:१६)। उसने भीड़ के सामने चुनाव करने का मौका रखा, इस विचार के साथ कि शायद वह यीशु को रिहा कर सके - उसने उनको यीशु और बरअब्बा में से एक को चुनने को कहा। बरअब्बा एक "कुख्यात कैदी था (मत्ती २७:१६) जिसने येरुश्लेम में एक सशस्त्र विद्रोह छेड़ रखा था और कई खून भी किए थे (लूका २३:१९)। पिलातुस निश्चित था कि यहूदी यीशु को रिहा कर देंगे जो वहाँ बहुत लोकप्रिय थे, और गुन्हेगार को जेल भेजेंगे। इस बात से, इस कपटी मुकद्दमों से उसकी जिम्मेंदारी से वह बच सकता था।

पिलातुस की पत्नी ने भी मुकद्दमे के समय "निर्दोष" यीशु का न्याय करना टालने का संदेश भेजा था। यीशु के कारण सपने में उसे बहुत दुःख उठाना पड़ा था (मत्ती २७:१९)।

उसने भीड़ को निर्णय लेने कि अनुमती दी

निर्गमन २३:२ इस बात की चेतावनी देता है कि किसी भी मुकद्दमे में भीड़ का पक्ष न लें। भीड़ आसानी से प्रभावित की जा सकती है। उनकी भावनाएँ अस्थिर होती हैं। एक बार, एक आदर्श या प्राथमिकता तय हो जाए तो भीड़ उसके पीछे चलने लगती है। यही कारण हैं कि दंगल के समय लूट मार अधिक होता है छुटपुट या कभीकभार के मामले में इतना नहीं। प्रेरित १४ में लोग पौलूस और बरनबास की "देवताओं" के समान प्रशंसा कर रहे थे, लेकिन तभी दूसरे शहरों से यहूदी आकर पौलूस की निंदा करने लगे, और यही भीड़ उनपर पथराव करना चाहती थी। प्रेरित १९:२३-४१ में इफिसुस में पौलूस के प्रचार के कारण दंगा हुआ, सभा में गड़बड़ी मच गई। कुछ लोग एक नारा लगा रहे थे, और कुछ दूसरा। अधिकतर लोगों को यह पता ही नहीं था कि वे वहाँ क्यों थे।

कुछ ही दिन पहलें जब यीशु ने यरुश्लेम में प्रवेश कीया तब लोग चिल्ला उठे, "हालेलुया दाऊद कि संतान।" और कुछ दिनों बाद यही लोग यीशु को मौत देने के लिए चिल्ला रहे थे। इसमें धार्मिक अगुवों का हात था - मत्ती २७:२० कहता है कि महायाजकों और धर्म वृद्धों ने लोगों को उकसाया कि वे बरअब्बा को छोड़ने कि माँग करें और यीशु को प्राण - दण्ड दिलाएँ। पिलातुस ने भीड़ से बात की लेकिन उन्होंने अपना विचार नहीं बदला (मत्ती २७:२१-२३) और जब उसने यह देखा "कि कोई हल नहीं निकल रहा था," उसने हार

मानकर अपने हाथ धो लिए, भीड़ को यह दिखाने के लिये कि इसमें उसकी कोई गलती नहीं थी। उसका अनिर्णय यीशु के लिए (कोई) निर्णय नही बना। उसने भीड़ को अपने जीवन का सबसे महत्वपूर्ण निर्णय करने का मौका दिया। एक अद्वितीय महत्वपूर्ण निर्णय।

यूहन्ना १८:३८ में पिलातुस ने यह दिखाया कि वह कम से कम सही और गलत का विचार नही कर रहा था। उसने पूछा, "सच्चाई क्या है?" उसने पहले यीशु से पूछा था, "क्या तुम यहूदियों के राजा हो?" यीशु ने उत्तर दिया, "क्या आप यह बात अपनी ओर से कह रहे हैं या किसी दुसरे लोगों ने मेरे विषय में आपसे कही है?" (यूहन्ना १८:३४) लेकिन उसका यह निर्णय कि वह इस बहाव में भीड़ के पीछे हो ले इस बात ने यह तय कर दिया कि यीशु अधिक यातना सहेंगे। उसने गिरगुट बनकर अपने को उनके रंग में ढालना चाहा, बजाए इसके कि उसे जो सही लगा उस पर अटल रहे।

यह कोई अचरज़ की बात नही के भीड़ के पीछे चलने का पिलातुस का यह निर्णय अधिक समय तक उसके लिए फायदेमंद नही रहा। भीड़ तित्तर बित्तर हो जाती है और किसी भी बात के लिए बहुत कम निष्ठावान रहती है। पिलातुस का यहूदिया पर शासन का अंत ३६: ए.डी में उसकी सैना द्वारा निर्दोष सामरियों की निर्दयता से हत्या करने के बाद हुआ। चर्च के ऐतिहासकार, यूसेबियस कहता है के गायस के दिनों में, पिलातुस, "को मजबूर कीया गया कि वह स्वयं अपना हत्यारा बने और अपने ही हाथों खुदको सज़ा दे, ऐसा लगता है कि परमेंश्वर की सज़ा बुरी तरह उसके पीछे पड़ी थी।" अगुवाही के बजाए भीड़ के पीछे चलने वाले एक व्यक्ति का दुःखद अंत।

उसने अपने हाथ धोना चाहा

इस अध्याय के आरंभ के अनुच्छेद में पिलातुस कि मिलीजुली भावनाएँ साफ दिखाई देती हैं। उसने यीशु को रिहा करने की कोशिश की लेकिन असफल रहा। अपने मन की गहराई में, यीशु को क्रूस देने का निर्णय उसे बहूत सता रहा था। जिम्मेंदारी से मुक्त होने का यह तरीका उसका अपना था, उसने अपने हाथ धोए फिर भी आज हम उसे यीशु को मौत की सज़ा देने वाले व्यक्ति के रुप में याद करते हैं।

मनुष्य के बनाए किसी भी प्रकार के धार्मिक कृत्य या न्याय संगती, किसी भी मनुष्य को उसके स्वयं के लिये हुए चुनाव से मुक्त नहीं कर सकते। केवल यीशु के पास ही यह शक्ती थी, क्षमा करने की शक्ति।

एक स्त्री जिसने भीड़ का विरोध किया

स्वपना की कहानी परमेंश्वर में बुज़दिली से आत्मविश्वास में हुए एक रुपांतर की कहानी है। स्वप्ना की कहानी को यह बात अद्वितीय बनाती है कि वह एक छात्रा के रुप में कलीसिया में आई और पूरे विश्वविद्यालय और बाद के दिनों तक अपने विश्वास में अटल रही। आर्थिक रूप से उसने स्वयं को सहारा दीया और आज भी अच्छी लड़ाई लड़ रही है।

एक कट्टर गैर मसीही परिवार से आई स्वपना मसीही बनेगी इस की उम्मीद कम ही थी, लेकिन परमेंश्वर ने अपनी योजनाओं के लिये उसका मन तैयार कीया। भगवान के डर से अपने घर में सभी मूर्तीयों की पूजा का समारोह आयोजन करनेवाली के रुप में वह जानी जाती थी। जब उसकी सहेलियाँ उसे यह बताती कि उन्हे किसी एक खास परमेंश्वर कि आराधना करना पसंद है, तब वह इस विचार में पड़ जाती कि क्यों वह किसी एक भगवान में पूरी तरह विश्वास करने में असमर्थ है। तो अधिकतर समय उसकी प्रार्थना यह होती, "हे परमेश्वर मुझे ऐसा मन दे कि मैं एक ही परमेश्वर की आराधना करूं जिस पर मैं विश्वास कर सकूँ।" प्रेरित १७ के अथेनियों के मन की तरह उसका मन लग रहा था, जिन्होंने, "एक अनजान परमेंश्वर" के लिए वेदी तैयार की थी।

स्वपना कर बहन जो एक बार कलीसिया आई थी उसने स्वपना को भी कलीसिया आने के लिए मनाया। एक दिन वह कलीसिया आई, प्रचार ने उसके मन को छू लिया, उसने महसूस कीया जैसे उसकी जरूरतों को पूरा करने के लिये परमेश्वर ने उससे बात की है। वह लगातार कलीसिया आने लगी और सभी मीटींग में भी लगातार शामिल रही और साथ ही शिष्यों से मिलकर पवित्र शास्त्र का अध्ययन कीया। और साथ ही अपने भविष्य और अपने परिवार के लिए परमेश्वर पर भरोसा किया। जब उसके परिवार को उसके बपतिस्मा लेने के विचार का पत्ता चला तब उन्होंने सारा दिन उसे घर में बंद कर के रखने की कोशिश की। वह किसी तरह भाग आई और २१ जून १९९८ को उसका बप्तिस्मा हुआ।

उस दिन घर लौटते वक्त उसके पिताजी रास्ते में ही उसका इन्तजार करते उसे मिले। उसने उसके बाल पकड़कर उसे घसिटते हुए घर ले गए। उसके माँ-बाप ने उसे बहूत पीटा। सारे परिवार और पड़ौसियों के सामने उसका अपमान कीया गया। लेकिन वह यीशु के लिये सबकुछ चुपचाप सहती रही। हमेंशा लोगों को खूष रखनेवाली, स्वपना के साथ ऐसा पहले कभी नहीं

हुआ था, क्योंकि अपने माता-पिता को खुश रखने के लिये भरसक वह प्रयत्न करती थी। इस तरह एक लड़की जो हमेंशा डरनेवाली और माँ-बाप को खुश करनेवाली के रुप में जानी जाती थी, एक परमेंश्वर से डरनेवाली और परमेश्वर को खुश करनेवाली लड़की बनी।

स्वपना की शिक्षा में बहूत रुची थी और वह एक उत्तम छात्रा थी। वह कॉलेज के पहले वर्ष में अपनी कक्षा में प्रथम आई। आज वह आर्थिक रुप से अपना ध्यान खुद रखती है और हैद्राबाद कलीसिया में एक विश्वासी शिष्या है। वह कलीसिया की जरुरतों में और सेवा में सक्रीय भाग लेती है और अपनी दीनता औार विश्वास के कारण वह कलीसिया की एक महान सम्पती है।

आप किसकी सेवा करते हैं?

भीड़ ने एक धार्मिक व्यक्ति यीशु का चुनाव करने के बजाए; एक विद्रोही बरअब्बा का चुनाव कीया। आप किसकी तरह हैं - विद्रोही बरअब्बा या फिर यातना सहते, शांत नायक, यीशु की तरह? पीलातुस ने अपने हाथ धो लिये। लेकिन कितना भी पानी उसके दोष से उसको शुद्ध न कर सका। उसने एक ऐसा निर्णय लीया जिसका एक अनंत परिणाम था। वह किसी और की नहीं परन्तु उसकी ही गलती थी। आपके पाप किसकी गलती हैं? क्या हर एक का कारण देने में आप तुरन्त तैयार हैं? क्या आप संकल्प से जीते हैं या फिर एक धार्मिक गिरगुट हो, जो स्वीकारे जाने के लिये भीड़ का रंग अपनाता हो?

मन के लिये

१) क्या आपने कभी अपने से बड़ों के दबाव के कारण स्वयं को पाप में ड़ाला? क्या अभी हाल ही में फिर ऐसा आपके साथ हुआ है? वह कौन से समय हैं जब आप सच्चाई के लिये अटल रहे? बाद में आपको कैसा महसूस हुआ?

२) उस भीड़ का क्या जो कभी-कभी धार्मिक को दोषी ठहराने के लिये उन्हे भड़काती है? वह आखरी समय कब था जब आप विरोधी भीड़ के सामने सच्चाई पर अकेले टीके रहे?

३) क्या आपने कभी अपने पापों के पश्चाताप के लिये पिलातुस की तरह, जिसने अपने हाथ धो लिये, मनुष्यों के बनाए रीती रीवाज़ का उपयोग किया? क्या आपके पूर्वजीवन में ऐसी कोई बात है जहाँ आपने अपनी जिम्मेंदारी को टालना चाहा हो? यदि हाँ, तो क्या अब समय है कि आप उस बात को सही कर सको?

१५

सैनिक और सेनानायक

संसारिक बातें या ईश्वरीय बातें

" जब सैनिक यीशु को क्रूस पर चढ़ा चुके तब यीशु के कपड़े लेकर चार भाग किए, हर सिपाही के लिये एक भाग। उन्होंने कुर्ता भी लीया, परंतु कुर्ता बिना सिअन था। वह ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था। इसलिये उन्होंने आपस में कहा, "हम इसको न फाड़ें परंतु इस पर चिट्ठी डालें कि यह किसका होगा?"

यह इसलिये हुआ कि पवित्र शास्त्र की भविष्यवाणी पूरी हो: "उन्होंने मेंरे कपड़े आपस में बाँट लिए और मेरे वस्त्र पर चिट्ठी डाली।" सिपाहियों ने ऐसा ही किया।

यूहन्ना १९:२३-२४

एक रोमन सेनानायक यीशु के क्रूस के सामने खड़ा था। जब उसने यीशु को यों चिल्लाकर प्राण छोड़ते हुए देखा, तब उसने कहा, "सचमुच यह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था।"

(मरकुस १५:३९)

सैनिक मसीहा के क्रूस के पैरों के पास खड़े थे। उन्होंने उसके प्रेम को देखा। उसने उन्हें गालियाँ सहकर गुस्सा न होते देखा। उन्होंने आकाश को काला होते देखा। लेकिन इससे उनको कोई फर्क नहीं पड़ा। उनके लिये यीशु ऐसा व्यक्ति था जिससे उन्हें कुछ मिलने की उम्मीद थी। उन्होंने उनके कपड़े आपस में बाँट कर (भ.सं. २२:१८ को पूरा कीया, "वे मेंरे वस्त्र आपस में बाँटते हैं, और मेंरे पहिरावे पर चिट्ठी डालते हैं।") पारम्पारिक तौर पर यहूदी पाँच वस्त्र पहनते थे, जुते, एक पगडी, एक कमरबन्द, एक कुर्ता और एक बाहरी जामा (वकील या जज कि तरह)। सबसे बढ़िया वस्त्र होता बिन सिया कुर्ता जो उपर से नीचे तक सिर्फ बुना हुआ होता हैं जिसे अंदर पहना जाता हैं। यह बहुत कीमती था जब तक कि वह कटा हुआ न हो। यह शायद यीशु की माँ ने उन्हें दिया हो, क्योंकि यहूदी समाज का यह एक रिवाज़ था कि माँ अपने बेटों के लिए इसे बुनती थी। यह बातें उन लोगों के लिए कुछ मायने नहीं रखते थे, क्योंकि सभी का ध्यान सिर्फ इसपर था कि मुझे क्या मिलेगा।

इसके बिलकुल विपरीत, सेनानायक जो खुद भी एक सैनिक था और क्रूस के पैरों के पास खड़ा था, यीशु की ओर देख रहा था। वह एक पुराना योद्धा था। जिसने कितनों को मरता देखा था। वह मृत्यू के करीब खड़े लोगों की आँखों में दिखनेवाले भय को पहचानता था। लेकिन जिस तरह यीशु मरे उसमें उसे कुछ असाधारण बात दिखाई दी, और वह मान गया कि यीशु परमेश्वर के पुत्र थे। सेनानायक ने जो देखा वह दूसरे लोग न देख पाए। वो कपड़ों में से अपना सही भाग लेने में व्यस्त थे। यह सभी लोग यीशु के मृत्यू के समय यीशु के पास थे। ये सभी सैनिक थे। जिनपर उनकी आँखे टिकी थी वह उनके दृष्टीकोन को निश्चितता दे रहे थे न कि क्रूस के पास उनकी समीपता।

थोड़ी सम्पत्ति वाला मनुष्य

यीशु के मृत्यू के बाद सिर्फ इन पाँच वस्त्रों की संपत्ती हमें उनके जीवन व्यतित करने के बारे में बहुत कुछ बताती है। यीशु ने कहा, "मनुष्य का जीवन उसकी संपत्ति की बहुतायत से नहीं होता" (लूका १२:१५)। लूका ९:५८ में उन्होंने यह बात बताया, "लोमड़ियों के भट्ट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते है, पर मनुष्य के पुत्र को सिर रखने की भी जगह नही है।" मती ६:१९-२१ में यीशु ने अपने चेलों को चेतावनी दी, "अपने लिये पृथ्वी पर धन इकठा न करो : जहाँ कीडा और कोई उसे नष्ट करते हैं, जहाँ चोर सेंध लगाते और उसे चुराते हैं। परंतु अपने लिये स्वर्ग में धन इकठा करो जहाँ न तो कीडा, और न कोई उसे नष्ट करते हैं, जहाँ चोर न सेंध लगाते और न उसे चुराते हैं। क्योंकि जहाँ तेरा धन है वहाँ तेरा मन भी लगा रहेगा।"

यीशु का ह्रदय परमेश्वर के, और लोगों के साथ था। उनके जीवन जीने की सरलता ने उनके मन को और ह्रदय को परमेश्वर के प्रति पूरी तरह लवलिन होने के लिये स्वतंत्र कर दिया। क्रूस पर उनके होठों से निकले शक्तिशाली शब्द स्वाभाविक बहाव थे उस जीवन का जो उन्होंने पहले ही परमेंश्वर को समर्पित कर दिया था।

नई दिल्ली में सबसे प्रेरणापूर्ण स्थान है गांधी संग्रहालय, जो महात्मा गांधी के जीवन और मृत्यू की कहानी बताता है। एक अनोखे कमरे में अनेक जीवन के अंत की ग्यारह संपत्तियाँ सजाकर रखी हुई हैं। इसमें एक टूटा हुआ चष्मा, एक पुराना टेबल, चलने की लकड़ी, एक छोटी घड़ी, खाकी कपड़ा और एक शॉल का समावेश है। यह कहना जरूरी नहीं के सारे इतिहास में गांधीजी ही एक सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्ति हैं। और उनकी त्याग पूर्ण

जीवनशैली उनके छोड़ी हुई सम्पत्ति का एक भाग था।

इस महान व्यक्ति के लिए संसारिक "चीजें" तुच्छ लगती थीं, और सिद्धांत बहुत अधिक मायने रखते थे। क्रूस के पास खड़े सैनिकों के लिए चीजों का महत्व बहुत अधिक था और, सिद्धांत उनके लिए तुच्छ थे। क्रूस के पास खडे सेनानायक के लिए यीशु का महत्व सबसे अधिक और बाकी सभी बातें तुच्छ थीं।

संसारिक चीजों के चारों ओर घूमता जीवन

बीज बोनेवाले किसान के दृष्टांत में तीसरे प्रकार का बीज बढ़ना शुरू हुआ, लेकिन झाड़ियों ने बढ़कर उसे दबा दिया। यह बाते यीशु मरकुस ४:१९ में ऐसे बताते हैं, "संसार की चिंता, धन का धोखा, और वस्तुओं का लोभ उन में समाकर वचन को दबा देता है। वह निश्फल रह जाता है।" आज, सबसे अधिक बढ़कर, यह बात आसान है कि संसारिक वस्तुओं के चारों ओर जीवन घूमता रहे, जो हमारी धार्मिकता को दबा देता है।

हम विज्ञापनों से घिरे हुए हैं, और साथ ही हमारे मित्रों और सहकर्मियों से जो हमें बताते रहते हैं कि हमें किस चीज की "जरूरत" है। और हम उन वस्तुओं के बारे में अधिक से अधिक सोचने लगते हैं जो हमें खरीदनी है, घर को हम बेहतर बनाना चाहते हैं और अलग-अलग जगहों पर जाना चाहते हैं। हम मासिक पत्रिका खरीदते ताकि इससे पैसे कैसे खर्च करें यह निर्णय लेने में हमें मदद मिले। यहाँ, कार के मासिक, स्टिरीओ के मासिक, खेल (खेल के समान) के मासिक, छुट्टियों के मासिक, घर बेहतर बनाने के मासिक, कॉम्प्युटर के मासिक - हम जिस किसी शिर्षक या वस्तु की कल्पना कर सकते हैं उनके मासिक उपलब्ध हैं। लेकिन हाँ यह सब खरीदने के लिये पैसों कि जरूरत है। तो हम कड़ी मेहनत करते हैं। हम हमारी काम करने की क्षमताओं और पैसा कमाने की शक्ति को और सुधारने की कोशिश करने के लिये रात के क्लासेस चलाते हैं।

हमें जो चाहिए हम वो वस्तु खरीदते हैं, हम जहाँ जाना चाहते हैं उन जगहों पर जाते हैं, लेकिन यह सिर्फ और अधिक काम करने की बात उत्पन्न करता है। वहाँ पढ़ने के लिए कई पुस्तकें हैं, भरने के लिए पंजिकृत (रजिस्ट्रेशन) फॉर्म है, आरक्षण करना है। और सजावट का सामान और नई गाडियाँ खरीदना / अनुकूलता की बातों से निपटना। मरम्मत करवाना और जब चीज़ें पुरानी हो जाये तब उन्हें वातावरण को नुकसान न पहुँचे इस रीति से

व्यवस्था करना। हम हमारा सारा खाली समय इन बातों के लिये, पैसे जमाने, योजना बनाने, खरीदने, लगाने, सुधारने, बढ़ाने, बदलने और व्यवस्था करने में लगा सकते हैं। तो अचरज की बात नहीं हम महसूस करते हैं कि हमें छुट्टीयों की जरूरत है। यीशु जब मरे तब वो पाँच वस्त्र जो उनकी संपत्ति थी उससे कई गुना बढ़कर हमारी यह जरुरतें हैं।

विश्वास की एक वैयक्तिक छलांग

हम पैसों को कैसे देखते हैं इसका गहरा संबंध परमेश्वर में हमारे विश्वास से जुड़ा है। कुछ ही समय पहले जीस मिनिस्ट्री में मैं सेवा करता था एक उपद्रव की स्थिती थी। हमारी नौकरी छुट गई, हमारे रूतबे को आघात पहूँचा, जहाँ हम रहते थे वो जगह हमे छोड़नी पड़ी और हमें एक निर्णय लेना था। तीन बच्चे जिनका करीब विश्वविद्यालय जाने जितना उम्र था। बचत राशी थोड़ी थी और हमारे नाम पर कोई भू-संपत्ति भी नहीं थी, सोचना जरूरी था कि, हम अपने भविष्य के साथ क्या करेंगे? हम युरोप लौट सकते थे (जहाँ हम दोनों कि जड़ें हैं) यु.एस. जा सकते थे (जहाँ मैं बडा हुआ), या फिर विश्वास के साथ फिरसे भारत लौटना जहाँ कोई स्पष्ट सहारा न था। हम ने इतना तो जरूर बचाया था कि अंततः यु.एस. में एक घर खरीदकर फिर से नई शुरूवात करें, या फिर बच्चों की विश्वविद्यालयीन शिक्षा के लिये उसे रख छोड़ें। या फिर से भारत में बसने के लिये इसका उपयोग कर सकते थे।

हमें महसूस हुआ कि परमेश्वर चाहते थे कि हम फिरसे भारत लौटें और होप वर्ल्ड वाइड के साथ गरीबों की मदद करें, जब कि उस समय होप के सामने अपनी ही कई बड़ी चुनौतियाँ थी। फिर भी वो हमारी हर तरह की मद्द करने के लिए तैयार थे। इसमें बहुत बड़ा जोखिम था, लेकिन हम जानते थे कि परमेश्वर ही हमारा ध्यान रख सकते थे, और किसी न किसी तरह वे हमारा ध्यान रखेंगे। मुझे याद है उस समय 'मॅट्रिक्स रिलोडेड' यह फिल्म मैंने देखी थी। इस फिल्म में नायक ट्रिनिटी, नीओ को बचाने के लिए जब लौटता है तब परिस्थिती बहुत ही खतरनाक थी। एक एजंट ट्रिनिटी पर हमला कर रहा था और उसे सिर के बल खिड़की से बाहर कुदकर भागने पर मजबूर कर उसका पिछा कर रहा था। वह ऐसे गिर रही थी कि उसकी मृत्यू निश्चित थी। लेकिन नीओ ने चुनाव किया और हॉलिवूड स्टाईल में हवा में उड़कर आखिरी क्षण में उसे बचा लिया।

जब हम भारत लौटे, हम भी ट्रिनिटी की तरह नीचे गिरता महसूस कर

रहे थे और यह विश्वास भी था कि किसी तरह परमेश्वर हमें बचा लेंगे। और उन्होंने बचाया। हमारे मित्रों द्वारा, हमारे मालिक द्वारा और कई चमत्कारों के द्वारा हम बचाए गए। यहाँ पर हमारा काम फलने-फूलने लगा, अनेक गरीबों को मदद किया गया और कई चंदा देने वाले महान लोगों से सम्बंध जुड़े, जो सचमुच में बदलाव लाना चाहते थे। आर्थिक चुनौतियाँ अब भी हैं लेकिन पिछले तीन वर्षों के मुकाबले हम कहीं ज्यादा सुरक्षित हैं। यहाँ तक पहुँचने के लिये विश्वास की एक बड़ी छलांग कि जरुरत पड़ी। एक चुनाव था जो हमें लेना था।

महान उदाहरण

भारतीय क्रिस्त कलीसिया के अगुवे दिनेश और कॅरोलिन जॉर्ज बहुत ही पड़े लिखे लोग हैं जिन्हें भारत से बाहर कहीं भी एक बहूत बड़े वेतन की नौकरी आराम से मिल सकती है। या आज के "नए भारत के अर्थव्यवस्था" में बहुरूपी कंपनी में उन्हें महान वेतन की नौकरी आराम से मिल सकती है। चालीस वर्ष की आयु में, दस से चौदह वर्षो के तीन बच्चों के साथ, आज भी उनके पास अपनी एक कार नहीं है। कलीसिया के कामों के लिए वो एक शहर से दूसरे शहर जाने के लिये वे ट्रेन से सफर करते हैं, जहाँ कभी-कभी उन्हें लगातार ३६ घंटे भी सफर करना पड़ता है। दिनेश दूसरे मसीहियों से मिलने या मिनिस्ट्री का काम करने सारे शहर में बस में सफर करते हैं। उनके बच्चे सस्ते कपड़े पहनते हैं और खिलौनों और यांत्रिक चीजों के लिए ज्यादा व्याकुल नहीं होते। जॉर्ज परिवार एक साधारण और एक त्याग पूर्ण जीवन जीते हैं, जो स्टाफ, अन्य कलीसियाओं और वैयक्तिक रुप से हमारे परिवार के लिए एक प्रेरणा है।

उत्तरी एशिया में (और निश्चय ही कई और जगहों पर) कई ऐसी कलीसियाएँ हैं जो अद्‌भुत त्यागपूर्ण लोगों से भरे हैं जो परमेश्वर को देने के लिए वो पैसे भी दान कर देते हैं जो उनके जीने का सहारा है। शकुंतला उत्तरी दिल्ली की झुग्गी झोपड़ियों में रहती है उसे सुबह सवेरे चार बजे उठकर दूर कुएँ से अपने परिवार के लिए पानी भरना पड़ता है। अपने उपर वह बहूत ही कम समय, पैसे खर्चती है। लेकिन जब महिला दिन के लिए पैसा इकठा करने का समय आया तब उसने और उसके मिनिस्ट्री की दूसरी महिलाओं ने मिलकर १२००/- रु. जमा किये। "जहाँ तेरा धन होगा, वही तेरा मन भी होगा।"

हालांकि शकुंतला का पुत्र विजय एक मजबूत शिष्य है, उसकी बेटी वीना ने पती के साथ कई वर्षों पहले कलीसिया छोड़ दिया और कलीसिया से बहूत

दूर उत्तर प्रदेश के एक छोटेसे गांव में जाकर रहने लगी। शकुंतला लगातार अपनी बेटी वीना के लिये प्रार्थना में लगी रही और परमेश्वर ने ऐसा प्रबन्ध कीया कि एक शिष्य जो सरकारी स्कूल में शिक्षक है उसकी बदली उत्तर प्रदेश के उसी छोटे से शहर नैनीताल में हुई। एक छोटी मिनिस्ट्री का आरंभ हुआ और २००५ के अन्त में वीना पुनःस्थापित की गई और उसका पती भी पवित्र शास्त्र अध्ययन कर रहा है। और पिछले महिनों में उसके रीश्तेदार मार्टीन और डेज़ी जिनका जिक्र अध्याय ३ में किया गया संगती में आए। परमेंश्वर ने शकुन्तला के कार्यों द्वारा उसका मन देखा और शक्तिशाली रुप से प्रभावित होकर उसके पूरे परिवार को आशिर्वादित कीया।

वो जिन्होंने अनेकों को अमीर बनाने के लिये यातना सहना स्वीकार किया

अक्सर यह होता है कि अन्ततः हम संसारिक बातों में पड़ जाते हैं क्योंकि हम अपने प्रियजनों को 'बेहतर' देना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि वे स्वस्थ रहें, एक अच्छा शिक्षण पाएँ और एक मजेदार जीवन हो। अविवाहित होने के नाते शायद हमें संसारिक वस्तुओं से ज्यादा लगाव नही होता और उसके लिये हम त्याग भी नहीं करते। लेकिन शादी के बाद जब हमारे बच्चे होते हैं तो कभी-कभार हम अपने आदर्शों से भटक जाते हैं। हम भी बढ़िया जीवन का आनन्द लेने लगते हैं जो हम अपने बच्चों को देना चाहते हैं। मैं इस लालसा को जानता हूँ, मैं खुद इस में गिरा हूँ। कौन जानता है कि क्रूस के नीचे बैठे व्यक्ति इसलिये जुआ खेल रहे थे कि अपने परिवारों को कुछ जादा दे सकें।

मेरे लिये एक महान उदाहरण है एक दम्पती जिन्होंने स्वयं अपने और अपने बच्चों के जीवन में यातना सहना और त्याग करना स्वीकारा। रॉजर और सुजॅन मॅथ्यू भारतीय हैं पर उनके पास अमरिकी पासपोर्ट है। वर्षों पहले रॉजर और सुजॅन दोनों के माँ बाप अमेंरिका चले गए इस इच्छा से कि वे अपने बच्चों को अच्छा भविष्य दे सकें। रॉजर एक कम्प्युटर इंजिनियर बना और सुजॅन एक नर्स।

जब उन्होंने यीशु की पुकार; के सब छोड़कर उनके पीछे हो लें; अपनी प्रतिक्रिया दिखाई तब सुसमाचार के द्वारा परमेश्वर ने उनके मन में यह बात डाला कि वह भारत में अपने भारतीयों की सेवा करें। सन १९९९ में उनके शादी के बाद परमेंश्वर ने उन्हें लाहौर पाकिस्तान में कलीसिया की अगुवाई करने के लिये बुलाया।

जब ढाका, बंगलादेश में जरूरत पैदा हुई तो वे सेवा करने वहाँ चले गए। यह करते समय वे यीशु (और पौलूस) के उदाहरण पर चलने का प्रयत्न कर रहे थे, जो हमारे कारण निर्धन हुए कि बहुतों को धनवान बना सकें। (२ कुरू. ८:९, ६:१०)

बंगलादेश संसार का सबसे गरीब देश है। युनायटेड स्टेट की जनसंख्या से आधी उनकी जनसंख्या है जो विसकोनसीन शहर के क्षेत्रफल जीतने जगह में रहते हैं। बंगलादेश जाते समय सुजॅन तीन महीने के गर्भ से थी। जीवन के इस मोड़ पर बंगलादेश जाना उनके जीवन का एक महान त्याग था। बंगलादेश की वैद्यकीय व्यवस्था सारे उत्तर आशियाई राष्ट्रों में सबसे नीचे स्तर और संसार के कुछ सबसे बदतर व्यवस्थाओं में से एक है। हालांकि सुजॅन भारत में या अमरिका में अपने प्रसव का चुनाव कर सकती थी, लेकिन उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास करने का निर्णय कर वहाँ बंगलादेश में लोगों की सेवा करने में लगे रहे।

गर्भावस्था के दौरान सुजॅन को रक्तस्त्राव होने लगा और वह जाँच करने को अस्पताल गई। डॉक्टर ने बिना जाँच किये कह दिया कि उसे बच्चा गिराना पड़ेगा और ऑपरेशन करके सफाई करनी पड़ेगी। उन्होंने दूसरे डॉक्टर की सलाह लेने का निर्णय किया और सारी जाँच के बाद डॉक्टर ने उन्हें आराम करने की सलाह दी। उन्हें शहर से दूर एक ऐसे अस्पताल का पता चला जो अमिरिकी मिनशरी डॉक्टर चलाते थे और जहाँ गरीब से गरीब का इलाज किया जाता था। यहीं पर उनके पहले बच्चे ब्रिटनी का जन्म हुआ।

दो वर्ष बाद सुजॅन फिर से गर्भ से थी। इस समय मिशनरी अस्पताल में जगह नही थी। ढाका का अस्पताल जहाँ उनके दूसरे बच्चे का जन्म होना था, उसका प्रसूती कक्ष बहुत ही गन्दा था, चारों ओर मक्खियाँ और मकड़ी के जाले थे लेकिन सुजॅन का डॉक्टर बहुत अनभुवी था। प्रसूती बहुत ही दु:खदायी और कठिन थी क्योंकि बच्चे का सिर सही दिशा में नही था। एक सरल प्रसूती की उम्मीद वे छोड़ चुके थे लेकिन अचानक एक आखरी धक्के के साथ बच्चे का सर चमत्कारी रुप से घूमा और नथेनियल का जन्म हुआ। प्रसूती के बारह घण्टे बाद सुजॅन ने डॉक्टर से अस्पताल से जाने की अनुमती माँगी क्योंकि अस्पताल की हालत बहुत खराब थी।

हालांकि उनके भारत लौटने के फैसले का दोनों के माँ-बाप ने पहले विरोध कीया था लेकिन सुजॅन के माता-पिता दोनों ही बच्चों के जन्म के समय

उसके पास थे और उनके जीवन से बहुत प्रभावित भी और रॉजर के माता पिता भी रॉजर और उसके बच्चों से जो मसीह की सेवा कर रहे हैं बड़ा गर्व महसूस करते हैं।

रॉजर और सुजॅन अब कोलकत्ता कलीसिया की अगुवाई करते हैं और साथ ही पूर्वी भारतीय क्षेत्रीय कलीसियाओं और पाकिस्तान और बंगलादेश की कलीसियाओं का भी ध्यान रखते हैं। उनका सपना और मनोकामना यही है कि परमेश्वर भारत में खोए हुए आत्माओं को बचाने में उनके बच्चों का उपयोग उनसे भी बेहतर रुप में करें। दूसरों की मदद करने का चुनाव उन्होंने स्वयं किया और उन्हे इस बात का कोई खेद नही है।

मसीह का हृदय

वस्तुओं के बजाए यीशु लोगों की चिन्ता अधिक करते थे। एक वसीयत नामा लिखने की चिन्ता उन्होंने कभी नही की। उन्होंने कभी भी इतना धन, दौलत और सम्पती जमा नहीं किया कि इस बात की चिन्ता करे कि उनके जाने के बाद इसका बँटवारा कैसे होगा। यहाँ तक कि अन्तीम समय तक वह अपने आस-पास के लोगों तक पहूँचने का प्रयत्न कर रहे थे।

लेकिन सैनिकों की अधिक दिलचस्पी यीशु के अद्‌भूत जीवन और मृत्यू के बजाए यीशु के पास थोड़ा जो कुछ था, उस पर थी। इतिहास के एक सबसे महत्वपूर्ण क्षण के समय वे परमेश्वर के पुत्र से कुछ ही दूरी पर खड़े थे। फिर भी उन्हे इस बात का एहसास नहीं हुआ। वे अनन्त के बजाए तुच्छ बातों की चिन्ता में लगे थे। सेनानायक जो उनका निरीक्षण कर रहा था, उसके पास ऐसा मन था जो किसी तरह इस तुच्छ चीजों के परे देख पाया और यीशु के मृत्यू के साहस को सराहा।

आओ हम भी ऐसा मन रखें जो संसारिक वस्तुओं के बजाए अनन्त वस्तुओं को खोजे।

मन के लिये

१) व्यक्तिगत सूची बनाने के लिये कुछ समय निकालो :

अ) अपनी चाहतों पर रोज आप कितना समय बिताते हो, काम और दूसरी बातों पर, रिश्तेदारों पर और परमेश्वर के साथ चलने और दूसरे मसीहीयों से मिलने के लिये कितना समय देते हो?

१६

क्रूसों पर लटके चोर

एक ने सच देखा; एक ने उद्धार माँगा

जो दो कुकर्मी क्रूस पर लटकाए गए थे, उन में से एक ने यीशु की निन्दा की और कहा, "क्या तू मसीह नहीं है? तो फिर स्वयं को और हमें बचा।"

परन्तु दूसरे ने उसे डांटकर कहा, "क्या तू परमेंश्वर से भी नही डरता? तू भी वही दण्ड पा रहा है। हम तो न्याय के अनुसार दण्ड पा रहे हैं; क्योंकि हम अपने कामों का ठीक फल पा रहे हैं। पर इन्होंने कोई अनुचित काम नहीं किया।" तब उसने यीशु से कहा, "हे यीशु, जब आप अपने राज्य में आएं तब मेरी सुधि लेना।"

लूका २३:३९-४२

दो चोरों को यीशु के दोनों ओर क्रूस पर लटकाया गया था। वे हमेंशा से चोर नही थे। बहूत दिनों पहले वे बच्चे थे। शायद वे यरूशलेम की गलियों और खेतों में मासूम बच्चों की तरह दौड़े होंगे। तितलियों के साथ नाचे और रात को आकाश में तारों को देख आश्चर्य भी किया होगा। उन्होंने झरने का पानी पिया और समाधीओं और गुफाओ में लुका छुपि खेला होगा। लेकिन यह बहूत पहले की बात थी।

अब तो आखिरी बार शहर के बाहर थे। ताजा हवा में उनके आखरी सांस थे। मनुष्य के साथ संगती का आखरी मौका था। आकाश की ओर आखरी बार देखना।

चुनाव

जीवन के इन रास्तों पर उन युवाओं ने एक चुनाव किया। उन्होंने किसी चीज की चोरी की और पकड़े नही गए। शायद बजार से एक रसीला अनार चुराया हो। शायद अपने मित्र के घर से एक फूलदान, या पड़ौसी के बाग से कोई औजार चुराया हो। या फिर अपने माता पिता के बीस्तर से कुछ पैसे चुराए हों। चोरी उनके लिए एक रोमांच था। यह आसान था, प्रतिफल तुरंत थे, और कोई परिणाम भी दिखाई नही पड़ रहा था।

एक बार जब वह इस राह पर निकल पड़े तो लौटना बहुत कठीन था।

ब) इंटरनेट सर्फींग करने, टी.वी. देखने, विडियो गेम खेलने और मॅगजीन और अन्य चीजें पढ़ने में आप कितना समय देते हो इन सब बातों के मुकाबले आपका पवित्रशास्त्र अध्ययन कैसा है?

क) क्या आप इस लालसा से त्रस्त हो कि आपके पास दूसरे मसीहियों से मिलने और खोए हुओं तक पहूँचने का समय नही है क्योंकि आप अपनेही कार्यों में व्यस्त हो? क्या आपका परिवार सिर्फ अपना ध्यान रखनेवाला, संकुचित विचारोंवाला और "मस्ती" लूटनेवाला परिवार है या बाहरी रुप से केन्द्रित और लोगों को बचाने में आनन्द लेता है?

२) जब आप अपने जीवन के गुजरे दस सालों की ओर देखते हो तो वह कौनसी चिन्ताएँ थी जिन पर आपने अधिक समय बरबाद किया? क्या इसी प्रकार की बातें आज भी आपके जीवन में हैं? ऐसी कौनसी बातें हैं जिनपर आज आप अपना समय बिता रहे हैं जो परमेंश्वर को प्रसन्न करनेवाली बातें हैं?

३) ऐसी कोई सम्पती जिसके प्रति आप और आपके बच्चे हमेशा बड़े चिन्तीत रहते हैं (जो आप खरीदनेवाले हैं या पहले से आपके पास हैं?) अपने जीवन को मसीह पर केन्द्रीत जीवन बनाने के लिये आपको किन बातों की आवश्यकता है?

अपने साथ बडे हुए मित्र को उन्होंने देखा जो चोरी करने में ढिले थे और उन रास्तों को छोड़कर इमानदारी पर चलने की कोशिश की। लेकिन इन को अपना जीवन जैसा भी था वैसा ही अच्छा लगा और रास्ते बदलने का कोई कारण नहीं दिखाई दिया। शायद अपने मन में यह चोरीयाँ करना वे सही समझ रहे थे, "गरीबों का अनादर करने की अमीरों की यही सही सजा है।"

परिणाम

पाप हमेंशा हमारे सामने आ जाता है चाहे इस संसार में या फिर न्याय के दिन। शायद यह चोर अति आत्मविश्वासी या फिर इस बुरे काम में पूरी तरह डूब चुके थे। या शायद उन्होंने अधिक खतरा मोल लिया था। या शायद वे अभागे थे और पकड़े गए। जिस किसी तरह वे इस क्रूस तक पहूँचे, एक बात तय है - यह परमेश्वर ने किया, मनुष्यों ने नही। यीशु इन खोए हुए व्यक्तियों को एक और आखरी मौका देना चाहते थे।

क्रूस

इन दोनों को यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था। औरों के साथ मिलकर इन दोनों ने भी यीशु की खूब निंदा की थी (मत्ती २७:४४)। अपने पाप का परिणाम स्वीकार करने में असमर्थ ये दोनों, अपनी पूरी भड़ास निकालने के लिए अपने सबसे नज़दीक जो था उसको निशाना बनाए थे। लेकिन जैसा इस किताब के शुरू के पाठ में लिखा है, उन में से एक का मन बदल गया था। उसने यीशु को अपना क्रूस सहते देखा, उसने यीशु को उनके निंदा करने वाले को क्षमा करते सुना था। उसने दुसरे कूकर्मी को यीशु की निंदा करते देखा था। और उसने अपने आपको उस दूसरे कूकर्मी में देखा और एक मन जो उसके पास कभी था, जो परमेश्वर ने उसे बचपन में दिया था, लौट आया उसने स्वीकार लिया कि वह दोषी है। उसने चोर को परमेश्वर से डरने की चुनौती दी और उसने यीशु से मदद माँगा। क्रूस पर उसने सच्चाई को देखा।

और क्रूस पर उसने अपने जीवन के सुंदर शब्द सुने वह जानता था कि वह अयोग्य है। फिर भी जब मौत उसके सामने थी उसे एक मित्रता की प्रतिज्ञा मिली जो कब्र के परे भी उसके साथ रहने वाली थी। स्वर्ग में रहने की एक अनंतता, एक खूबसूरती जिसको उसने बचपन में चखा था।

दूसरे कूकर्मी ने अंतिम समय एक आखिरी चीज़ चुराना चाहा - और इस वक्त उसने उद्धार को कसकर पकड़ने का प्रयास किया : "क्या तू मसीह नहीं

है? तो फिर स्वयं को और हमें बचा" (लूका २३:३९)। लेकिन आप माँग नहीं कर सकते, उद्धार चुरा या कमा नहीं सकते, यह एक उपहार है जो सिर्फ न्रम लोगों को दिया जाता है।

अभी भी देर नहीं हुई

बदलने में कभी देर नहीं होती। क्रूस पर लटके उस कूकर्मी का यही संदेश है तुम्हारे लिये अभी भी देर नही हुई। मेंरे लिए अभी भी देर नहीं हुई।

एक भाई, परमेश्वर जिसका पीछा करता रहा

अर्नेस्ट का जन्म और पालन पोषण एक धार्मिक परिवार में हुआ था। लेकिन अपने बचपन में ही वो अपना विश्वास खो बैठा था। उसके खुदके कबूली के अनुसार उसने एक पाप भरा जीवन जिया - पियक्कड़पन और मारा-मारी उसके लिए आम बातें थी।

जब वह विश्वविद्यालय का छात्र था तब वह शायजुस फिलिप से मिला, और यह मिलन उसके जीवन का सबसे बड़ा मोड़ था। शायजुस ने उसे वचनों के द्वारा सच्चे परमेश्वर और मसीही जीवन के बारे में सीखाया। अर्नेस्ट ने जाना कि उसका जीवन किस ओर बढ़ रहा था। उसको दूसरे शिष्यों ने भी बहूत प्रोत्साहन दिया, और परमेश्वर के अनुग्रह से अर्नेस्ट ने एक शिष्य के रूप में बप्तिस्मा लिया।

अर्नेस्ट का मसीही जीवन बढ़िया रुप से आरंभ हुआ, जिसमें कई सकारात्मक बदलाव आए - जिसमें उसके विचार भी शामिल थे। परमेश्वर के साथ बने नए सम्बन्ध से वह बहुत खुश था, लेकिन अपने पुराने जीवन से उसने पूरी तरह नाता नही तोड़ा था। अच्छी बात यह हैं कि उसने अपने कुछ पुराने मित्रों को कलीसिया में लाया। उनमें से कुछ शिष्य बनने पर बाद में कलीसिया छोड़ दिया। कई बार अगुवों ने उसे चेतावनी दी कि वह संसारिक दोस्तों के बोझ से दबा जा रहा है (२ कुरू. ६:१४-१८), लेकिन उसने उनके मार्गदर्शन को तुच्छ जाना। अन्ततः अर्नेस्ट ने कलीसिया छोड़ दिया। उसका जीवन और भी बद्तर हो गया क्योंकि वह पाप में और भी गहराई में डूब गया। इस रास्ते पर उसने कई दुश्मन बना लिये थे, जो उसका मित्र होने का दिखावा करते।

कुछ समय के लिये अपने दुश्मनों से बड़ी लड़ाई में पड़ने से परमेश्वर ने उसे बचाया। एक चौंका देनेवाली घटना में उसके चचेरे भाई की जान चली गई और उसके भाई को गहरी चोटें आई। परमेश्वर ने अर्नेस्ट को इस वार्दात से

दूर रखा। वह अब कहता है कि परमेश्वर की ओर से यह एक चेतावनी थी, जिसे उसने अनदेखा किया। हालांकि वह प्रभुसे दूर जा चुका था फिर भी कुछ शिक्षण अब भी उसके मन में थे। परमेश्वर के अनुग्रह और इन शिक्षणों के कारण, उसने कभी बदला लेने का चुनाव नही किया। लेकिन अब भी वह पापमय जीवन जी रहा था।

कुछ समय बाद उसके दोस्तों ने उसे घेरा। तीन बार उस पर बम से हमले हुए जिनमें से एक उसके घर में फटा, लेकिन परमेंश्वर की कृपा से उस रोज़ वह घर में नही था। दो बार उन्होंने गाड़ी से कुचलकर मार डालना चाहा, उस समय उसे गाड़ीसे फेंका गया और उसे चोटें लगीं। तब भी परमेश्वर ने उसकी रक्षा की। और तीन बार उस पर ॲसिड से हमला हुआ।

इसी बीच उसे स्वित्जरलँड के एक हॉटेल में एक आयुर्वेदिक दवाई के थेरपिस्ट के रुम में काम मिला। वह विदेश जाने के लिये अपने विसा की तैयारी में लगा था और उस समय तीसरा शक्तीशाली ॲसिड आक्रमण उस पर हुआ। इस बार ॲसिड उसके चेहरे और शरीर पर गिरा और उसके चेहरे और शरीर को बुरी तरह से बीगाड़ दिया। अस्पताल जाते समय उसका मन पिघल गया, और उसने नम्रता से प्रार्थना की साथ ही उसने अपने पर हमला करनेवालों को क्षमा करने के लिये परमेश्वर से प्रार्थना किया। अस्पताल में भर्ती होने के दो दिन बाद तक वह ठीक से देख नहीं पा रहा था। प्रार्थना करने के बाद परमेश्वर के अनुग्रह से उसकी आँखे ठीक हुई। उसने छः महीने अस्पताल में बिताए और इस बीच कई प्लास्टिक सर्जरी से वह गुजरा।

अर्नेस्ट के जीवन में असाधारण विश्वास और अनुग्रह के कई क्षण, और लालसा और संघर्ष के कई मौके आए। वह अब भी परमेश्वर की ओर लौटने को तैयार न था। और फिर कुछ लोगों ने उसपर चाकूओं से वार किया और उसके पेट में कई बार किये।

अन्ततः संघर्ष और हिंसा में कई वर्ष बीताने के बाद अर्नेस्ट ने अपना सबक सीखा। वह परमेंश्वर की चेतावनियों को और उनके प्रेम को समझ पाया। पिच्छले वर्ष यीशु में और उसकी कलीसिया में उसे पुनःस्थापित किया गया। उसकी पत्नी भी शिष्य है, उसका एक बच्चा भी है, और परमेश्वर का धन्यवाद हो कि अब हमले भी बन्द हैं।

परमेश्वर ने अर्नेस्ट से कभी हार नहीं माना। वह तुमसे और मुझसे भी कभी हार नही मानेंगे।

मन के लिये

१) क्या आपने किसी ओर को पाप करते देखा और जाना कि कभी आप भी इस पास के दोषी थे। यह जानना आप पर क्या प्रभाव डालता है?

२) क्या आपके जीवन में कुछ कमज़ोरियाँ हैं जिसके बारे में आपको लगता है कि उसे बदलने में काफी देर हो गयी है? कमज़ोरियाँ क्या हैं? क्या उनके बारें में आपने अपने जीवन में किसी से खुलकर बात किया है?

३) क्या आपको यह लगता है कि यीशु आपके जीवन के अन्तिम दिन में आपसे कहेंगे कि, "आज तुम मेंरे साथ स्वर्ग में होंगे?" यदि हाँ तो क्यों? यदि ना तो क्यों? इस बात का ध्यान रखो कि आप अपने जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह की शक्ति को न खो दो।

१७

यूहन्ना

एक निष्ठावान मित्र

पतरस ने मुड़कर उस चेले को पीछे आते देखा, जिससे यीशु प्रेम करते थे, और जिसने भोजन के समय यीशु की छाती की ओर झुकर पूछा था, "हे प्रभु, आपका पकड़वाने वाला कौन है?"

उसे देखकर पतरस ने यीशु से कहा, "हे प्रभु, इसका क्या होगा?"

यीशु ने उससे कहा, " यदी मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे क्या?तू मेरे पीछे आ।"

इसिलिए भाईयों में यह बात फैल गई कि वह चेला कभी न मरेगा। किंतु यीशु ने उससे यह न कहा था कि वह कभी न मरेगा, परंतु यह कि यदि मैं चाहूँ कि वह मेंरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे इससे क्या?

यह वही चेला है, जो इन बातों की गवाही देता है और जिसने इन बातों को लिखा है। हम जानते हैं कि उसकी गवाही सच्ची है। दूसरे और भी बहुत से कार्य हैं जो यीशु ने किए। यदि वे एक-एक करके लिखे जाते तो मैं समझता हूँ कि जो पुस्तकें लिखी जाती वे पृथ्वी में भी न समातीं।

यूहन्ना २१:२०:२५

कुछ जगहों पर यूहन्ना का वर्णन, "वह शिष्य जिससे यीशु प्रेम करते थे" (यूहन्ना १३:२३, २१:७,२१:२०) इस प्रकार किया गया है। जब कि यीशु के साथ के रिश्ते के बारे में यह उसकी खुदकी सोच थी (पवित्र आत्मा से प्रेरित) लेकिन आगे जब हम देखेंगे, तो दूसरे अनुछेद भी इस बात की पुष्टी करते हैं, कि प्रभु के साथ उसका एक विशेष रिश्ता था। वह यीशु के 'भीतरी गुट' में तीन शिष्यों में से एक था जिन्हें उसने चुना कि वे उसके द्वारा किये अनेक घटनाओं में करीबी से उसके साथ रहें। इस बात की सच्चाई के यूहन्ना ही वह शिष्य था जो अंत तक यीशु के साथ था और जिसे यीशु ने अपनी माँ को सौंपा था, यह इशारा करना है कि उन दोनों में एक असाधारण गहरा रिश्ता था।

जैसे उपर बताया गया, पतरस और याकूब (और कभी - कभी अंद्रियास), के साथ कई बार यूहन्ना भी उन कुछ चुने हुए लोगों में हुआ करता था जिन्हें यीशु ने विशेष शिक्षण और अनुभव के लिए अलग रख छोड़ा था । यह भी हो सकता है कि (अंद्रियास की तरह) वह भी यूहन्ना बपतिस्मादाता का एक शिष्य था जिसने यूहन्ना १:३५-४३ में यीशु के साथ दिन बिताया था। यह तर्क हमने यूहन्ना १:३९ से निकाला हैं जो उस समय की याद दिलाता हैं जब उन्होंने यीशु के साथ समय बिताना आरंभ किया (लगभग शाम ४ बजे) इतनी छोटीसी बात यूहन्ना को कैसे पता चलती यदि वो अपने बारे मे ही बात न कर रहा होता? यीशु के प्रति उसके पहले प्रभाव यह थे कि एक मनुष्य जो लोगों के साथ समय बिताने की इच्छा रखता था। यूहन्ना को अपने जीवन में यह सीखना था, और यीशु एक सिद्ध शिक्षक थे।

इसके तुरंत बाद मरकुस १ में उसे भी ठीक उसी समय बुलाया गया जब पतरस को बुलाया गया था। उसने अपने पिता जब्दी को मजदूरों के साथ नाव पर छोड़कर यीशु के पीछे चल दिया। ऐसा करना यूहन्ना के लिए शायद बहुत कठिन रहा होगा। आप उसकी एक छोटे बच्चे के रुप में कल्पना कर सकते हैं। जो अपने पिता को मच्छली पकड़ते देख रहा है। अपने पिता के साथ मच्छली पकड़ने का व्यापार सिखने के लिए अनगिनत घंटे उसने उस नाव पर बिताए होंगे। उसके पिता ने यह सपना भी देखा होगा कि एक दिन वो साथ में काम करेंगे, व्यापार बढ़ाएँगे मच्छलीयाँ पकड़ेंगे, उन्हें बाजार में बेचेंगे, जाल ठीक करेंगे। उस नाव से उनकी कई यादें जुड़ी हुईं थीं। लेकिन यीशु की और से यूहन्ना के लिये एक विनंती काफी थी, वह सब पिछे छोड़ने के लिये।

याईर की बेटी की चंगाई के समय यूहन्ना वहाँ था (मरकुस ५) और रुपांतर के समय भी वह वहाँ था (मरकुस ९)। यीशु के कार्यकाल में जितनी भी बडी घटनाएँ हुई उन सब के समय वह वहाँ उपस्थित था। जैसे तूफान को शांत कराना, पाँच हजार को भोजन कराना, लाजरस को जीवीत करना और मंदिर का खाली कराना। गतसमने के बाग में यीशु उसके, पतरस और याकूब के साथ रहना चाहता था। (मरकुस १४:३३)

उसने प्रेम करना सीखा

पहले जब यूहन्ना यीशु का शिष्य बना तब यीशु के प्रति उसकी गहरी निष्ठा

थी लेकिन बोलने में थोड़ा कठोर भी था। सच तो यह है कि यीशु ने उसे और उसके भाई याकूब को प्यार से एक नाम दिया "गर्जन के पुत्र (मरकुस ३:१७)। एक बार उन्होंने किसी को यीशु के नाम में दुष्ट आत्माओं को निकालते देखा और उसे तुरन्त रुकने को कहा, "क्योंकि वह हम में से एक नही था"। इसके विपरीत यीशु ने कहा "जो तुम्हारे विरुद्ध नहीं वह तुम्हारी ओर है" (मरकुस ९:३८:३९, लूका ९:४९-५०)। जब सामारियों ने यीशु का स्वागत नहीं किया तब याकूब और यूहन्ना ने यीशु से प्रस्ताव किया कि आकाश से आग गिरे और उन्हें भस्म करें (लूका ९:५४)। हाँ यीशु ने जरुर उनके इस अहित विचार पर डाँटा! मरकुस १०:३५-४५ में वे यीशु के पास गए और उनसे उनके आनेवाले राज्य में अपने लिए आदर का स्थान माँगा, वह था यीशु की महिमा में उनके दाँए और बाँए रहना। इस बिनती में उनकी माँ भी उनकी साथी थी (मत्ती २०:२०)। यह बात जरुर थी कि उन्हें पता नहीं था कि वे किस बारे में बात कर रहे हैं, और यीशु ने समझाया कि उनके राज्य में उपर जाने का मार्ग नीचे, सेवा से शुरु होता है।

समय के साथ, यूहन्ना पर यीशु का प्रभाव बढ़ता गया और धिरे-धिरे वह अधिकाधिक प्रेम करने वाला व्यक्ति बना। उसने यीशु को यह शिक्षण देते सुना:

"अब से मैं तुम्हें सेवक न कहूँगा : क्योंकि सेवक नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या करता है। परंतु मैंने तुम्हें मित्र कहा है : क्योंकि जो बातें अपने पिता से सुनी, वे सब तुम्हें बता दी।" (यूहन्ना १५:१५)

उन्होंने उन्हें एक दूसरे से प्रेम करने और ऐसे फलवंत होने के लिए बुलाया जो अंत तक रहे (यूहन्ना १५:१२,१६)। और उसने कहा यदि वे उनकी इच्छा के अनुसार जीएँगे तो प्रार्थना का उत्तर अवश्य मिलेगा (यूहन्ना १५:१६)

जब यीशु ने चेलों के पैर धोए तब यूहन्ना वहाँ था (यूहन्ना १३) आखिरी भोजन के समय भी वह वहाँ था - उसने यीशु से पूछा वह कौन है जो तुझे पकड़वाएगा (यूहन्ना २१:२०) । क्रूस के समय यूहन्ना ने महान निष्ठा का प्रदर्शन किया जिसका वर्णन अध्याय ७ में है। जब दूसरें भाग खड़े हुए थे तब वह क्रूस के पैरों में बैठा था। उसने और पतरस ने जब मरियम मगदलिनी से समाचार सुना तब कब्र की ओर दौड़ पड़े (यूहन्ना २०:१-९) और यूहन्ना पहले कब्र पर पहुँचा। हालांकि पहले अंदर जाने में वह हिचकिचाया, लेकिन पतरस

के पीछे भीतर गया और उसने विश्वास कीया। वह दूसरे शिष्यों के साथ मच्छली पकड़ रहा था जब यीशु ने उनके लिए नाश्ते का प्रबंध किया। यीशु के संपूर्ण कार्यकाल में वह उनके साथ था।

उसके जीवन के अंतिम दिनों में, यूहन्ना ने यीशु से सीखा था और वह सचमुच में एक प्रेम करने वाला मनुष्य बना। यूहन्ना की पहली पत्री में 'प्रेम' इस शब्द का उपयोग पैन्तालिस बार किया गया है जो पवित्र शास्त्र के किसी भी किताब में से सबसे अधिक है। वह बनाता है "परमेश्वर प्रेम है" (४:१६); "प्रेम भय को दूर कर देता है"(४:१८), यह कि हम यहाँ शब्दों और मुंह से नहीं पर अपने काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें" (३:१८)। वह हमें इस बात की चुनैती भी देता है कि, "यदि कोई कहे कि मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ" और वह अपने भाई से घृणा करे तो वह झूठा है। क्योंकि जो अपने भाई से, जिसे उसने देखा है, प्रेम नहीं करता तो वह परमेश्वर से, जिसे उसने नहीं देखा प्रेम नहीं कर सकता"(४:२०)।

विशेष मित्र

हमारी मूसिबत में जो हम पर प्रेम और चिंता दिखाता है हम उसकी सराहना करते हैं। लंदन में मेरा चालिसवाँ वर्षगांठ हमेशा याद रहेगा यू.के. और भारत से कई भाईयों बहनों ने मुझे प्रोत्साहित किया। यह एक विशेष समय था। लेकिन उस दिन की सबसे बड़ी आश्चर्य चकित करने वाली बात शाम के पार्टी में हुई। सॅन डियॅगो, कॅलिफोर्निया से पाँच हजार मिल की दूरी तय करके ग्वीलर्मो ॲडम मुझे मिलने आया। कलीसिया के कामों और अपने परिवार में वह अतिव्यस्त रहता है। लेकिन समय निकाल कर वह आया और मुझे और हमारी कलीसिया को प्रोत्साहन दिया। मुझे अब भी वो खुशी के आँसू याद है जो उसे देखकर बहे थे। मैं विश्वास नहीं कर पाया था कि वह वही है। हमारा संबंध उन दिनों से है जब हम एक साथ भारत में सेवा करते थे। हम दोनों एक बहुत ही अलग पार्श्व भुमि और मिनिस्ट्री से थे, लेकिन हम दोनों ने एक दूसरे को प्रेम करने का निश्चय किया था। हमारी जीवन भर की इस दोस्ती ने हमें जीवन की कई परीक्षाओं में मदद किया है।

जब हमारा परिवार तीन वर्ष पहले चुनौतियों से झूज़ रहा था, नोकरी चली गई थी, तब कुछ विशेष लोग हमारे साथ थे जिन्होंने हम से बिना शर्त प्रेम किया। हर एक को व्यक्तिगत रुप से धन्यवाद कहने के लिए मेंरे पास कभी भी

पर्याप्त जगह नही होंगी, लेकिन हम उस प्रेम को जिसे हमने महसूम किया कभी न भूल पाएँगे। ऐसा प्रेम यीशु के साथ रहकर, यूहन्ना ने करना सीखा। और हम भी सीख रहे हैं।

निष्ठा से फर्क पड़ता है

करीब नौ वर्ष पहले, अनू नई दिल्ली के कलीसिया में पूरे समय के सेविका के रुप में काम कर रही थी। मेरी पत्नी नदीन, और कई औरों के लिए जिन्होंने सचमुच उससे प्रेम किया था, उसने परमेश्वर को छोड़कर जाने की बात ने इन सभी का दिल तोड़ दिया। लेकिन कलीसिया में उसके रिश्ते बहुत मजबूत थे, और इन लोगों से पूरी तरह रिश्ता तोड़ना उसके लिये कठिन था। उसे मसिह और उसके परिवार में प्रेम मिला था और इसे उसने सराहा था।

फिर भी परिवार के दबाव में उसने अपने गाँव में शादी कर ली। संगती से दूर उसने मूल्यवान और दुःख दायी सबक सीखे। एक छोटेसे गाँव में एक अमसिही पती के साथ रहना, उसे कलीसिया छोड़ने के अपने निर्णय पर पच्छतावा होने लगा। प्रेम के लिए तरसती अनू कलीसिया के अपने संपर्कों को फिर से तलाशने लगी। जब उसने सुना कि नदीन दिल्ली लौट चुकी है, तब वह चकित हो गई और उससे संपर्क कीया। पैसे की कमी और कलीसिया से १०० कि.मी. की दूरी पर रहने के बावजूद उसने कलीसिया आना शुरु किया। जैसे वह फिर से परमेश्वर और अपने भाई बहनों से जुड़ी, तब अनू ने उसके पती और, दो और परिवार को पानीपत से दिल्ली कलीसिया में आने को प्रभावित किया।

दिसम्बर २००४ में अनू को संगती में पुनःस्थापित कीया गया था। उसने अपने साथ दो और महिलाओं नवीन और बबली को लाया। उन दोनों ने पवित्र शास्त्र का अध्ययन कीया और यीशु के शिष्य बनी। अपनी पत्नी बबली का विश्वास देख उसका पती कालीराम भी पवित्र शास्त्र पढ़ने लगा और शिष्य बना। पानीपत में थे चार लोग बड़े ही जोशिले मसीही हैं और दूसरे परिवारों को उनके साथ जोड़ने के लिए दृढ़ संकल्प से प्रार्थना में लगे हैं। यीशु के प्रेम और उनके क्रूस ने उनको गहरी प्रेरणा दी है।

चार से पाँच हजार से भी कम पैसों में हर महिने अपना परिवार चलाना पड़ता है इस कारण वे महिने में एक बार ही दिल्ली आने का खर्च उठा सकते हैं। ऐसे दिनों में वे कलीसिया में शामील होने के लिए अपने बच्चों संमेत सुबह

चार बजे उठते और १०० कि.मी. यात्रा कर के कलीसिया आते हैं। बाकी के सप्ताह वे वहीं पानीपत में एक छोटीसी संगती में मिलते हैं। जातीवाद समाज में जीवन हमेंशा आसान नहीं होता। उनके गाँव में उनके विश्वास के लिये उनका सताव होता है। फिर भी इतने विद्रोह और सताव के बावजूद वे पीछे मुड़कर देखना नहीं चाहते। परमेश्वर ने अपने पुत्र के लहू से उनका जीवन पुनःस्थापित और पुनःनिर्माण किया है। और वे उनके प्रेम और कलीसिया के भाईयो बहनों के प्रेम के लिए बहूत कृतज्ञ हैं।

मन के लिए

१) कलीसिया में आपके रिश्ते कैसे हैं? क्या आपके ऐसे मित्र हैं जिनके साथ आप पूरी तरह खुले और सच्चे रह सकते हैं?

२) उन पुराने मित्रों से जो दूसरे शहर में जा बसे हैं, क्या आज भी आपका संपर्क है? आप उन लोगों के प्रति अपनी सराहना कैसे व्यक्त करेंगें?

३) क्या आप यूहन्ना की तरह, अधिकाधिक प्रेम करना सीख रहे हैं? किन बातों में आप पहले के मुकाबले आज ज्यादा प्रेम करने वाले बने हैं?

१८

मरियम मगदलीनी

यीशु प्रथम उस पर प्रगट हुए

तब ये शिष्य अपने घर लौट गए। किन्तु मरियम रोती हुई कब्र के पास बाहर खड़ी रही। वह रोते रोते कब्र की और झुकी और उसने दो स्वर्गदूतों को देखा जो उज्वल कपड़े पहिने हुए थे। वे जहाँ यीशु का शव था वहाँ, एक सिरहाने और दूसरा पैताने बैठे हुए थे। उन्होंने उससे कहा है नारी तू क्यों रो रही है?

उसने उनसे कहा, वे मेंरे प्रभु को उठा ले गए हैं, मैं नहीं जानती कि उन्होंने उसे कहाँ रखा है?" यह कहकर वह पीछे मुड़ी और उसने यीशु को खड़े देखा। किन्तु उसने नही पहचाना कि यह यीशु हैं।

यीशु ने उससे कहा, "हे नारी तू क्यों रो रही है? तू किसको ढूंढ रही है?" उसने यीशु को माली समझा और उनसे कहा, "हे भाई यदि तुमने उसे उठा लिया है तो मुझे बताओ कि उसे कहाँ रखा है? मैं उसे ले जाऊंगी।"

यीशुने उससे कहा, "मरियम"। मरीयम ने पीछे मुड़कर यीशु से इब्रानी भाषा में कहा, "रब्बूनी" (अर्थात् हे मेरे गुरु)।

यीशु ने उससे कहा, "मुझे मत छू' क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया हूँ। मेरे भाईयों के पास जाओ और उनसे यह कहो, "मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता, अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के, पास ऊपर जा रहा हूँ।"

मरियम मगदलीनी चली गई। उसने शिष्यों को यह बताया, "मैंने प्रभु को देखा और उसने मुझसे ये सारे बातें कही हैं।"

यूहन्ना २०:१०:१८

मृत्यू से जी उठने के बाद मरियम मगदलीनी ही वह पहली स्त्री थी जिसपर यीशु प्रकट हुए। वह यीशु के मिनीस्ट्री के शुरुआती दिनों से उनके पीछे चल रही थी और उनके काम के लिये पैसे भी दिये थे (लूका ८:१-३)। वह गलील के उन कुछ गिने चुने शिष्यों में से थी जो उनकी सेवा किया करती थीं।

(मरकुस १५:४१)। लूका ८:२ में उसका परिचय दीया गया जिसमें से यीशु ने सात दुष्टात्माओं को निकाला था। दूसरे लोग जो यीशु के प्रति संकल्पित थे और हर जगह उनके साथ गए वह भी उनके साथ थी और तकलीफों का सामना कर रही थी।

मरियम मगदलीनी विशेष रुप से क्रूस की घटना के बाद अधिक प्रसिध्द हुई। क्रूस के पैरों के पास खड़े उन लोगों में वह थी जिन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय वहाँ रुकने का साहस कीया, (मत्ती २७:५६, मरकुस १५:४०, यूहन्ना १९:२५)। जब उन्हें गाड़ा गया तो वह वहीं खड़ी रही कि देख सके कि उन्हें उन लोगों ने कहाँ रखा हैं।(मत्ती २७:६१, मरकुस १५:४७) और रविवार को सुबह सवेरे वह सुगंधित वस्तुएँ लेकर यीशु के शव पर मलने को निकल पड़ी (मरकुस १६:१)।

हमारी ही तरह - मनुष्य

हम सभी की तरह मरियम भी मनुष्य थी। वह अपनी सीमाओं को जानती और उनके प्रति इमानदार थी। वह कौन है या उसने कैसा महसूस कीया यह छुपाने के लिये उसने मुखौटा नहीं पहन रखा था। उस रविवार को तड़के जब वे कब्र के पास पहूँचे तब वह अचरज़ कर रही थी कि कौन कब्र से इस बड़े पत्थर को हटा सकता है (मरकुस १६:३)। जब स्वर्गदूत उसपर और उसके सहेलियों पर प्रकट हुआ तब वे चकित रह गए (मरकुस १६:५)। जब स्वर्गदूत ने उन्हें यीशु के पुनरुत्थान की खबर देकर उन्हें गलील जाने को कहा तब मरकुस १६:८ कहता है, " वे कब्र से निकलीं और भाग गईं, क्योंकि कंपकंपी और घबराहट उपनर छा गई थी। उन्होंने किसी से कुछ न कहा, क्योंकि वे डरी हुई थीं।"

इस अध्याय के प्रारंभ के अनुच्छेद में स्वर्गदूतों ने मरियम से पूछा," हे स्त्री तू क्यों रो रही है?" हाँ वह बहुत ही नाराज और विचलित थी, क्योंकि यीशु के शरीर को वह नहीं पा सकी। वह वहाँ से जा चुका था।

फिर जब यीशु उसके पास आए तब उन्होंने भी वही प्रश्न कीया, "हे स्त्री, तू क्यों रो रही है?" उसे माली समझकर उसने यीशु को ढूंढने में उसकी मदद मांगी। तब यीशु ने उसे नाम लेकर बुलाया मरियम (व. १६), तब तुरन्त वह जान गई के वह कौन था। उस आवाज़ को उसने कितना प्रेम किया था.....

जो फिर एक बार उसका नाम पुकार रहा था। जो इस पृथ्वी पर वह फिर कभी भी सुन नही पाएगी उसने सोचा था। समझने की बात है कि, वह उसके पास गई और उन्हें छू कर यह निश्चय करना चाहती थी कि, वह सचमुच में यीशु ही थे। लेकिन उन्होंने उसे एक काम पर भेजा, उन्होंने एक स्त्री को एक काम दिया कि; वह जाकर पुरुष शिष्यों को उनके जी उठने की खबर सुनाए (मत्ती २८:७, मरकुस १६:७)। वह दौड़ती हुई उन शिष्यों के पास गई कि यह अविश्वसनीय, अद्‌भूत, सच न लगे ऐसा, पर जो सच है, ऐसी खबर, "मैंने प्रभु को देखा" उन्हें सुनाए।

फर्क : कृतज्ञता

मरियम का यीशु के साथ एक विशेष संबंध था। दूसरों की भांती उसे भी भय था। सच तो यह है कि मत्ती, बताता है, कि जब स्वर्गदूतों ने उससे बात की, तब वह, "भयभीत हुई पर आनंन्दित भी थी" (२८:८)। इस बार भी पहले की तरह उसने अपने भय पर काबू पाया। शायद जिस बात से यह फर्क आया वह थी कृतज्ञता। उसे हमेंशा से याद था कि यीशु ने उसमें से सात दुष्टात्माओं को निकाला था। एक नारी होने के नाते यीशु के करीब रहने के लिये उसने धार्मिक समाज का तिरस्कार सहा, लेकिन उसके लिये संसार में किसी भी चीज या व्यक्ति से अधिक महत्व यीशु का था। और आज इस दिन वह उसके पास लौट आया था और वह चाहती थी कि उसे थामें रहे और कहीं जाने न दे। मन में बसे प्रेम के कारण उसकी आँखों से आँसु बहने लगे। वह दुष्टात्मा की शक्ति से स्वतंत्र थी। वह जीवन को प्रेम करने, मुस्कुराने, प्रेम देने और लेने के लिये स्वतंत्र थी। वह स्वतंत्र थी और इसी बात ने सब फर्क लाया।

धार्मिकता में अच्छा करने का मन ही कृतज्ञता है। लूका १७:११-१९ में यीशु ने १० कुष्ठरोगियों को चंगा किया,। लेकिन धन्यवाद देने सिर्फ एक ही लौटकर आया। "बाकी के नौ कहाँ हैं?" यीशु ने पूछा।

२ पतरस १:५-९ में हमें, धार्मिकता में बढ़ने के लिये हर प्रयास का प्रोत्साहन दिया गया है। लेकिन पतरस कह रहा है यदि कोई प्रगति नहीं कर रहा है, "तो वह धुंधला देखता है। वह अंधा है। वह भूल बैठा है वह अपने पूर्वकालिन पापोंसे धुलकर शुद्ध हो चुका है।" वह स्वयं का विवरण, "प्रेरितों में सबसे छोटा" कहकर करता है फिर भी वह कहता है, "परन्तु मैं जो कुछ भी हूँ, परमेंश्वर के अनुग्रह से हूँ" (१ कुरु १५:९-१०)। इफिसियों ३:८ में वह

कहता है कि सब पवित्र लोगों में वह सबसे छोटा है, लेकिन परमेश्वर ने उसे अपने अनुग्रह का दान दिया हैं। और १ तिमुथियुस १:१३-१६ में पौलूस ने मसीह के उस पर दिखाए असीम अनुग्रह और असीमित धीरज की सराहना की, "मैं सबसे बड़ा पापी हूँ।"

कृतज्ञता से भरा व्यक्ति कुछ भी सह सकता है, लेकिन इसके बिना व्यक्ति कुछ भी सहने में असमर्थ है। यीशु ने मरीयम के लिये जो किया था उससे उसका मन अनंन्त कृतज्ञता से भर गया था। लोगों के विचारों की हवा उसे हिला नहीं पाई। ना ही वैयक्तिक बेचैनी और भय। उसके डर की जगह उसके आनंद ने ले ली थी कारण था, वह, जो उसके उध्दारकर्ता ने उसके लिये किया था।

विशेष लोंगों का एक गुट

सबसे पहले बैंगलोर में कलीसिया की शुरूवात करने के काम के लिये जिन लोंगों को भेजा गया था वह एक विशेष लोगों का गुट था। एक सीमित बजट में हम चौदह लोग थे। हम सुमुखा हॉटेल में सौ रुपये प्रतीदिन प्रती व्यक्ती के हिसाब से रहने लगे, फिर उसे लंम्में समय के हिसाब से किराए पर लिया। हमने बड़े प्यार से अपने लॉज का नाम "कॉक्रोच हॉटेल" रखा। मोहन नंजुन्दन, जस कौर, गणेश नाथन, ऊमॅन जॉर्ज, डग्लस क्रुज, राज पेरुमल, जेराल्डीन स्मिथ (अब केण्डाल) के मौरीस (अब हार्नी) रॉबर्ट और मित्रा हार्डींग, गोविंदा घोमन और ईअन टुटिल ये सभी सताव, कम वेतन, मच्छर, बाहरी बीमारियाँ असिध्द अगुवाई (हमारी ओर से) और भाषा की चुनौती; ये सबकुछ सहने को तैयार थे, सिर्फ मसीह के लिये। अपने काम के पहले वर्ष में इस गुट ने एक सौ छयालिस लोगों को शिष्य बनते और मसिहमें बपतिस्मा लेते देखा।

आज के वर्षो में मुंबई कलीसिया की स्थापना के साथ उत्तर एशियाई कलीसिया में पचास शहरों और छः देशों में पाच हजार से भी अधिक शिष्य बने, जहाँ गरीबों की मदद का काम हर वर्ष करीब पांच लाख लोगों को छू रहा था। लेकिन इस काम का मन और नींव था कृतज्ञता। बचाए जाने के लिए कृतज्ञ, परमेश्वर व्दारा उपयोग कीये जाने के लिए आभारी और जो भी सहारा उन्हें मिला, उसकी वे सराहना करते। इन लोगों को जानना और उनके साथ परमेश्वर के लिए काम करना एक आदर की बात थी, और है।

सोलह वर्षों बाद चौदह लोगों के इस गुट में से हमारी जानकारी के अनुसार बारह अब भी परमेश्वर के प्रति वफादार हैं और दूसरे दो में से एक का शिष्यों के साथ बढ़िया संपर्क है। "अनंत काल का फल" वह फल है जो कृतज्ञ है।

मन के लिए

१) आप के जीवन में परमेश्वर के आशिषों के लिए आप कितने कृतज्ञ हो? परमेश्वर और दूसरे लोगों के साथ के रिश्ते में आभारीपन का कितना भाग है ?

२) जब आप रोते हो तो आँसु कहाँ से बहते हैं; दया से या आत्मग्लानि से?

३) एक मनुष्य होने के नाते तुम्हारी सिमाएँ क्या हैं? पौलूस ने अपने पापों को देखा, लेकिन वह अपने पापों के प्रति खुला था और परमेंश्वर के अनुग्रह की माँग की। आपका स्वभाव कैसा है?क्या आप अपने पापों और कमज़ोरियों के प्रति इमानदार हो, या आप दूसरों के सामने अच्छा दिखने के लिए मुखौटा पहने घूम रहे हो?

१९

पवित्र लोग

वे मुर्दों में से जिलाए गये

तब यीशु ने ऊँचे स्वर से पुकारकर प्राण त्याग दिए।

उसी क्षण येरुशलेम के मंदिर का परदा उपर से निचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया। पृथ्वी काँप उठी और चट्टानें तड़क गईं। कब्रें खुल गईं; और सोए हुए अनेक पवित्र लोगों के मृत शरीर जी उठे।

मत्ती २७:५०:५३

सारे इतिहास में कई महत्वपूर्ण दिन हैं। लेकिन दो हजार साल पहले के रविवार या शुक्रवार जब यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया, इनसे अधिक महत्वपूर्ण दिन के बारे में सोचना कठिन है। जिस क्षण यीशु चिल्लाए मंदिर का वह परदा, जो अतिपवित्र स्थान को अलग करता, बीच में से दो टुकड़े हो गया। पृथ्वी काँप उठी। चट्टानें तड़क गईं और कुछ असाधारण हुआ। वचन ५२ कहता है कब्रें (या स्मारक) खुल गईं (या पुनःस्थापित; जैसे दृष्टी या गूँगे की चंगाई) और कई मृत शरीर (या सोए हुए) संत(पवित्र लोग) जी उठे। वे पवित्र शहर में कई लोगों पर प्रकट हुए।

इस दृश्य की कल्पना कीजिए। कब्रें खुल गईं! जगत में कुछ आश्चर्यजनक हो रहा था। एक क्षण के लिए परमेश्वर प्रकृति के नियमों को बदल रहे थे। शक्ति की इस बौच्छार का प्रभाव न सिर्फ यीशु को मुर्दो में से जी उठाने में हुआ लेकिन परमेश्वर के वो पवित्र लोग जो पहले ही मर चुके थे, इस समय वे भी जी उठे। एक दिन सारे संतों के साथ यही होगा। इन पवित्र बातों के बारे में हम तीन चीज़े देख सकते हैं। वो हैं; जो हमें छू सकते और हमारा मन और जीवन बदल सकते यदि हम इसे गंभीरता से लें।

मृत लोग जिवन से प्रेम करते हैं सांसारिक बातों से नहीं

हमारे जीवन के आंकड़े, हमारा रुतबा, हमारा काम, हमारा पैसा, हमारा घर - यही बाते हैं जिनसे कई लोग अपने आपको नाँपते हैं। सच तो यह है कि कुछ लोग जीवन को "चुहों का दौड़" कहते हैं, क्योंकि जिस तरह लोग एक

ही चक्र पर आगे जाने के लिए घूमते रहते हैं। आओ हम एक क्षण के लिए इन मृत लोगों के बारे में सोचें।

- हमें उनका नाम नहीं पता।
- हम नहीं जानते उनके पास कितनी दैलत थी।
- उनकी उपलबधीयों के बारे में हम नहीं जानते।
- उनके दु:खो को हम नहीं जानते।

हम जो कुछ भी जानते हैं वो सिर्फ यह है कि वे पवित्र हैं। परमेश्वर के उपयोग के लिए अलग कीये गए। कुछ उसके लोग, जब कब्रे फट गईं और थोड़े समय के लिए जब उन्हें जीवन मिला तब वे अपने रुतबे के बारे में चींतित नहीं थे। अपने धन दौलत के बारे में चींतित नही थे। वे शायद खुश थे की वे जीवित थे और कब्र में न थे।

यीशु आए ताकी हम जीवन पाएँ, बहुतायत का जीवन (यूहन्ना १०:१०)। परमेश्वर ने एक सुंदर संसार की रचना की है, एक ऐसे संसार की, जिसका आभास हम करें और आनंद उठाएँ। वह हमें झरने और सूर्यास्त, पक्षी और बच्चे देता है। वह हमें अनेक खुशियाँ और प्रोत्साहन देता है। यह एक शर्म की बात है यदि उनका आनंद उठाने के लिए हमारे पास समय न हो। एक गीत जिसने सचमुच मुझे अपने बच्चों की सराहना करने के लिए प्रेरित किया वह था बॉब कार्लिल्स व्दारा लिखित "तितलियों सा चुंबन"। जब भी मैं यह गीत सुनता हूँ तो रो पड़ता हूँ। गायक कहता है :

मेंरे जीवन के हर अनंत के लिए मैं परमेश्वरका धन्यवाद करता हूँ। ओह, लेकिन सबसे अधिक सोते वक्त की प्रार्थाना के बाद तितलियों सा चुंबन। ओह, वह सब जो गलतीयाँ मैंने की, मैंने शायद कुछ सही भी किया; हर सुबह एक आलिंगन पाना, और रात को तितलियों सा चुंबन।

जीवन की सरल बातें - बच्चों से एक आलिंगन, एक फूल, एक मुस्कुराहट। यही तो विशेष बाते है जिनको हमें सराहना और आभास करना चाहिये। मुझे याद है मेरी नन्हीं सी बच्ची हॅना के साथ जन्म के कुछ ही घंटों बाद सारी रात उसके लिए गुनगुनाना। तेरह वर्ष बाद हॅना को मसीह में बप्तिस्मा देने का आनंद हमने पाया। बप्तिस्मा के बाद हमारे परिवार के आलिंगन को मैं कभी भी भूल ना पाऊंगा। एक बार जब मैं सफर से लौटा तब

हमारी बच्ची मॅडलिन ने कहा "पिताजी, मुझे आप की मन की कमी महसूस हुई। क्या आपको मेरे मन की कमी महसुस हुई?" मुझे याद है मेरे बेटे के साथ (जब वह छोटा था) हर रोज़ बाग में चलना और उसके उन शब्दों का आभास जब भी वह कहता, "पिताजी मैं आपसे प्रेम करता हूँ"। मुझे याद है हमारी बेटी एस्थर को पकड़े रहना जब कई वर्षो पहले वह बीमार थी और मौत के करीब थी। हमारे पास ऐसे अनेक विशेष क्षण हैं।

और फिर भी सफलता, प्रामाणिकता और प्रसिध्दी की यह भूख कभी कभी हमें इतना तेज चलने पर मजबुर करती है की; इन बातों का आनंद लेने के लिए हम धीरे नहीं चल पाते। कल्पना कीजिए कि आप पहले ही मर चुके हैं, और फिर आपको जी उठने का मौका मिला तब फर्क क्या होगा? क्या आप सचमुच में उन बातों की चिंता करेंगे जो आज आप की चिंता का कारण हैं? आप अपना समय कैसे बिताएंगे? मृत लोग जीवन से प्रेम करते हैं, संसारीक बातों से नहीं।

मुझे याद है जब मैं माध्यमिक स्कूल में था, मुझे मसीहियत और कलीसिया का कुछ ज्ञान न था। मैं इतना चीन्तित था क्योंकि मैं लोकप्रिय नही था। किसी भी डान्स में जाने के लिए मैं बहोत शर्माता था। मेरे माध्यमिक शिक्षण के समय मुझे सिर्फ एक ही बार डेट का मौका मिला और मैं वहाँ भी नहीं गया। क्योंकि मेरे चेहरे पर मुंहासे थे। बास्केटबॉल के "अ" टीम में मैं शामिल न हो सका। उन दिनो में यह बातें कितनी महत्वपूर्ण लगती थीं। मैंने अपने आपको एक ही काम में जिसे मैं अच्छी तरह कर सकता था, लवलीन रखने का निर्णय बनाया : वह थी मेरी पढ़ाई। दूसरों के साथ तुलना करते वक्त मैं अपने आपको अपने गुणों से नापता था। परिक्षा में अच्छे नंबर और छात्रवृत्ती मेरे जीवन के अतिमहत्वपूर्ण बातें थीं।

फिर मैं कलीसिया आया। मैंने कई अलग अलग लोगों को देखा, उनमें से कई मुझसे कम शिक्षा पाए हुए थे। लेकिन हर कोई जीवन से प्रेम करता और शांति से जीता था। मैं ऐसा नहीं था। क्योंकि मैंने यीशु की आत्मा को उनमें देखा, मैं और अधिक जानना चाहता था।

एक शिष्य होने के बावजूद भी मसीही के बजाए सांसारिक बातों के लिये जीने के जाल में मैं फँसा। एक मिनिस्टर के नाते, विशेष कर शुरुवाती वर्षों में सबसे बढ़कर मैंने कलीसिया कि बढ़ौतरी, संख्या का मूल्य अधिक जाना।

जवानी के दिनों की तरह मैं अब भी अपने आप को आंकड़ों और अपनी उपलब्धीयों से नापता था। इस बार गुण और छात्रवृत्ती न थी, पर इस बार ये बपतिस्मा और बढ़ौतरी एक धार्मिक "चूहा दौड़"। हाँ मैं जरुर चाहता था कि लोग बचाए जाएँ, और मैं परमेश्वर से प्रेम भी करता था। लेकिन उपलब्धीयों से प्रेम करने की सांसारिक लालसा मेरे मन में लौट आई थी। इस किताब में लिखे कुछ वचनों ने कई वर्षों पहले मेंरे स्वभाव के बदलने में मेरी बहुत मदद की। मैं अब भी चाहता था कि कलीसिया बढ़े, लेकिन मैं कैसा दिख रहा हूँ इस बात का मेरे लिये अब कोई मतलब नही था। अंत में परमेश्वर ही चीजों को बढ़ाता है, हम नहीं। (कुरिंथीयो ३:१०-१५)

मृत लोग, मनुष्यों से प्रेम करते हैं अपने जन्मस्थान से नहीं

मरे हुए लोगों के कब्र तड़ककर खुल चुके थे। कब्र में जब उनके चेहरे पर सूरज की किरणें चमकी तब उनकी पहली प्रतिक्रिया क्या थी? जब उनकी हड्डीयों पर एक बार फिर माँस चढ़ा और उनकी आत्माओं को फिर एक बार एक शरीर मिला तब उनके मन में क्या हुआ? मुझे शंका है कि कुछ ऐसे विचार आए हों, "ओह नही मेरा कब्र टूट गया, मुझे जाकर इसे सुधारनेवाले को लाना चाहिए - इसमें कितना खर्च होगा?"

और जब वे अपने कब्र को छोड़ चुके तो वे कहाँ गए? वे लौटकर अपने गाँव नहीं गए, यह देखने के लिए की जमिन जायदाद का भाव क्या चल रहा है। सच तो यह है कि उनके पास रहने की कोई जगह नहीं थी। लेकिन वे निश्चिंत थे। उनके पास पैसे नहीं थे - लेकिन इससे उन्हें कोई फर्क नही पड़ रहा था। उन्होंने पुनरुस्थान का स्वाद चखा था। उनके पास फिर से जीवित होने का एक मौका था। और उनके पास कहने को कुछ शक्तिशाली बात थी : "यह सब सच है! यह सब कीमती था! पवित्र होना कीमती था! अपने परमेश्वर से पूरे मन से प्रेम करो! कभी हार न मानो!" उन्हे कोई रोक नहीं सकता था!

तो उन्होंने क्या किया?

वे लोगों को देखने गए। उन्होंने किसे देखा? अपने परिवार और मित्रों को जो अब तक जीवित थे। दुकानदार और पड़ौसीयों को जिन्हें वो जानते थे। शिक्षकों। सहकर्मियों। और पूरी तरह अजनबीयों को भी देखा।

उनके लिए सबसे अधिक महत्व था लोगों का, वस्तुएँ नहीं। ना ही उनके

घर, उनके कार, या उनके यंत्र, ना ही उनके निवेश और बँक बॅलन्स (जमा पूंजी)।

मृत लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, अपने सुरक्षित स्थान से नहीं।

नये नियम में कई जगहों पर हमने बीमार लोगों को उनकी चटाई या बिस्तर पर लेटे रहने के बारे में पढ़ा। मरकुस ६:५५ में कहता है कि लोगों ने बीमार लोगों को चटाई पर डालकर, यीशु जहाँ कहीं पर भी थे उनके पास लाया। प्रेरित ५:१५ में येरुशलेम के लोग बीमार लोगों को उनके बिस्तर या गादी पर लेकर पतरस और प्रेरितों के पास आए। प्रेरित ९:३४ में जब पतरस में एनियास को चंगा कीया तब उसने उससे कहा उठ और अपना बिछौना ठिक कर। मरकुस २ में जब यीशु ने लकवे के रोगी को चंगा कीया तब उससे कहा अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा (व:११)। फिर बेतहसदा के जलकुंड के पास एक व्यक्ति से यीशु ने कहा, "उठ, अपनी खाट उठाकर चल फिर" (यूहन्ना ५:८)।

बीमार लोग अपने साथ चटाई (या बिछौने) लेकर चलते क्योंकि जब वो बाहर होते तो उन्हें उसकी जरुरत पड़ती थी। यह उनका सुरक्षित स्थान था। पाकिस्तान और भारत में हम अक्सर भीड़ से भरे गलियों में लोगों को चटाईयों या बिछौने पर सोते देखते हैं। हाल ही मे मैं लाहौर, पाकिस्तान में शिष्यों को मिलने गया और हम एक मसीही के एक पड़ौसी के घर के पास से गुजरे। घर के आँगन में एक छोटी खाट पर लकवे से त्रस्त एक औरत लेटी थी। हमने उसके लिये प्रार्थना की और जितना हो सका उतना उन्हें प्रोत्साहन दिया और आगे बढ़ गये। इस प्रकार के दृश्य पहली शताब्दी में बहूत आम थे।

जिनके पास कुछ नहीं है, जो थोड़ा कुछ उनके पास है वही उनके आराम के लिये काफी है, एक सुरक्षित जगह जहा वो जा सकें। लेकिन हम जिनके पास अधिक है, हमारे पास भी हमारी "चटाईयाँ" हैं, जिनसे हम लिपटे और निर्भर रहते हैं। प्रतिदिन का अखबार। हमारा घर पूरे सुधार के साथ। हमारी कार। इंटरनेट। व्हिडिओ गेम। संगीत। हमारे शौक ये मृत लोग अपनी चटाईयाँ अपने साथ लेकर नहीं चल रहे थे। वो पूरी तरह जीवीत, और स्वास्थ्य की देखभाल की जरुरतों में नहीं थे। अपने स्वास्थ्य के बारे में वो चींतित नहीं थे - "आप अभी मुर्दों में से जिलाए गए, शायद आपको डॉक्टर से जाँच की जरुरत है!" उनके पास कोई सुरक्षित जगह नहीं थी।

जब यीशु यूहन्ना ५ में लकवे से पीड़ित एक व्यक्ति से मिले, उन्हें पता चला कि जलकुंड के किनारे वह व्यक्ति अपनी चटाई पर ३८ साल से बैठा था, चंगाई का मौका सामने था, लेकिन कभी पानी में न उतरा। अपनी चटाई पर लेटे रह कर बहाने बनाना सुरक्षित और आसान था। उसने कहा,"मेरे पास कोई नही है कि जब पानी हिलाया जाए तो मुझे कुंड में उतारे। इसिलिए मेरे पहुँचते पहूँचते दूसरा आदमी मुझ से पहले कुंड में उत्तर पडता है" । तब यीशु ने उससे एक आसान प्रश्न पूछा : "क्या तू स्वस्थ होना चाहता है" (यूहन्ना ५:६)।

हम में से कुछ के पास सुरक्षित जगहें हैं जो सांसारिक नहीं लेकिन भावुक हैं। हम अपने आत्मग्लानी के चटाई से लिपटे रहते हैं क्योंकि हमें इसकी आदत सी पड़ जाती है। हम अपने कडुवेपन के चटाई से लिपटे रहते हैं ताकि हमें फिर कभी चोट न पहूँचे। इन तर्कों के साथ कि "कोई मुझ में विश्वास नहीं करता "या "मुझसे धोका और बुरा बर्ताव किया गया था। जब तक हम इन चीजों से लटके रहेंगे हम यीशु को कभी न देख पाएँगे।

कुछ लोग जीवीत रहते हैं लेकिन ऐसे जीते हैं जैसे वे पहले ही मर चुके थे। मसीही (यीशु में) मरे हुए लेकिन परमेश्वर में जीवित हैं (रोमीयों ६:११)। उनके पास आनंदित होने का और परमेश्वर ने जैसा उन्हें दिया वैसा ही दूसरों को देने का हर कारण है - जब तक वो इस धरती पर हैं तब तक।

एक परिवार की कहानी

कई वर्षों पहले, नई दिल्ली में सपना एक शिष्य बनी। वह और उसके पती केशव, के दो बेटियाँ हैं, आंचल (एक छोटी बच्ची) और सुप्रिया (१३-१४ वर्ष)। केशव एक अच्छा व्यक्ति है, जो भारतीय सीमा सुरक्षा दल में नौकरी करता है; इसी कारण अपना अधिक समय घर से बहूत दूर, खतरनाक जगहों पर बिताता हैं और परिवार से उसका संपर्क बहूत कम है। अपने पत्नी के विश्वाास का वह समर्थन करता है और जब कभी अपने परिवार को मिलने का मौल्यवान क्षण उसे मिलता उस बीच वह बराबर कलीसिया में शामिल रहता है।

कई परिवार, जब उन्हें बच्चे हो जाते हैं तब संसार की बातों पर उनकी लालसा केंद्रित हो जाती है, "बच्चों की भलाई के लिए" । जी हाँ, हम अपने बच्चों से प्यार करते हैं और उन्हें बेहतर देना चाहते हैं। लेकिन यह एक बहाना बन सकता है सांसारिक चिजोंको अपने जीवन में घुसने देना का एक मौका।

स्वप्ना अपने परिवार को इस रीति से नहीं पाल रही है। अधिकांश समय वह एक अकेली माँ के रुप में गुजारती है, वह और उसकी बेटियाँ दूसरों की सेवा में लगे रहते हैं।

दिल्ली में कलीसिया धन इकट्ठा कर रही थी ताकि उन राज्यों में जहाँ कलीसिया नही है वहाँ कलीसिया स्थापित करने का काम हो सके। सभी लोगों को अपना उत्तम प्रोत्साहन दिया गया था। यह सोचने का कि हर महिने के दशमांश के साथ एक महिने का अधिक दशमांश कलीसिया के कार्य के प्रति एक उपहार के रुप में दे।

केशव का तबादला एक दूर दराज़ के इलाके में हुआ था। इसलिए वहाँ जाने से पहले उसने अपने पत्नी को पैसे दिये ताकि आनेवाले कई महिनों तक वह परिवार की देखभाल कर सके। जब उसने इस अनुदान के बारे में सुना, तब सबसे पहले उसने यह काम किया कि जो पैसे उसके पति ने दिये थे, उसमें से एक महिने का अधिक अनुदान दिया। यह एक सच्चा बलिदान था क्योंकि वह उन पैसे में से आ रहा था जिन पर उन्हें जीना था। उसने जो भी किया था उसके बारे में ज्यादा चर्चा नहीं की। बाद में उसे चुनौतीयों का सामना करना पड़ा क्योंकि उसका पती अपेक्षा से ज्यादा लंबे समय के लिये चला गया था। उससे संपर्क या पैसे की कोई उम्मीद नही थी। परमेश्वर की मदद से वह और उसकी बेटियों ने बिना कुड़कुड़ाए और आनंद के साथ थोड़े में ही गुजारा किया।

जब औरों को सपना के इस त्याग का पता चला तो इस बात से उन्हें चुनौती और प्रेरणा मिली। इन कठिनाईयों के महिनों में उसकी बेटी सुप्रिया ने जो कई वर्षों से कलीसिया आती थी पवित्र शास्त्र का अध्ययन कीया और मसीह में बप्तिस्मा लिया। वह और उसकी माँ मानो स्मारकों के लिये नहीं जी रहे हैं, और ना ही "चूहा दौड़" या उनके गाँव के लिये। उन्होंने अपने सुरक्षित स्थानों को जाने दीया और यीशु के पीछे चल रहे हैं।

लूका २१:१-४ में यीशु ने उस स्त्री की प्रशंसा की जिसने मंदिर के लिए दो तांबे के सिक्के दिये। वह जानता था कि फरीसी किस तरह मंदिर को चलाते थे और पैसों के प्रति उन के प्रेम को। फिर भी वह उस स्त्री के विश्वास से प्रभावित हुए। उसने परमेश्वर को सब कुछ दे दिया जिस पर उसकी जीविका थी।

मन के लिए

१) आपके बारे में क्या? आप किस बारे में सोचते हो? आपकी प्राथमिकताएँ क्या हैं?

२) यदि मृत व्यक्तियों को आप के पास आने का मौका मिला तो वे आपके जीवन के बारे में क्या सोचेंगे? क्या वे आप की उपलब्धीयों से प्रभावित होंगे? यदि आपके जीवन में आए लोगों से वे बातें करें तो आप के बारे में वे क्या कहेंगे?

३) ये पवित्र लोग जो कहना चाहते हैं क्या आप उससे प्रभावित होंगे? आओ हम उनके उदाहरण और अपने मसीहा के बारे में सोचें और सही बातों के लिए जियें।

२०

मरियम

एक माँ का दुःख

"क्योंकी उसने अपनी दासी की दीनता पर दृष्टी की हैं। अब ये युग युग के लोग मुझे धन्य कहेंगे"।

लूका १:४८

यीशु की माता मरियम ने सचमुच एक असाधारण जीवन जिया। परमेश्वर के साथ उसकी यात्रा के आरंभ की बातें हम जानते हैं। एक कुंवारी थी और उसकी मंगनी हो चुकी थी। अचानक एक स्वर्गदुत उसपर प्रकट हुआ और उसका जीवन उथल - पुथल हो गया (लूका १:२८-३८)। आरंभ से ही मरियम यह जान गई थी कि उसके लिये परमेश्वर की कुछ विशेष योजनाएँ हैं। उसने परमेश्वर की महिमा को "अपने कार्य से और बढ़ाया" लूका १ :४६-५५ में उसकी वह अद्‌भूत प्रार्थना। उसने परमेश्वर की सहनशील कृपाको पहचाना ("पीढी से पीढी तक बनी रहती है" - व ५०)। वह जान गई की दीनता परमेश्वर के लिए एक महान धन है। ("क्यो" कि उसने अपनी दासी की दीनता पर दृष्टी की है, व : ४८; किंन्तु दीनों को ऊंचा किया" व - ५२)।

जन गणना के समय खराब हालात में वह अपने परिवार के वंश स्थान बेतलेहेम को गई (लूका २:१:३)। सराय में काफी भीड़ होने के कारण उन्हें वहाँ जगह न मिली जिस कारण उसे यीशु को एक तबेले में जन्म देना पड़ा और उन्हें कपडे में लपेटकर जानवरों के चारा खानेवाले पात्र में रखा (लूका २:६-७)। यीशु के जन्म के तुरन्त बाद, स्वप्न में एक स्वर्गदूत से चेतावनी पाकर उसी रात युसुफ और मरियम मिस्त्र देश को भाग गए ताकि राजा हेरोदस के कातीलों से बच सकें(मत्ती २:१३-१५)।

उसने अपनी यादों की सम्पत्ति को संजोकर रखा

अच्छे माता - पिता, अच्छा परिवार, इन लोगों में एक बात आम दिखाई देती हैं; वे मिलकर यादें बनाते हैं, और वे विशेष समयों को याद रखते हैं। जब यीशु पैदा हुए और चरवाहे आए तब वचन कहता है, "पंरन्तु मरियम ये सब बातें अपने मन में रखकर सोचती रही"(लूका २:१९)। जब यीशु बारह वर्ष के

थे तब उनके माता-पिता को याद नहीं रहा कि यीशु वहीं यरुशलेम में अकेला छूट गया है। हाँ, लेकिन वह अपने पिता के घर में था उपदेशकों की बातें सुनते और उनसे प्रश्न पूछ रहा था (लूका २:४६-४९)। उनके अनुभवों का अनुकरण करते हुए, लूका हमें कहता हैं, उनकी माँ ने ये सब बातें अपने मन में संजोकर रखीं।

उसने अपने परिवार को एकत्रित रखा

यीशु के बारह वर्ष की आयु से लेकर तीस वर्ष का होने तक हम वचनों में इस बारे में कुछ नहीं देखते। लेकिन जब तक यूहन्ना बप्तिस्मादाता ने उन्हें बप्तिस्मा दिया; लगता हैं उस समय उनके पिता युसुफ दृष्य में नहीं थे। अनुमान हैं कि युसुफ की मृत्यु हो चुकि थी, और मरियम घर में कई बच्चों की देखभाल करने के लिये अकेली रह गई थी। दिन प्रति दिन मरियम अपने परिवार की जरुरतों को पूरा करने का संघर्ष करती रही और यह भी निश्चय कीया कि उसके हर एक बच्चे का ध्यान वह रख सके ताकि वे एक जिम्मेंदार भविष्य पा सकें। इस प्रेमने निश्चय ही अन्तर लाया क्योंकि प्रेरित १:१४ में एक सौ बीस विश्वाासीयों के बीच मरियम और येशु के भाई भी थे, वे एकजुट थे। संसार भर में अनगिनत माता-पिता अपने बच्चों की परवरीश के लिये हर रोज बिना सराहे जी तोड़ मेंहनत करते हैं। बिल चुकाना, हर रोज़ खाना बनाना, और पानी भरना भी एक बड़ा संधर्ष का काम हैं। लेकिन किसी तरह मरियम ने इसे किया। यदि आपका जीवन ऐसा हैं तो, यह जानो; कि परमेंश्वर निश्चय ही आप पर गर्व करते हैं और आपके किये कामों को न भूलेंगे (इब्रानियों ६:१०)।

यह आश्चर्य की बात नहीं हैं कि इतने वर्ष ये सब कठीन काम और प्रेम देने के बाद जिस तरह यीशु की मीनीस्ट्री चलाने की जीवन शैली थी उसे देखकर वह दुःखी हुई। मरकूस ३:२०-२१ में जब भीड़ फिर जमा हो गई और यीशु और उनके चेलों को खाना खाने का समय भी न मिला, और जब यह बात मरियम को पता चली तो उसने सोचा, "कि यीशु पागल हो गया हैं"। वह और उनके भाईं "उन्हें पकड़ने आए"। जब वे वहाँ पहुँचे जहाँ यीशु थे तो यीशु ने बाहर आने से इन्कार किया (मरकूस ३:३१-३५)। यह बात शायद मरियम को बहुंत बुरी लगी। वह यह प्रतिक्रीया कर सकती थी "ठीक हैं अपनी मर्जी करो, तुम आज से मेंरे पुत्र नही"। लेकिन जब यीशु क्रूस पर लटक रहे थे तब वह अपनी बहन के साथ वहाँ थी (यूहन्ना १९:२५)। और जब क्रूस के समय, पुनरुत्थान के समय और ऊपर उठाए जाने के समय; विश्वासी वहाँ थे तब वह भी यीशु के

भाईयों के साथ वहॉ थी। उसने अपने परिवार को एकजुट रखा।

'क्रूस से नीचे आ जाओ'

जब यीशु क्रूस पर लटके थे, तब क्रूस के आसपास खड़े लोग उनका मजाक उड़ा रहे थे (मत्ती २७:३८-४४)। इससे मरियम का मन टूट गया होगा। उसका पुत्र, एक युवा पूत्र जिसे उसने खिलाया - पिलाया और बड़ा किया उसका खून किया जा रहा था क्यों कि वह धार्मिक था। छोटे लोग, घृणासे भरे लोग, निर्दयी लोग उसका अपमान कर रहे थे। उनमें से कुछ ने अपमानास्पद रुप में कहा "क्रूस से निचे उतर आ"। यीशु के पास बारह से भी अधिक स्वर्गदूतों की पलटने को अपनी सहायता के लिए बुलाने की शक्ती थी (मत्ती २६:५३), लेकिन उनके गालीयों के व्दारा अपने कार्य /मक्सद को बदलने से इन्कार किया।

फिर भी जब यीशु क्रूस पर लटके थे तो वहाँ एक नम्र स्वर था, एक अतिशक्तीशाली स्वर। जो बिना शब्दों के कहे - उन के माँ के चेहरे के वह भाव जब वह अपने पूत्र को देख रही थी उस नजर ने शायद यीशु से बिनती की होगी कि "क्रूस से नीचे आ जा, कृपा करके अपनी माँ के आँसू पौंछ"। यीशु इस बात को माँ की आँखों में देख रहे थे। वह उसके दर्द को महसूस कर रहे थे। वे जानते थे कि एक अन्तीम चमत्कार से वे अपनी माँ के दुःख दूर कर सकते थे।

शायद इस बात में यीशु को लालायित किया कि वह अपनी माँ के दुःख कम करे, क्रूस से नीचे उतरकर उनका प्रोत्साहन करे, ताकि वह अपने बेटे को इस तरह क्रूस पर दुःख सहता न देखे। लेकिन यीशु परमेश्वर और अपनी माँ से अथाह प्रेम करते थे, इसलिए वे क्रूस पर लटके रहे। वह भी परमेश्वर से और अपने पूत्र से अथाह प्रेम करती थी, कि उनके निर्णय का आदर करे। क्रूस के पास वह उनके साथ थी, उनके अन्धकारमय समय में वह उनके साथ थी। और यह काफी था।

दुःख पर प्रेम विजयी होता है

करुणा का जन्म बिहार के एक छोटे से गाँव में हुआ। दुःख की बात थी उसे जन्म देते समय उसकी माँ चल बसी। उसके पिता का दिल टूट गया और एक लड़की के जन्म से वह खुश न था। संवेदना से भरकर उनके एक पड़ौसी

ने बच्चे का ध्यान रखने का निश्चय किया। लेकिन निर्मला खुद बहुत गरीब थी। उसे कोड़ था। करुणा के लिये निर्मला जो कुछ भी कर सकती थी उसने किया, लेकिन वह उसे अपना दूध नहीं पिला सकती थी, और बाहर से खरीदना बहुत महँगा था। निर्मला ने बचे के दूध में गंदा पानी मिलाकर उसे पिलाया।

बच्चे का विकास नहीं हो रहा था, दिन प्रति दिन वह कमजोर और पतली होती जा रही थी, और उसे इस परिस्थिती में देखकर निर्मला का मन टूट गया। एक माँ ही जिस दर्द को समझ सकती है, वह दर्द उसने महसूस किया- वह दु:ख जो; मरियम ने महसूस किया, एक बच्चे के दु:ख का एहसास; जो अब उसकी हो चुकी थी, जो मर रही थी। निर्मला एक बार होप वर्ल्डवाईल्ड व्दारा चलाए जा रहे कोडियों की बस्ती होप में रह चुकी थी। वह उस बस्ती में लौटी और महिलाओं के कार्यक्रमों की देखरेख करने वाली मिरीयम से मिली और उसे अपने दु:खी मन की बात सुनाई।

नौ महिने की होने पर भी उस बच्ची का वजन ४.५ किलो था और उसका शरीर कड़क हो गया था। निर्मला चाहती थी कि उस बच्चे को कोई गोद ले और होप वर्ल्डवाईड व्दारा चलाया जा रहा आश्रम का अनाथालय करुणा को गोद लेने के लिये तैयार था। करुणा को देने के लिए निर्मला को साहस से काम लेना पड़ा। यह बहुत कठिन था, पर यही सही था। वे तुरंन्त बच्चे को अस्पताल ले गए और कई शिष्यों ने इस बच्चे के जीवन के लिये प्रार्थना की। हालांकि डॉक्टरों को ज्यादा आशा नहीं थी, लेकिन करुणा बच गई। कुछ ही महिनों में उसका वजन दुगुना हो गया और एक भले परिवार ने उसे गोद ले लिया।

निश्चय ही करुणा को देने की बात ने निर्मला का दिल तोड़ दिया। लेकिन करुणा के लिये यही उत्तम था।करुणा के लिये उसके प्रेम के कारण यह संभव हुआ कि वह ऐसे लोगों से जुड़ सके जो उसे सबकुछ और एक माँ का प्यार दे सके। ये सभी लोग - निर्मला, मरियम, अनाथालय के कर्मचारी और गोद लेने वाला परिवार - एक ऐसी जगह खड़े होने के लिये तैयार थे जहाँ वे प्रेम कर सके। वे करुणा के लिये वहाँ रहने के लिये तैयार थे। आश्चर्य नहीं के याकूब ने लिखा "हमारे परमेंश्वर और पिता की दृष्टी में शुध्द और निर्मल भक्ती यह हैं कि हम अनाथों और विधवाओं के दु:ख तकलीफ में उनकी सुधि लें और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें" । (याकूब १:२७)।

मन के लिए

१) जब यीशु अपने मीनीस्ट्री चला रहे थे, अपने आप को मरियम की जगह रखकर सोचो कि यदि आप उनकी माँ होती तो वह कौनसी बातें होती; जो आपको चींतित करती, क्या ये चिंताएं आज आपके चहेते लोगों से आपके रिश्ते पर असर डालते?

२) अपने परिवार में बड़ते हुए वे समय के कौनसे विशेष यादें आपके पास हैं? क्या आज आप अपने परिवारिक जीवनों में यादें बना रहे हैं?

३) क्या आज आपने अपने संकल्पो से समझौता कर लिया हैं या"क्रूस पर से नीचे उतर आए हैं" कि अपने चहेते लोगों को प्रसन्न कर सको? किन बातों में आपने यह किया हैं? किन बातों में आप अपने विश्वास में ठंडे रहे जब कि इस बात से आपके चहेते लोग नाराज हुए?

२१

बरअब्बा

उसने एक विद्रोह छेड़ा

तब उन्होंने फिर चिल्लाकर कहा, "इसे नहीं परन्तु हमारे लिये बरअब्बा को छोड़ो? बरअब्बा एक डाकू था।

यूहन्ना १८:४०

जब यीशु क्रूस की ओर जा रहे थे तब बरअब्बा एक और व्यक्ति था जो उस समय यीशु के पास था। हम उसके बारे में कम जानते हैं, पर जो कुछ भी जानते हैं उससे हमारे सामने उसकी एक हल्की छटा उभरती हैं। उसे और लोगों के साथ यरुशलेम में सशस्त्र विद्रोह और खून के ईल्ज़ाम में जेल में डाला गया था (लूका २३:१९, मरकूस १५:७)। मत्ती ने उसका वर्णन एक "कुख्यात" कैदी के रुप में किया है (मत्ती २७:१०)।

जब पीलातुस के सामने यीशु का मुकद्दमा शुरु हुआ तब बरअब्बा एक कैदी था। फसह के पर्व के समय एक प्रथा थी कि जिस कैदी को लोग चुने उसे रिहा किया जाता था, और पीलातुस ने इस प्रथा का उपयोग कर यीशु को रीहा करना चाहा। लेकिन महायाजक और बड़े बूढ़ों ने भीड़ को उकसाया कि वे बरअब्बा को छोड़ने की मांग करे। पीलातुस के अध्याय में जहाँ पहले लिखा गया हैं भीड़ को उकसाना आसान काम हैं। वही लोग जिन्होंने कुछ ही दिनों पहले "होसन्ना" कह कर यीशु की उपस्थीती में चिल्लाया था आज उनमें से ही कुछ "क्रूस दो "यह कहकर चिल्ला रहे थे। और याजकों के इस षडयंत्र का लाभ बरअब्बा को हुआ।

एक लोकप्रिय पाप

विद्रोह युगों से एक लोकप्रिय पाप रहा है। यह अमरिकी युवा संस्कृति का एक अभिन्न भाग हैं। पहले की एक पीढ़ी जेम्स डीन का "बिना कारण का विद्रोही" और युध्द के खिलाफ उसके जोश; और १९६० का लैंगिक क्रान्ती के लिये उसका आदर करती हैं। मेंरी किशोरावस्था में संगीत और भारी भरकम संगीत के गुट जैसे "द सॅक्स पिस्टल्स" "मॅटालिका", "द क्लैश" और

"बिल्ली आयडल" (रिबेल यल) ने युवा विद्रोह की आग को और भड़काया। आज संगीत के एमीनेम और ५० सेन्ट्स जैसे गुट संस्थाओं के प्रति आज के युग के विद्रोह को उन तक पहुँचा रहे हैं। कई लोग क्रान्तीकारीं 'चे ग्युवेरा' की तस्वीर छपी टी-शर्ट पहनकर घूमते हैं, शायद वे इस व्यक्ति के बारे में या उसने क्या किया इस बारे में कम ही जानते हो, लेकिन उसके विद्रोह के जोश (स्वतंत्रता की इच्छा) को बाँटते हैं। मैंने धार्मिक नेताओं को भी "आवाज उठाने" ओर "सुने जाने" के नाम पर विद्रोह को बढ़ावा देते देखा हैं।

सन १९६० में चीनी सरकार ने सांस्कृतिक क्रान्ती के तहत वृध्दों के विरुध्द एक विद्रोह का आरंभ किया। उनका एक घोषवाक्य था "विद्रोह करना सही हैं" । यह राष्ट्र के लिये आगे बढ़ाया गया एक सकारात्मक कदम नहीं था।

दीनता पर पवित्र शास्त्र का जोर

फिर भी वचनों का एक अलग बात पर ज़ोर है जो है। शिक्षण योग्य, दीन और आधीन। लूका ११:१ में शिष्यों ने यीशु से पूछा, ''हे प्रभू, जैसे यूहन्ना बपतिस्मादाता ने अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखलाया हैं वैसे ही हमें भी आप सिखलाईये। यीशु ने स्वयं के बारे में यूहन्ना ८:२८-२९ में कहा,

"जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाओगे तब तुम जानोगे कि मैं वही हूँ। मैं अपने आपसे कुछ नही करता परंतु जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया है वैसे ही ये बाते मैं कहता हूँ। मेरा भेजनेवाला मेंरे साथ है। उसने मुझे अकेला नही छोडा हैं, क्योंकि मैं सदा वही काम करता हूँ, जिससे वह प्रसन्न होता है।"

उन्हे परमेश्वरने सिखाया था और वह परमेश्वरके अधिन रहा। मत्ती ११:२९ में यीशु अपने संदर्भ में कहते हैं "मैं नम्र और मन में दीन हूँ।"

हम बीरीयों के उदाहरण से परिचित है, जिन्हें प्रेरित १७:११ में सराहा गया हैं क्योंकि प्रतिदिन वे वचनों को परख रहे थे। यह जानने के लिए कि पौलूस ने जो सिखाया वह सही हैं या नही? वे सीख रहे थे - समझने में तत्पर - ये फाड़ खाने के लिए नही?

मरियम यीशु के पैरों के पास बैठी; वे जो कह रहे थे उसे सुन रही थी, जबकि मार्था उसके साथ सही बर्ताव न करने के बारे में "बातें" कर रही थी। लेकिन मरियम की प्रशंसा की गई (लूका १०:३८-४२)। मार्था की चिन्ताएँ और विचार भलाई और न्याय पाने की इच्छा से प्रेरित थे इस बात पर कोई शक

नहीं, लेकिन फिर भी प्रेमपूर्वक उसे जताया गया की यह उचित नही हैं।

जब शाऊल और बरअब्बा अंताकिया की कलीसिया में गए, वहाँ उन्होंने बहुत लोगों को सिखाया (प्रेरित ११:२६)। उसके शिक्षण के केंद्र बिंदू यह दो सिद्धांत थे "तुम पूरी दीनता और नम्रता के साथ धिरज रखते हुए प्रेम से एक दूसरे की कठीनाईयों को सह लो" (इफिसियों ४:२), और "मसहि के भय से एक दूसरे के अधिन रहो (इफिसियों ५:२१)।

याकूब ने नितीवचन की किताब से यह बात लिखी, "परमेश्वर अभिमानियों से विरोध करता है, पर वह दीनों पर अनुग्रह करता हैं (याकूब ४:६)। और वह कहता ही गया "इसलिये परमेश्वर के अधिन रहो प्रभु के सामने दीन बनो.... तो वह तुम्हें शिरोमणि बनाएगा" (याकूब ४:६, १०)।

पतरस ने, १ पतरस ५:५-६ में यही सलाह दी

"हे नवयुवकों, तुम भी धर्मवृध्दोंके अधिन रहो। तुम सब एक दुसरे की सेवा के लिये दीनता से सदा तैयार रहो, क्योंकि "परमेश्वर अभिमानियों का सामना करता हैं, परंतु दीनों पर वह अनुग्रह करता हैं।" परमेश्वर के समर्थ हाथों के नीचे दीनता से रहो, जिससे वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाएगा।"

फिर उसने १ पतरस २:१८-१९ में यह सलाह दीः

"हे सेवकों हर प्रकार के भय के साथ अपने स्वामी के अधीन रहेन केवल भले और नम्र स्वामी के , पर कुटील स्वामी के भी अधीन रहो। यदि कोई परमेंश्वर का विचार करके अन्याय से दुःख उठाता हुआ क्लेश सहता हैं तो यह सुहावना है।"

पतरस ने बाद में २ पतरस २ में झूठे नबी और शिक्षक के बारे में चेतावनी दी हैं। उसने उन लोगों के बारे में बात किया "जो अशुध्द अभिलाषाओं के पिच्छे शरीर के अनुसार चलते और प्रभु सत्ता को तुच्छ मानते हैं (व १०)।

वे व्यर्थ घमण्ड की बातें कर के बचपन के कामों के व्दारा उन लोगों को शारिरिक ईच्छाओं में फंसा लेते हैं जो भटके हुओं में से अभी नीकल ही रहे हैं। वे उन्हें स्वतंत्र होने की प्रतिज्ञा देते हैं, पर वे स्वयं सड़न के गुलाम हैं, क्यों कि जो व्यक्ति जिससे हार जाता हैं वह उसका गुलाम बन जाता हैं" (२ पतरस २:१८-१९)।

नए नियम में हर प्रकार के अधिकारियों के अधिन रहने का प्रोत्साहन दिया गया हैं क्योंकि अधिकारियों की नीयुक्ती परमेश्वर करते हैं (१ पतरस २:१३-१४, रोमियों १३:१-२)। गलातियों ५:२० में फूट और विधर्म को पाप की सूची में गिना गया है, और नम्रता आत्मा का फल है (गलातियों ५:२३)। नया नियम में यह बात स्पष्ट हैं कि मसीही होने के नाते हमें नम्रता शिक्षणयोग्य और अधिनता की आत्मा रखने को कहा गया हैं और बदला परमेश्वर पर छोड़ने का (इब्रानियों १०:३०)।

रोमियों १२:१८-२१ सुन्दरता से सीखाता है :

जहाँ तक हो सके तुम अपनी ओर से सब मनुष्यों के साथ मेंल-मिलाप रखो। हे प्रियों अपना बदला न लेना : परंन्तु परमेश्वर के क्रोध को कार्य करने का अक्सर देना क्योंकि धर्मशास्त्रो में लिखा है, "बदला लेना मेरा काम है। प्रभु कहता है मैं ही बदला लूंगा।" इसके विपरीत

यदि तेरा शत्रू भूखा हैं, तो उसे खाना खिला। यदि प्यासा हैं तो उसे पानी पिला। क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा। "बुराई से न हारो परंन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।

बरअब्बा नम्रता या अधीनता में विश्वास नहीं करता था। शायद उसने सोचा कि उसका चालचतन ठीक था। हमारी गैरसरकारी संस्था होप ने नई दिल्ली के तीहार जेल में कई वर्षो तक काम किया, कैदियों को कम्प्युटर सिखाकर और उनकी दंत चिकित्सा कर के। कैदियों के साथ हमारी बातों में कई बार हमने पाया कि वे लगातार अपना गुनाह कबूल करते हैं; लेकिन साथ ही खून करने या दूसरे गुनाहों का सही होने का दावा भी करते हैं क्योंकि "उसके साथ ऐसा ही होना चाहिए था"।

बरअब्बा के पास एक मानवी आत्मविश्वास था जो उसे यह बता रहा था कि वह सही हैं। उसके पास रोमियों के खिलाफ खड़े रहने का साहस था और इससे कई प्रेरीत हुए। सरकार की क्रूरता में उसके हिंसा को यह कहकर अनदेखा किया गया कि यह "दुष्टता आवश्यक थी"। यीशु लोगों को प्रेम करने और उन्हें सच्चाई बताने आए, तब भी लोगों ने उस हिंसक सशस्त्र विद्रोही का चुनाव किया कि वह रीहा किया जाए।

२१ वीं शताब्दी का समाज साधारणतः अधिकारीयों के अधीन रहने की बात को अधिक मान नहीं देता हैं, जितना कि वह "अपने अधिकार के लिए लड़ने "और नंबर १ बनने को देता हैं। जब कि अमेरिका के पास कई महान सिध्दांत और मान्यताएँ हैं, अमेरिका का स्वतंत्रता और अधिनता में न रहने का जुनून ("मुझ पर चढ़ाई मत करो"एक क्रांती का घोषवाक्य, एक जहरीले नाग के साथ एक झण्डे पर लिखा हुआ था) पवित्र शास्त्र पर आधारित नहीं है।

विद्रोही के बजाए शिष्यता

शिष्यता या शिक्षण की कल्पना को वचनों में बड़ी अच्छी तरह से स्थापित किया गया है। मती २८:१९ में "शिष्यता " के लिये जिस शब्दों का उपयोग किया गया है वह है "मॅथेट्यूसेट" जो "मॅथेटेस" शब्द का लंम्बा रुप है, जिस का अर्थ है "सिखना"(१ कुरु ४:६)। मती ९:१३ में यीशु जिस शब्द का उपयोग करते हैं, वह इसका एक समांतर शब्द हैं, जहाँ वे कहते हैं: "तुम जाकर धर्म शास्त्र के इस वचन का अर्थ सिखो (मेंथेट) मैं बलिदान नही पंरतु दया चाहता हूँ। मैं धर्मियों को नही परंतु पापियों को बुलाने आया हूँ"। इस शब्द (मेथेटेस) का दूसरा रुप लूका ६:४० में दिखाई पडता हैं। जहाँ यीशु कहते हैं, "शिष्य अपने गुरु से बड़ा नही होता। परंतु जो शिष्य सिद्ध होगा वह अपने गुरु के समान होगा"। नये नियम में इस मूल शब्द 'सिखाना', 'सीखना' और 'शिष्यता' के अलग-अलग रुप २७३ बार दिखाई पड़ते हैं।

शिष्य-गुरु, चेला-गुरु नवसिखिया-तज्ञ, इस प्रकार के रिश्तों की कल्पना को पुरातन काल और पहली शतब्दी के समय में सांस्कृतिक रुप में मान्यता दी जाती और समझा जाता था। अठारहवीं शताब्दी पूर्व बेबिलोन की हमूराबी कानून की तहत, यह जरुरी था के शिल्पकार अपनी कला में युवाओं को निपुण बनाएं। युवाओं के लिए व्यवसाय सीखने के लिये विश्वविद्यालय जाना नहीं पड़ता था; लेकिन तज्ञ व्यक्ति के हाथों के नीचे सीखना पडता था, जो एक सामान्य बात थी। एक बढ़ई, एक चर्मकार, बेकरी का काम सीखना, एक कलाकार, एक मच्छुवारा-यह सभी अपने अनुभवी व्यक्ति के चेले बनकर इन कामों को सीखते थे। विशेष रुप से डॉक्टरी प्रशिक्षण लेने के लिए नवसिखियों को (Apprentice) काम करके सीखाना पड़ता था। यूरोप में कई व्यावसायिकों के लिये मध्यम युगों तक यही व्यवस्था थी।

भारतीय समाज में गुरु शिष्य की संकल्पना आज भी प्रचलित है; इसलिये

पहली शताब्दी की तरह कलीसिया में शिष्यता सिखाना आसान है। दिल्ली में हमारे घर के करीब, हमारा एक मनपसंद हॉटेल हैं, जिसका मेनू कार्ड यह कहता है :

आपका मन जीतने की कोशिश में हम मसाला जंक्शन आपको भारत के बेहतरीन पकवान पेश करते हैं; जो भारतीय संस्कृती की तरह उमदा और भिन्न हैं, इसका पाकशास्त्र एक कला है, जो पिढ़ियों से माँ से बेटी, गुरु से शिष्य को दिया गया है।

हजारों वर्षों माताएँ आपनी बेटियों को खाना बनाना और परिवार का ध्यान रखना सिखाती आ रही है।

इस आदर्श का पौलूस ने भी तितूस २:४-५ में संदर्भ दिया है। यह सच्चाई कि हमारा समाज आज विद्रोहियों को सहने का आदि हो गया है। इसका अर्थ यह नहीं कि परमेश्वर के दृष्टीकोण बदल गए हैं। वह आज भी हमें सीखने और नम्र आत्मा रखने को कहता हैं।

एक विद्रोही की कहानी जो अधिनता की ओर मुड़ा

कुमार (जो उसका असली नाम नही है) बैंगलोर में रहता था। जवानी में वह विद्रोह से भरा था, उसका परिवार जो मौल्यवान बातें उसे सिखाना चाहता था वह उसे कभी स्विकार नहीं करता। और कामवासना के आनंद के खोज में लगा रहता। बस में वह श्वेता (उसका असली नाम नही) नामक एक महिला से मिला, और उन दोनों में कामुक सम्बन्ध बने। उसके परिवार के इच्छाओंके विरुध्द, उस स्त्री से लैंगिक सम्बन्ध के बाद कुमार ने उससे शादी कर ली।

विद्रोही पन की यह आत्मा उसे इस अनैतिक सम्बन्ध में ले गया जो शादी तक पहूँचा; और जल्द ही उनके बीच भयानक झगड़े होने लगे। काम की जगह पर कुमार दूसरी औरत के साथ प्रेम का स्वाँग रचने लगा। उसे कुमार के विवाहित होने का पता नही था और वह उसकी ओर आकर्षित होने लगी। आखिर में उसने उसे सच्चाई बताई। फिर उसने उस महिला को श्वेता से मिलाया और उसे धमकी दी कि "यदि तुम मुझे खुश नहीं करोगी तो मैं इस लड़की के साथ चला जाऊँगा।"

इसके बाद श्वेता गर्भवती हुई लेकिन कुमार बच्चा नहीं चाहता था। तब उसने उसे बच्चा गिराने को मनाया और श्वेता ने वही कीया। कुमार के पास

एक अच्छी नौकरी थी और परिवार में उसके जेब में भरपूर पैसा आता था इसके बावजूद उनके झगड़े बड़ते गए और गहरे होते गए। एक रात वह घर आया और उसने जो खाना बनाया उस से खुश ना था। उसने श्वेता को तमाचा मारा और कहा, "जब तक तुम मरोगी नही मुझे शांती नहीं मिलेगी।" और कुछ नाश्ता लाने वह बाहर चला गया।

जब वह घर लौटा तब कुछ जलने की बू आयी। पाँच फुट लंबे और चौड़े इस छोटेसे कमरे में उसने श्वेता को देखा जो बुरी तरह जल रही थी, उसने अपने ऊपर घासलेट उण्डेल लिया था। उसने आग बुझाने की कोशिश की लेकिन आग बढ़ती ही गई। वह १०० प्रतिशत जल गई फिर भी जीवित थी। नीराश और श्वेता के परिवार वाले उसे मार डालेंगे इस डर से कुमार ने उसकी साड़ी से अपने आपको पँखै से बांधकर लटकने का प्रयत्न किया। लेकिन असफल रहा। वह उसे लेकर रिक्षा में अस्पताल आया और रास्ते में इस मौके की तलाश में था कि किसी गाड़ी के सामने कुदकर अपनी जान देदे। जब वे अस्पताल पहुँचे तब वह कुछ मिनिटोंके लिए जिंदा थी, फिर मर गई।

दूसरे दिन अखबार में यह खबर छपी की कुमार ने अपनी पत्नी को जलाकर मार दिया। उसे और उसके पिता को जेल में डाला गया। ४ महिने तक वह जेल में यातना सहता रहा।

इस क्षण कुमार को अपने विद्रोहीपन की व्यर्थता समझ आई और वह परमेश्वर को ढूँढने लगा। बैंगलोर कलीसिया का एक शिष्य उससे मिलने जेल गया। वह पहले भी उससे मिला था लेकिन कुमार को कोई दिलचसपी नहीं थी। जेल में अकेले पड़े कुमार को यह समझ आई कि विक्रम उसका सच्चा मित्र है। जमानत पर छूटने के बाद वह कलीसिया आया और पवित्र शास्त्र का अध्ययन करने लगा। उसने अपने विद्रहों को देखा उसने अपने को खोया हुआ देखा, और वह अचंभित हुआ के अब भी आशा थी- यीशु उसे माफ कर सकते थे।

अपने पश्चाताप और बप्तिस्मा के बाद कुमार अपनी पत्नी के परिवार से मिला। उसने अपने बुरे बर्ताव के लिये उनसे क्षमा माँगी। (हालांकि उसने उसकी पत्नी का खून नही किया था, लेकिन आत्महत्या करने को उकसाया था।) उन्होंने पहले उसका बहुत विरोध किया लेकिन जब उन्होंन्हे देखा कि वह खरा था, तब उसे क्षमा किया । अंत में उन्होंने उस पर लगाए आरोप को

वापस लिया और न्यायालय से वो निर्दोष रिहा हुआ।

कई वर्षों तक मसीही जीवन जीने के बाद कुमार ने शिल्पा (असली नाम नही) से शादी की और अब उनके एक बेटा भी है। अब वह पूरे समय गरिबों की मदद करने का काम करता है, और उसके जीवन में एक भी दिन ऐसा नही जाता जब वह यीशुने जो उसके लिये किया; इसलिए यीशु को धन्यवाद न करे। कुमार एक उदाहरण है जो हमें यह याद करने में मदद करता हैं कि - बदलने में अभी ज्यादा देर नहीं हुई।

चुनाव का समय

दो हजार साल के पहले जब भीड़ को अपना एक चुनाव करना था, तब उन्होंने एक सशस्त्र विद्रोही बरअब्बा को जीने और उद्धारकरता मसीह को मरने का चुनाव किया। बरअब्बा एक आत्मविश्वासी और शक्तिशाली व्यक्ती था, और उसमें कुछ ऐसी बात थी जो लोगों को अच्छी लगी। यीशू एक ऐसे व्यक्ती थे जिनके पास अनंत शक्ती और इश्वरीय आत्मविश्वास था लेकिन साथ ही वे नम्र और दीन भी थे। और इन्ही को भीड़ ने क्रूस पर चढ़ाने के लिए चुना।

हम आपना चुनाव खुद कर सकते हैं। हम बरअब्बा की तरह विद्रोही बनने या यीशु की तरह नम्र और अधिन रहनेका चुनाव कर सकते है। हम पिलातुस के पैरों के पास खड़े होकर किसके पिछे चलें इसका चुनाव कर सकते हैं। दो हजार वर्ष पहले उस दिन लोगों ने बरआब्बा को चुना। आप किसे चुनेंगे?

मन के लिए

१) आप बड़े होते वक्त कितने विद्रोही थे? क्या विद्रोह आज भी आपके लिये कुछ मायने रखता है?

२) जब दूसरे आपकी गलतियाँ बताते हैं तो क्या आप अपने आप का बचाव करते हैं? क्या आप बाहर से मुस्कुराते लेकिन मन में विद्रोह की भावना रखते हैं? या आप इस सलाह को नम्र आत्मा से लेते हैं?

३) क्या आपके जीवन में ऐसा कोई हैं जो धार्मिकता में आपकी मदद करता हैं, और उनसे आपका गुरु-शिष्य जैसा शिष्यता का रिश्ता है? क्या आपको अपने जीवन में इस प्रकार के रिश्ते की जरुरत महसूस होती है?

२२

कुरेन का शिमौन

परमेश्वर का चुना हुआ

शहर से बाहर जाते समय उन्हें शिमौन नामक एक कुरेनी मनुष्य मिला। उन्होंने उसे बेगार में पकड़ा कि वह यीशु का क्रूस उठाकर ले चले।

मत्ती २७:३२

कुरेन का शिमौन एक साधारण व्यक्ति था। वह अपने काम में लगा था और अचानक यीशु उसपर आ गिरे। वह मसीह पर लड़खड़ाया ठीक उसी तरह जैसे मती १३:४४ में वह मनुष्य खेत में छिपा हुआ धन पाकर लड़खड़ाया था। जब सैनिकों ने शिमैन को डाँटा उसने शायद दूसरी ओर देखने की कोशिश की ताकि इस परिस्थिती से बच जाए। लेकिन वो आवाज़े उसके जीवन में परमेश्वर कि पुकार थी, जो उसे क्रुस उठाने के लिए कह रही थी। जब उसने यीशु की आँखो में देखा और उनका भारी बोझा उठाया, तब शायद वह अपने ही जीवन के लिये डर गया। और फिर भी एक कितने महान सम्मान का मौका उसे दिया गया था - कि इस पृथ्वी पर उद्धारकर्ता के आखरी कदमों के साथ - साथ हो ले।

उस समय यीशु के आसपास दूसरे लोग भी थे - लेकिन, शिमौन की तरह, कुछ ही थे जो उनके आँखों के सामने घट रहें इस अनंत घटना का महत्व समझ पाए। शुरु में अपने मिनिस्ट्री में, यीशु यरुशलेम, के अँधेपन के लिए रोए, और यह कहा," क्या ही अच्छा होता, कि तू ,हाँ, तू ही, आज के दिन शांती की बातें जानता। पंरतु अब वे तेरी आँखों से छिप गई हैं" (लूका १९:४२)

शिमौन को परमेश्वर ने चुना था। जब प्रेरित २२:१४ में हनन्याह, शाऊल को मिला तो उसने परमेश्वर के कहे वही शब्द दौहराए : "हमारे पूर्वजों के परमेश्वरने तुझे इसलिये ठहराया हैं कि तू उसकी इच्छा को जाने। २ थिस्सलुनीकियों २:१३ में पौलूस ने भी हमें यही सीखाया कि, हमें भी परमेश्वर ने इन लोगों की तरह चुना है।

मती २७:२७:३३ में हमने शिमौन का यीशु के साथ हुए सामने के बारें में पढ़ा। वह दूसरी ओर से शहर में आ रहा था (मरकूस १५:२१, लूका २३:२६)। संभव था कि वह एक यहूदी तिर्थयात्री था जो उत्तरी आफ्रिका से फसह के पर्व के लिए यरुशलेम आया था। क्योंकि इस पर्व के समय हजारों लोग जो यरुशलेम से बाहर रहते थे यहाँ तिर्थ यात्रा के लिये आते और शहर में रहने की जगह उपलब्ध न होने के कारण यरुशलेम के लोग इन यात्रियो के लिए अपने घर के दरवाजे खोल देते। जब वह इस विशेष पर्व के लिए इस पवित्र शहर में आया तब उसने शायद यह कभी भी न सोचा होगा कि उसे जबर्दस्ती क्रूस पर चढ़ाने के इस कार्य का एक हिस्सा बनना पड़ेगा। और रोमन सैनिकों को आप "ना" नहीं कह सकते। लेकिन सचमुच में वह परमेश्वर था जिसने यह तय किया था कि शिमौन उनके पुत्र के साथ चलेगा और उनका क्रूस उठाएगा। परमेश्वर चाहते हैं कि हम सभी उनके पुत्र के साथ चलें और क्रूस उठाएं - अपने स्वयं का। लूका ९:२३ में यीशु स्पष्ट रुप से कहते हैं, "यदि कोई मेंरे पिछे आना चाहे तो वह अपने आपसे इन्कार करे और प्रतिदिन आपना क्रूस उठाए हुए मरे पिछे हो ले।"

उस सुबह येरुशलेम की थकी हुई सडकोंपर, शिमौन ने परमेश्वर के पुत्र के पसीने को सूँघा, उनके लहू को देखा और घृणा को अपने चारों और घेरा बनाए महसूस किया। क्रूस उठाना उस समय भी लोकप्रिय नहीं था, और आज भी नही। लेकिन मसीही संदेश का यह एक अंतर्तम भाग हैं। लोग याबस की प्रार्थना चाहते है। (मेंरे देश को बढ़ा..... और मुझे पीड़ित होने से बचा"- १ इतिहास ४:९-१०) बजाए इसके कि गतसेमने में यीशु के लिये प्रार्थना को चाहें ("जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नही परंतु जैसा तू चाहता हैं वैसा ही हो"-मत्ती २६:३९)।

चाहे हम अपनी कलीसिया को कितना भी आकर्षक बनाए हमें ये नही भूलना चाहिए की हमारे सबसे पहले के भाईयों और बहनों को कई वर्षों तक सबसे छिपकर मिलना पड़ता, अपनी धन संपत्ती और कभी कभी उस विश्वास के लिए जिसका उन्होंने अंगिकार किया अपना प्राण भी खोना पड़ता था। यीशु के शिक्षण नही बदले, लेकिन सामाजिक अपेक्षाएँ बहुत बदल गयी हैं।

हम में से हर एक को क्रूस उठाने के लिए चुना गया है। इस बात का असर

प्रतिदिन हमारे निर्णय पर पड़ना चाहिए। जब हम पुराने मसीह हो जाते हैं तब हमारी आशिषों के बजाए हमारे त्याग को गिनने के लिए हम लालायित हो जाते हैं। क्रूस उठाने का अर्थ हैं विश्वास का चुनाव और प्रति दिन त्याग। क्या आप अब भी यह कर रहे हो? जीवन के निर्णयों के बारे में क्या? क्या आप क्रूस की ओर देखकर यह निर्णय बनाते हो? या फिर आप अपने मित्रों और परिवार से बातें करके या पुस्तकें और मासिक पढ़कर निर्णय बनाते? यीशु मेंरे बारे में क्या सोचेंगे? इस प्रश्न पर आप कितना विचार करते हो?

यीशु ने स्वयं को क्रूस पर दे दिया। वह बेतहाशा थक गए थे फिर भी उन्होंने हार न मानी। हम जिसकी कल्पना भी नहीं कर सकते उससे कहीं बड़कर दर्द उन्होंने सहा, लेकिन शिकायत नही की। उन्होंने कोई धमकी नहीं दी, कोई शिकायत नहीं की, हर कदम पर उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास रखने का चुनाव किया (१ पतरस २:२३)।

परमेश्वर के अनुग्रह को देखने के लिए चुना हुआ

लूका २३:२६-३४ में हमने यीशु के अति पीड़ादायक दृश्यों को देखा तब भी इस यातना में उन्होंने उन स्त्रियों को अपने लिये रोने से मना किया और उन्हें स्वयं के लिए और अपने बच्चों के लिये रोने को कहा। उन्होंने आत्मग्लानी महसूस नहीं किया। वे उनके उद्धार की ओर केंद्रीत थे। आत्मग्लानी में गिरना उनके लिए कितना आसान था। शिमौन यीशु के असाधारण मन और पूरे अनुग्रहको देखने के लिये वहीं एक गवाह की तरह उपस्थित थे। यदि वह गोलगोत्था के पास पहूँचने के बाद यीशु के करीब रहता तो यीशु को यह कहते सुनता, "हे पिता, इन्हे क्षमा कर" (व-३४)। यीशुने अविश्वनीय अनुग्रह दिखाया। शिमौन को, आपको और मुझे हम सभी को यह देखने के लिये चुना गया था।

हम सभी को अनुग्रह की आवश्यकता हैं। हम सभी को यह गलतीयाँ करते और पाप करते हैं। धीरज में संघर्ष मेंरा एक पापमय स्वभाव हैं। मैं यीशु की तरह नही हूँ, जो हमेंशा रुकावट से बढिया रुप से निपटते थे, लेकिन जब लोग मेंरे काम और मेंरी योजना में बाधा डालते हैं तब मैं निर्दयी बन जाता हूँ। कुछ महिनों पहले एक कुरियर वाले ने मेंरे घर की घंटी बजाई। उससे पहले जिसने दरवजा खटखटाया था मैं उस पर धीरज खो बैठा था, लेकिन अब नम्र होना ठान लिया था। लेकिन यह युवक मुझे पेन थमाने में बहूत धिमा था।

सूचना लिखने में उसे काफी समय लग रहा था। मेंरे मन में उठते गुस्से को मैं महसूस करने लगा। लेकिन तब मैंने देखा - और देखा कि उसके दोनों हाथों में केवल एक उँगली थी। उसे पेन पकड़ने में संघर्ष करना पड़ता था। कोई अचरज़ की बात नहीं थी।

मुझे अपने विचारों पर शर्म आया, और मैंने निश्चय किया कि मैं धिरजवंत रहुँगा। लेकिन मैं उसे यीशु के बारे में न बता सका। बाद में मैंने मेरी गलती को जाना और अगले मौके के लिये प्रार्थना की। परमेश्वर की कृपा से फिर एक बार इस कुरिअर कंपनीने (जिसने हमें उस दिन के बाद से एक भी पार्सल नही दिया था।) उसी युवक को हमारे घर भेजा। इस बार मैंने निश्चय किया कि मैं उसे यीशु के बारे में बताउँगा; उसने दिलचस्पी दिखाई। वह कलीसिया आया और मेंरे और दूसरों के साथ पवित्र शास्त्र अध्ययन किया। कितने ही बार मैं धिरज के लिये संघर्ष करता हूँ - मैं वह व्यक्ति हूँ जिसे अनुग्रह की अत्यंत आवश्यकता हैं। मैं बहुत कृतज्ञ हूँ के उसके अनुग्रह ने मुझे इस योग्य बनाया कि उसके व्दारा भेजे गये व्यक्ति से मैं अपना विश्वास बाँट सकूँ।

शायद एक अत्यंत शक्तिशाली बात जो हाल ही में मैंने क्रूस के बारे में देखा कि यीशु ने सिर्फ मेंरे पाप (जो बहूत हैं) हि नही सहे लेकिन उनके पाप भी सहे जिन्होंने मुझे चोट पहुँचाई। उनके पापों को वह क्रूस पर ले जाता हैं। जब हमें अनुग्रह की याद आती हैं जो हमने पाया है तो दूसरों के पापों को देखकर उनपर अनुग्रह करना हमारे लिए आसान हो जाता हैं। संसार को अनुग्रह अच्छा नही लगता। जब भीड़ को किसी एक व्यक्ति का चुनाव करने को कहा तब उन्होंने अनुग्रह कारी (यीशु) का चुनाव नहीं किया लेकिन विद्रोही (बरअब्बा) का चुनाव किया। वे उसकी आज़ादी के लिए चिल्लाए, विद्रोही लोकप्रिय हैं। अनुग्रह नही- कम से कम तब तो नही जब लोगों को उसे लेना नही देना पड़ता है।

हम सभी को परमेश्वर का अनुग्रह देखने के लिए चुना गया है। जब हमें चोट पहूँचाई जाती हैं तब इसे खोना आसान है (इब्रानिया १२:१४-१५)। लेकिन वह वहाँ हैं - वहाँ हमारे लिये और दुसरों के लिये है। जब हम इसे देखेंगे "हमारी आँखें प्रकाशमान हो जाएंगी। (मत्ती ६:२२) और हम वचन का प्रचार करने और अपना विश्वास बाँटने के लिये उतावले हो जाएँगे। क्या आप उसे देख सकते है? अपने गहरे अंधकारमय समय में यीशु ने तरस खाने के लिये लोगों को जमा नही किया, लेकिन लगातार देते रहने का चुनाव

किया..... हमारे मन के लिए बहुत चुनौतीपूर्ण है।

यीशु ने कहा, "शरीर का दिया आँख है, इसलिए यदि तेरी आँख निर्मल हो तो तेरा सारा शरीर भी प्रकाशमय होगा। परंतु यदि तेरी आँख बुरी हो तो सारा शरीर भी अंधकारमय होगा" (मत्ती ६ : २२-२३)। क्या आपका दिया जल रहा है? आपको क्या दिखाई दे रहा है? क्या आप लोगों के पाप देख रहे हैं या परमेश्वर का अनुग्रह? एक आपके मन और जीवन को अंधकार से भर देगा और दूसरा रौशनी से।

दुनिया को बदलने के लिये चुना गया

मरकूस १५:२१ में एक कुतुहलपूर्ण बात का संदर्भ है। वहाँ शिमौन की पहचान "सिकंदर और रुफस के पिता "के रुप में किया गया हैं। इस किताब में और कहीं भी इन चरित्रों का उल्लेख नही हैं सो संभव है कि, इस किताब का पानेवाला उन्हे जानता था। दूसरी शताब्दी का शिष्य पापियास के अनुसार जिसने १३० ए.डी. के करीब लिखा, मरकूस की किताब शायद रोमि कलीसिया के लिये लिखी गयी थी। मरकूस पतरस का भाषांतर करनेवाला दुभाशिया था, उसका "दाहिना हाथ था"। उसने रुफस और सिकंदर का उल्लेख क्यों किया होगा? इसका कारण वही था जैसा हम किसी विशेष गुट से बातें करते या लिखते वक्त उनके लोगों का उल्लेख करते हैं। शिष्य उन्हें जानते थे .... वे भी मसिही थे। रोमियों १६:१३ उनके बारे में बताता है, "रुफस जो प्रभू में चुना हुआ है" और "उसकी माता जो मेरी भी माँ है"।

पौलूस के कठिनतम समयों में जब कई उसे छोड़कर चले गये तब रुफस की माँ शिमौन की पत्नी, एक बहन उसके साथ वहाँ थे। अपने पती के समान वह भी इस बात को जानती थी कि उस व्यक्ति के साथ कैसे डंटे रहना जिसे सभी छोड़कर भाग जाते हैं। तो यह संभव महसूस होता हैं के उद्धारकर्ता का सामना करने के बाद शिमौन एक विश्वासी बना और उसके विश्वास में उसके परिवार पर भी दबाव डाला।

शुरुवाती कलीसिया की परंपरा में रुफस और सिकंदर एक मिशनरी का स्थान और सिकंदर को आफ्रिका के पहले बिशप का स्थान दिया जाता है। इस अनुमान से यह सही है, हम यह देखते है कि शिमौन का प्रभाव उसके परिवार से बहूत दूर तक पड़ा था। प्रेरित २ के वचनों से हम यह जान पाते हैं कि वहाँ कुरेन के लोग भी थे। १२० में से किसी को उन तक पहुँचना था। किसे?

शिमौन ही एक तर्कयुक्त सदस्य है, ठीक उसी तरह जैसे हमारी कलीसिया में जब कोई मेहमान किसी विशेष स्थान से आता है, तब हम उसे उस स्थान में रहने वाले लोगों से उनका परिचय कराते हैं। यह स्वाभाविक है। गोलगोत्था के मार्ग पर शिमौन पूरी तरह बराबर यीशु के साथ था। शुरुवाती कलीसिया में उसने निश्चय ही जो देखा और सुना वह दूसरों के साथ बाँटा।

यूहन्ना जो क्रूस के पैरों के पास बैठा था, यीशु के कहे इस बात की, "हे पिता इन्हें क्षमा कर क्योंकि ये नही जानते कि क्या कर रहे हैं"को दूसरों के साथ जरुर बाँटा होगा। और प्रेरित ७ में युवा शिष्य स्तिफनुस ने; जब वह मरा तब यीशु के उदाहरण को सही होने की चेष्टा करते हुए कहा ,"हे प्रभू यह पाप उन पर मत लगाना" (व.५९)।

शायद यह शब्द स्तिफनुस ने यूहन्ना और कुरेन के शिमौन, और मरियम मगदलीनी और यीशु की माता मरियम से सुना होगा। जिस तरह स्तिफनुस मरा उसकी मौत ने तारसस के शाऊल पर ऐसा प्रभाव डाला जिसे वह कभी भुला न पाया। क्रूस पर यीशु के साथ घटि घटनाओं को शिमौन और दूसरे लोगों ने देखा जो शुरुवाती कलीसिया के मजबूत विश्वाास का कारण बना।

बाद में प्रेरित ११:१९-२६ में हम "साईप्रस और कुरेन " के लोगों के बारे में पढ़ते हैं जिन्होने अंताकिया में बसे अन्य जातियों के बीच प्रचार किया। निश्चय ही इन लोगों पर शिमौन का प्रभाव पड़ा था। शायद वह उनमें से एक था। प्रेरित १३:१-२ में अंताकिया के मुख्य अगुवों में एक था कुरेन का लुसयुस। शिमौन के जीवन ने सचमुच उस दुनिया को बदल दिया जहाँ वह रहता था। यह बहुत प्रेरणादायक है। परमेश्वर के व्दारा सजाया हुआ उसका एक भाग्य था जो पहले ही हमारे करने के लिए अच्छे काम तैयार रखता है (इफि २:८-१०)।

क्या आप अपने भाग्य को जी रहे हो? क्या आप उसको पा रहे हो? हम सभी पापी हैं। लेकिन यही वो बरतन हैं जिसका उपयोग परमेश्वर कर सकते हैं। एक टुटा हुआ बरतन जो उसकी महिमा को उजागर करता हैं (२ कुरु.४ : ७-१२) । ठीक कुरेन के शिमौन की तरह।

दिव्या की कहानी

शिमौन की तरह परमेश्वर ने दिव्या को ऐसी परिस्थिती में डाला जहाँ वह उसके लोगों का जिवन करीब से देख सकती थी। वह उसी मार्ग पर रहती थी

जहाँ दूसरे कुछ शिष्य भी रहते थे और जब वे उसके घर के सामने से गुजरते तब प्रतिदिन वो उनके आनंद को देखती थी। उन्होंने उससे बात की और उसे कलीसिया में आने का आमंत्रण दिया और उसने जाना की वह यीशु ही थे जिसकी प्रतिक्षा वह अपनी सारी जिंदगी से कर रही थी। कई वर्षो तक वह एक गंभीर हृदयरोग से त्रस्त थी और हमेशा अपने जीवन का अर्थ जानना चाहती। उसकी बहन भी हृदय के इसी रोग से मृत्यू हुई थी और सारा परिवार दु:ख में डूब गया था। दिव्या ने अपने दर्द और आसुओं से परमेश्वर को पाया था।

एक मसीही के रुप में दिव्या दूसरों की सेवा और प्रोत्साहन करने में बहुत संकल्पित थी। वह जानती थी कि वह कुछ फर्क ला सकती थी, एक समय में एक आत्मा । हालांकि की वह बीमार थी, फिर भी वो जहाँ भी जाती अपना विश्वाास बाँटती थी। उसके व्दारा सुने वचनोंसे कई महिला मसीही बनी। एक बार अस्पताल में बहुत ही दर्द के समय वह एक युवा स्त्री लिल्ली से मिली जो उसके खुषमीजाज़ी से प्रभावित हुई और कलीसिया आई। कुछ समय के लिए उसने पवित्र शास्त्र का अध्ययन किया लेकिन मसीही बनने के लिए कभी भी निर्णय न बना सकी। फिर शिष्यों से उसका संपर्क टूट गया।

सन २००४ में दिव्या की तब्बीयत अधिक बिगड़ गयी। डॉक्टरोंने ऑपरेशन की सलाह दि जिससे उसकी स्थिती बहुत सुधर सकती थी। कई आर्थिक चुनौती के बावजुद भारत के शिष्यों और कुछ यु. एस. के शिष्यों ने भी पूरी सहायता की और ऑपरेशन संभव हुआ। बहुत प्रार्थना और उपवास के बाद उसका ऑपरेशन हुआ, जो सफल महसुस हुआ। दिव्या ठीक हो रही थी। लेकिन अचानक सभी संतों की प्रार्थना और डॉक्टरों की कोशिश के बावजुद हालात बहुत बिगड़ गए। वह हमें छोड़कर यीशु के पास गई, जो उसके हर एक आँसू पौंछ रहे हैं (प्र. व. ७:१७)।

इस के कुछ सप्ताह के पश्चात परमेश्वर ने लिल्ली के मन को हिलाया और उसने शिष्यों से संपर्क किया। जब वह कलीसिया आई तो दिव्या को ढूँढने लगी, जिसने उसके जीवन में इतना बदलाव लाया था। जब उसे पता चला कि दिव्या मर चुकी हैं उसे गहरा सदमा पहुँचा और वह दृढ़ संकल्प से पवित्र शास्त्र अध्ययन करने लगी।उसने अपना जीवन यीशु को सौंपने का निर्णय बनाया और उसने बाप्तिस्मा लिया। कब्र से भी दिव्या का विश्वास देने का काम कर रही हैं। शिमौन की तरह उसका भी एक विश्वास था, जिसने संसार को बदल दिया। वह परमेश्वर की चुनी हुई थी और परमेश्वर के लिये उसने उनके चुनाव को स्विकार किया।

हम परमेश्वर के चुने हुए हैं

हमारे जाने के बाद आपके और हमारे बारे मैं क्या लिखा जाएगा? हमें किस लिए याद किया जाएगा? हमारी खूबसूरती? हमारी उपलब्धियाँ? हमारा परिवार या शायद कुछ सबसे अधिक महत्वपूर्ण - हमारा अनंत प्रभाव और परमेंश्वर से हमारा रिश्ता?

मन के लिए

१) क्या आपने कभी यह सोचा कि किसी दुर्घटना से आप का कुछ बुरा हुआ है? क्या अब आप देख सकते हैं कि उन अनुभव में परमेश्वर का क्या मकसद था, जैसा शिमौन के लिये उसके अनपेक्षित अनुभव में था?

२) वह कौनसे क्रूस हैं जिन्हें उठाने के लिए आप को मजबूर किया गया? अपने अनुभव के व्दारा आप ने किस तरह परमेश्वर के अनुग्रह को देखा?

३) शिमौन का उपयोग उस फसल को काटने में जहाँ वह पहुँच सकता था, परमेश्वर की एक विशेष योजना थी। वह कौनसी फसल है, कुछ लोग हैं; जिनतक पहुँचने के लिये विशेष रुप से परमेश्वरने आपका चुनाव किया है?

२३

हेरोदेस

अपने भूतकाल से पीड़ित

राजा हेरोदेस ने यीशु की चर्चा सुनी, क्योंकि यीशु का नाम फैल गया था। कुछ लोग कहते थे "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला मरे हुओं में से जी उठे हैं इसीलीए उन से यह सामर्थ के काम हो रहे हैं।"दूसरे लोगों ने कहा,"प्राचीनकाल के नबियों के समान वह एक नबी हैं। किन्तु हेरोदेस ने जब यह सुना तो उसने कहा,"जिस यूहन्ना का सिर मैं ने कटवाया था, वही जी उठा हैं।"

मरकुस ६:१४-१६

हेरोदेस एक ऐसा व्यक्ति था जिसका पीच्छा उसका बीता हुआ कल कर रहा था। जब उसने यीशु के चमत्कारों के बारे में सुना, तब उसका मन दौडने लगा। यूहन्ना बपतिस्मादाता के साथ उसने जो किया था उस याद से वह पीड़ित हो रहा था। वह निश्चित था कि वह यीशु के रुप में लौट आया हैं। उसने भरसक प्रयत्न किया, पर इस बारे में सोचना बन्द न कर पाया। जब वह जीवित था, तब यूहन्ना ने हेरोदेस के पापों का प्रचार किया। और अब कब्र से, उसके प्रचार की आवाज और भी बड़ गई थी, जो हेरोदेस के सिर में लगातार एक नगाड़े की तरह बज रहा था।

नया नीयम में हेरोदेस के नाम का संदर्भ एकतालिस बार आया है। अलग - अलग हेरोदेस के बारें में अलग - अलग; फर्क बताना बहुत गड़बड़ी की बात है, क्योंकि ये सभी एक विशाल पेचीदा परिवार के रिश्तों के जाल से आए अलग अलग शासक हैं जिनका एक ही नाम था। नया नीयम का पहला हेरोदेस था महान हेरोदेस जिसने करीब ४१ ई.पू.से.ई.पू. तक शासन किया। वह मरकुस १ में उल्लेख किये हेरोदेस का पिता था। मत्ती २ का हेरोदेस भी वही था, जिसने बेतलेहेम के बच्चों की हत्या करवाई।

हेरोदेस महान के परिवार के दूसरे प्रसिध्द सदस्य थे, हेरोदेस फिलीप प्रथम, सलोमी का पिता जिसका उल्लेख मत्ती १४:३, मरकूस ६:१७ और लूका ३:१९ में फिलीप्पूस कहकर किया गया हैं। उसके पुत्र अरखिलाऊस ने यहूदा

प्रदेश, समेंरिया और इदुमिया पर राज्य किया और उसका उल्लेख मत्ती २:२२ में है। दूसरा पूत्र हेरोदेस फिलिपुस (फिलीप्पुस नाम से भी जाना जाता है) का उल्लेख लूका ३:१ में है। आखरी हेरोदेस, हेरोदेयस, अग्रीपा का उल्लेख प्रेरित १२ में हैं जो हेरोदेस महान के पुत्र अरीस्तोबुलुस जिसकी हत्या उसने की थी उसका पुत्र था। इस हेरोदेस अग्रीपा का एक पुत्र अग्रीपा व्दीतीय था, जिसने प्रेरीत २५-२६ में पौलूस से पूच्छताच्छ किया था। साथ ही उसकी दो बेटियाँ बिरनीके (प्रेरित २५:२६) और दृसील्ला (जिसने राज्यपाल फिलीक्स से विवाह किया, प्रेरित २४) यह पारिवारिक वृक्ष कैसा हैं?

मरकूस ६ का हेरोदेस जिसने यूहन्ना बप्तिस्मा दाता से बातचित किया, उसे समझने के लिए हमें उसके पालनपोषण के बारे में जानना जरुरी है। उसका पिता, हेरोदेस महान, एक अद्‌भूत भवन निर्माता था (Builder) जिसकी जिम्मेंदारी थी कैसारिया का निर्माण (जिसके प्रभावशाली खंडहर आज भी खड़े हैं) और यरुशलेम के महान मंदिर के निर्माण का जिम्मेंदार भी वही है। लेकिन वह भी शक्ती का भूखा मनुष्य था जो अपने आप का बचाव करने में किसी भी हद तक जा सकता था। उसने अपने पहले पुत्र (पहली पत्नी डॉरीस से) अंतिपातेर की हत्या की।

उसकी दूसरी पत्नी मरियमनी के दो पुत्र थे सिकंदर और ॲरीस्टोबूलुस। उसने उन दोनों की हत्या कर दी क्योंकि उसे लगा वे उसे धमका रहे या उसके अधिकार पर सवाल उठा रहे हैं। हॅरोदियास ॲरीस्टोबूलुस की बेटी थी, जिसने बाद में हॅरोदेस महान के पुत्र हॅरोदेस, फिलीप्पुस प्रथम से विवाह किया। बाद में उसे छोड़कर उसने हेरोदेस (फिर मरकूस ६ का एक चरित्र जिसके बारें में हम पढ़ रहें है) से विवाह किया। हेरोदेस महान के पागल संदेहो ने एक यहूदी कहावत को जन्म दिया, "हेरोदेस का सूअर बनना हेरोदेस का पुत्र बनने से सुरक्षित है।

इस प्रकार के वातावरण में बड़ा होने के कारण हेरोदेस को जीवित रहने के लिये अपने ह्रदय को कठोर करना जरुरी था। जब भी मौके सामने आए उसे पकड़ लेना उसने सीख लिया और उस पर उसे कोई पच्छातावा भी नहीं होता और वह बहुत चालबाजी से यह करता। वह किस असुरक्षितता में जीया यह अनुमान लगाना कठीन है, पिता व्दारा ही बच्चों की हत्या देखकर तो यह और भी कठीन हो जाता है।

एक बार हेरोदेस रोम में अपने भाई हेरोदेस फिलीप्पुस (जिसका विवाह उनकी भतीजी हेरोदियास से हुआ था) से मिलने गया। वहाँ उसने उसे बहकाना आरंभ किया (और शायद इसके विपरित हुआ हो) और वह अपने पती को छोड़ अपनी बेटी सलोमी को लेकर उसके साथ चल पड़ी। इसी पाप के विरुध्द में यूहन्ना ने प्रचार किया (मरकूस ६:१८)।

हेरोदियास यूहन्ना से बैर करती थी क्योंकि उसके पाप को उसने सामने लाया था लेकिन हेरोदेस का रवैया अलग था - वह यूहन्ना को धर्मी और पवित्र पुरुष जानकर उससे डरता था (मरकूस ६:२०)। यूहन्ना की बातें वह आनंन्द से सुनता था (व:२०) लेकिन अपनी पत्नी के दबाव में आकर उसने यूहन्ना को पकड़कर जेल में डाल दिया (मरकूस ६:१७)। यह बन्दिगृह हेरोदेस के मखारेअस किले में था, जो एक उँचे टीले पर था जहाँ से लाल महासागर आसानी से दिखाई देता था। वह एक एकांत और अन्धकारमय जगह थी, जिसके खण्डहर आज भी देखे जा सकते हैं। इस विरान जगह पर हेरोदेस ने अपने जन्मदिन की पार्टी मनाया - एक रात जो हमेंशा उसका पिछा करता रहेगा। वही रात थी, और उसकी वह प्रतिक्रिया, जिसने उसके चुनावों का निर्णय किया और उनसे उसका भविष्य तय हुआ। ऐसे ही चुनाव हमारे जीवन में भी आते है।

गड़बड़ी या स्पष्ट

आज कोई भी अपने बच्चे का नाम हेरोदेस नहीं रखता। तो भी हेरोदेस को अपने पाप बड़े नहीं लगे, इसी तरह हमें भी नही लगते। मरकूस ६:२६ में हमें बताया गया कि यूहना को जान से मारने के विचार से वह बहुत दु:खी हुआ। लूका ९:७-९ में हम देखते हैं कि यीशु के चमत्कारों को सुनकर वह घबरा गया। लूका २३:७-९ में हम देखते हैं कि अन्ततः यीशु से मिलने का उसे एक मौका मिला। उसने आशा की कि वह यीशु को एक चमत्कार करते हूए देखेगा, और यीशु से कई प्रश्न किये लेकिन एक का भी उत्तर उसे नहीं मिला। हेरोदेस के जीवन में गहरी धार्मिक गड़बड़ीयाँ थीं।

अपने इस गड़बड़ी (कन्फ्युजन) को वह एक साधारण बात कहकर मिटा सकता था, "जो मैंने किया वह गलत था।" मेरे भाई की पत्नी से विवाह करना गलत था। यूहन्ना को बन्दी बनाना गलत था। उसकी हत्या करना गलत था। हेरोदेस के जीवन में सच्चाई का मार्ग स्पष्ट था, लेकिन कठीन।

क्योंकि वह सच्चाई का सामना नहीं कर सकता था, इसलिये हेरोदेस असंमजस में था। वह परमेश्वर से अपने लिये क्षमा माँगने में या लोगों के लिये क्षमा मांगने में असमर्थ था क्योंकि वह अपनी गलतियों के प्रति सही में निश्चित नहीं था। यूहन्ना को सूनने में उसे आनंन्द आता था। वह यीशु से मिलना चाहता था। लेकिन वह आज्ञा मानने के लिए तैयार न था। हेरोदेस दूसरों के धार्मिक काम को देखकर आभारी महसूस करता था। यीशु को देखने और एक चमत्कार का गवाह बनने में उसकी दिलचस्पी थी (लूका २३:८), परमेश्वर का अनुभव करने में दिलचस्पी रखता था, लेकिन पवित्र जिवन जीने की दिलचस्पी नहीं।

आज हजारों लोगों की उपस्थिती में लिये जाने वाले सुसमाचार के मिर्टींग और टी.वी. के धार्मिक कार्यक्रम हमें यही अवसर देते हैं - धार्मिक अनुभव का एक अवसर, शायद भावुक अवसर लेकिन वैयक्तिक जवाब देही और पश्चाताप की कोई अपेक्षा के बिना। इन बातों का निश्चय ही मूल्य हैं लेकिन सिर्फ तब ही जब वे हमारे जीवन की सच्चाईयों को हमारे मन में स्पष्ट करें तब।

आज क्या आपके विचारों पर गड़बड़ी (कन्फ्युजन) राज्य कर रहा है? या क्या आप अपने पापों को सही बताने के लिये संघर्ष कर रहे और झूज़ रहे हैं - इन्हें कबूल कर क्षमा मांगना नहीं चाहते?हेरोदेस भी इसी दुविधा में था और गलत चुनाव कर बैठा।

उत्तम या कटु?

हेरोदेस और हेरोदियास दोनों को ही अपने जीवन में अनेक चोट और नीराशाएँ देखनी पड़ी थीं। इस पुस्तक में कहीं हमने कहा है कि यातनाओं के प्रति हमारा रवैया इस बात को तय करता है कि हम कौन हैं, और हम क्या बनेंगे। मरकूस ६:१९ बताता है कि हेरोदियास के मन में यूहन्ना के लिये एक बैर पनप रहा था, उसके शब्दों ने उसे चोट पहुँचाई थी, जिसने सब के सामने उसको अपमानित किया था। उसे क्षमा करने के बजाए, अपने कडुवाहट को उसने और भड़काया। हम भी अपने चोटों के बारे में बार - बार बात करके यह कर सकते हैं, इसे हजारों बार बाहर नीकालकर और हर बार उस व्यक्ति के बारे में जिसने हमें चोट पहुँचाई एक नयी नकारात्म बात सुनते रह कर। हेरोदियास यूहन्ना से बदला लेने के मौके की ताक में थी। उसने अपने दर्द या

उसके कहे सच को, उसे उत्तम बनाने का अवसर नहीं दिया।

हेरोदेस जैसे हमने पहले कहा, अपने जीवन में अनेक यातनाएँ सही थीं। लेकिन इसने उसे एक उत्तम व्यक्ति नहीं बनाया। बजाए इसके वह क्रूर और निर्दयी बना। लूका २३:८-१५ में हेरोदेस भी क्रूस के आस-पास खड़े लोगो में एक था जब वह यीशु से मिला और इस अवसर को पाने से काफी हर्षित था (व.८)। जैसे महायाजकों और धर्मवृध्दों ने यीशु पर दोष लगाना आरंभ किया हेरोदेस भी उनमें शामिल हो गया। वचन ११ में वह कहता हैं," तब हेरोदेस और उसके सिपाहियों ने यीशु का अपमान किया और उनका मजाक उड़ाया। हेरोदेस ने यीशु को राजसी भड़कीला वस्त्र पहनाकर.....।"

उसने यीशु के साथ क्रूरता का व्यवहार करने का चुनाव किया। उसे यह करने की आवश्यकता नहीं थी - उसके सैनिक यह काम करने में पूरी तरह समर्थ थे। फिर भी वह उनमें शामिल हुआ। वह यीशु से मिला और उत्तम बनने की बजाए कटु बनने का चुनाव किया। हेरोदेस ने अपने जीवन में कई काम किये थे लेकिन उसने उस अभागे दिन पर परमेश्वर के पुत्र से जैसा व्यवहार किया, इसी बात से उसे याद रखा जाएगा। उसके हृदय के उमड़ने से उसके कार्य बाहर आए-अपनी पत्नी की तरह उसने भी अपने अनुभवों के द्वारा उत्तम व्यक्ति बनने की बजाए कटु, घृणा से भरा व्यक्ति बनने का चुनाव किया।

मौज या पवित्रता?

मरकूस ६ में हेरोदेस की जन्म दिन की पार्टी एक बडी बात थी। यह एक दावत थी जिसमें गलिल के सभी महत्वपूर्ण व्यक्ति शामिल थे (मरकूस ६:२१)। जाहिर था कि यहाँ शराब और खानपान था। लोग लंबी यात्रा करके वहां पहूँचे थे और भरपूर मौज मस्ती करने का निर्णय बना चुके थे। इस पर्व के एक भाग के रुप में हेरोदेस ने अपनी सौतेली बेटी को मेंहमानों के सामने नाचने का अवसर दिया। जाहिर बात हैं कि उसने बहुत उत्तेजित करने वाले कपड़े पहने होंगे और उस समय के इस प्रकार के मेहफिल के रिवाज के अनुसार अश्लील नृत्य किया होगा। अपने वासनापूर्ण और शायद पूरे होश में न होने के कारण हेरोदेस ने एक असावधान वचन दियाः "तुम्हें जो भी चाहिए मुझसे माँगो और वो मैं तुम्हें दूँगा। "भावुकता से भरे फैसले हमेंशा ही बहुत कम सही होते हैं, और यह फैसला भी उनसे अलग न था।

अपनी माँ से सलाह लेने के बाद, उसने यूहन्ना बप्तिस्मादाता का सिर

माँगा। यूहन्ना के बारेंमें हेरोदेस दूचित्ता था- हालांकि उसने उसे बंदी बनाया था फिर भी, "हेरोदेस, यूहन्ना को धर्मी और पवित्र पुरुष जानकर उनसे डरता था, और उनकी रक्षा करता था (मरकूस ६:२१)। यूहन्ना से हेरोदेस बहूत घबराता था फिर भी उनको सुनने में आनंद लेता था (मरकूस ६:२०) भोजन पर आए अपने मेहमानों और अपने ही शब्दों के जाल में फँसकर हॅरोदेस ने उस दिन एक बहुत बडी गलती की। वह धार्मिक होकर इस चुनौती में यह कहकर उभर सकता था कि, "यूहन्ना का सिर मेंरे आधे राज्य से भी मौल्यवान है, इसलिए तुम उसे नहीं पा सकते।" लेकिन उसने आसान रास्ते का चुनाव किया, मौज का रस्ता। हर समय जब हम इस रास्ते का चुनाव करते हैं तो अगली बार कुछ सही करना और भी कठिन हो जाता है और हम अपनी इस लालसा के गुलाम बन जाते हैं।

१ पतरस ४:१-४ में पतरस मसीहीयों को यह चुनौती देता हैं कि वे लुचपन की बुरी अभिलाषाओं मतवालापन, लीलाक्रिड़ा, पियक्कडपन, और घृणित मूर्ती पूजा" में ना पड़े। उसने लोगो से प्रार्थना की कि जिस तरह यीशु ने अपने शरीर पर यातनाएँ सहीं तो हमें भी संत होने के नाते परमेश्वर के लिये अपने आप का इन्कार करना चाहिए। यह चुनाव प्रतिदिन हमारे सामने आता है। क्या हम टी.वी. पर समाचार पत्र या मासिक में या फिल्मों में जब अश्लील दृष्य आते हैं तो अपनी नजरे वहाँ से हटा लेते हैं? जब हम शॉपिंग मॉल में जाते हैं तो वहाँ पर आए लोगों के अश्लील वस्त्रों से अपनी आँखे हटा लेते हैं? क्या हम "एक और शराब के प्याले , एक और सिगरेट, थोड़ा और खाने को इन्कार करते हैं? या फिर हम अपने संस्कृति की आवाज़ें सुनते हैं? क्योंकि, कुछ भी हो, "मैं इसके योग्य हूँ। यह मेंरे लिए हैं। और मुझे मिलना ही चाहिए।"

परमेश्वर को प्रसन्न करना या मनुष्यों को?

हेरोदेस ने एक ऐसे वातावरण का चुनाव किया जिसने उसके सबसे घिनौने बुराई को बाहर लाया। वह एक पापी पारिवारिक स्थिती में बड़ा हुआ और अपने चारों ओर क्षतिपूर्ण वातावरण का अनुभव किया। वह अपने परिवार से दूर अलग रास्ते पर चलने का चुनाव कर सकता था। वह सब कुछ छोड़ अपने परिवार से बाहर किसी और स्त्री से विवाह कर सकता था। परंतु उसने अपने भाई की पत्नी चुराई, (मारे गए ॲरीस्टोबुलुस की) जो उसके दूसरे भाई की बेटि थी। उसने एक धर्मी व्यक्ति की हत्या करने का चुनाव किया बजाए इसके कि वह अपने मेहमानों के सामने बुरा दिखे (मरकूस ६:२६)।

एक परिक्षा नैतिक निर्णय लेने में हेरोदेस ने अपने पत्नी की बात सुनी। उसने उसपर यूहन्ना को बंदी बनाने और अंततः मार डालने का प्रभाव डाला। इसके विपरीत पिलातूस की पत्नी ने उससे यीशु को रिहा करने की बिनती की और उसने अपनी पत्नी की बात नही सुनी (मती २७:१९) लेकिन हेरोदेस की तरह उसने भीड़ की बात सुनी... और बीना कुछ किये यीशु को दोषी ठहराया।

तो वे लोग जो हम पर निर्णय लेने का दबाव डालते हैं, अक्सर हमारे साथ लम्बे समय तक नहीं रहते। हमारे ६० वें जन्म दिन पर वो वहाँ नहीं रहेंगें। शायद हमारी मयत में भी वो ना आएँ। शायद जब हम बीमार हों तब वे हमें देखने न आएँ और न ही कठिनाईयों मे हमारी मदत करें। तो भी उनके विचार हम पर गहरा प्रभाव डालते हैं। निश्चय ही यह सही नहीं हो सकता। जोसेफस (अँटीक्वीटीस) के अनुसार बाद में रोमि सम्राट गायस कैसर कलिगुला ने ३९ ए.डी. में हेरोदेस को देश निकाला दिया और उसे गौल में लियॉन्स में भेज दिया, और स्पेंन में उसकी मृत्यृ हुई। उसकी पत्नी अंत तक उसके साथ थी लेकिन मरकूस ६:२६ के ये आदर्श लोग और दूसरे लोग जो उसके लिये इतना मायने रखते थे इस्त्राएल में बसे रहे स्पेन में नही। बिना तख्त और बिना "मित्रों" के वह संभवतः ही एक टूटे हुए व्यक्ति की मौत मरा होगा। जिसे अब भी क्षमा की तलाश थी। बीते दिन अब भी उसका पिछा कर रहे थे।

हमारे जीवन के कुछ बुरे निर्णय वे होते हैं जो हम परमेश्वर को खुश करने की बजाए, मनुष्यों को खुश करने के लिए लेते हैं। जब मैं १० वर्ष का था तब मेंरे पिता घर छोड़कर चले गए। जीने के लिए हमारे परिवार को संघर्ष करना पड़ा। जब मैं १४ वर्ष का था तब मैंने अपनी माँ को अपनी नौकरी खोते देखा, मैंने निर्णय बनाया कि जिम्मेंदारी और सफल बनने के लिए जब मैं बडा होऊँगा तब मेंरे पास मेंरे खुदकी एक अच्छी नौकरी होगी। इस निर्णय का एक भाग यह भी है कि मैं कभी ड्रग्ज नहीं लूँगा। इस निर्णय में खरा उतरने की परिक्षा कुछ ही महिनों में मेंरे सामने खड़ी थी।

एक रेडिओ कार्यक्रम के प्रतियोगिता के द्वारा मैं और मेरे मित्र ने एक बड़े संगीत (Rock Concert) के तिकट जीते। वहाँ हम घंटो मिट्टी में बैठे संगीत सुन रहे थे। हम लोग एक गोलाकार में बैठे थे, जहाँ मैं देख रहा था कि लोग गाँजा फूँक कर एक दूसरें को दे रहे थे। एक के बाद एक ने कश लगाकर उसे दूसरे को दिया। मैं देख रहा था कि धीरे-धीरे वह मेंरे पास आ रहा था। मेंरा

निर्णय मुझे याद था। लेकिन सभी लोग ये कर रहे थे, मैं उन लोगों से अलग या बाहर दिखना नहीं चाहता था। मैंने भी एक कश लगाया।

इसके तुरंत बाद मैं अपने दोस्तों के साथ लगातार गाँजा पीने लगा। मैं बुरी तरह से यह चाहता था कि मैं उनके बीच सही लगूँ और इसके लिये यदि (हलका) नशा लेना एक भाग था तो मैं वह भी करने को तैयार था। मेरे मित्रों की टोली ड्रग्स लेने में और अधिक शामिल होने लगी। मैंने अपने एक दोस्त को अपने से बड़े दोस्त की पत्नी को अपने साथ भगा ले जाते देखा। मैंने देखा छोटा लडका अपने घर में ठीक उसके पिता की तरह मुँह में हुक्का लिए घूम रहा था। अंततः मैंने कहा, "नहीं" क्योंकि मेरे कुछ साथी और गहरे नशे का अनुभव लेने लगे; लेकिन मुझे अपनी मूर्खता पूर्ण क्रियाओं का गहरा पच्छतावा हुआ।

जब मैं शिष्य बना तो एम.आय.टी. में मेरे पहले से ही कुछ अच्छे मित्र थे। वो नशा नहीं करते थे लेकिन मसीह को अपनाने के मेंरे निर्णय के विरुद्ध थे क्योंकि इससे मैं अपनी मित्रों की टोली के साथ अधिक समय नहीं बीता पाता था। स्नातक के अखिरी सप्ताह में मेंरी माँ मुझसे मिलने आई, वह मेंरे कमरे में रही और मैं कुछ मसीहीयों के कमरें में रहा। एक नया मसीही होने के नाते मैंने अपने अश्लील चित्रों को देखने और वासना में पड़ने की आदत से दूर रहने का संकल्प किया था, एक गैर-मसीही होने के नाते इस आदत ने मुझे जकड़ रखा था और एक मसीही होने के नाते यह मुझे लालायित करता था। उस सप्ताह जब मेंरी माँ मेंरे कमरे में ठहरी थी तो मुझे इस बात की चिंता न थी कि वह सभी अश्लील पत्रिकाओं और दूसरे वस्तुओं को देखेगी - क्योंकि वो सब वहाँ से जा चुके थे।

मैं अपने कमरे के पास आया और दरवाजा खटखटाया और मैंने देखा किसी ने प्लेबॉय मासिक के मध्य पृष्ठ को मेरे कमरे के दरवाजे पर चिपकाया था। मेंरी माँ ने भी जब दरवाजा खोला तो वह पोस्टर देखा। मैं बहुत शर्मींदा और दुःखी हुआ। आज भी मैं नही जानता कि किसने मेंरे दरवाजे पर वह चिपकाया था। क्या वो मेंरे पुराने मित्र थे जिन्हें मेरे निर्णय से चोट पहुँची थी? या किसी ने मजाक किया था। जिस किसीने भी यह किया था, और जब मैंने उसे देखा मैं जान गया के यीशु के पीछे चलने का मेंरा निर्णय सही था।

एक व्यक्ति जिसने अपने बीते हुए कल से छुटकारा पाया

यह फरवरी १९९८ की बात है जब अलबर्ट शेन, जो उत्तर भारतीय कलीसिया का अगुवा है उसने एक युवा इंजिनियर छात्र रावत (असली नाम नही) को कलीसिया में आने का निमंत्रण दिया। वह व्यक्ति कलीसिया में आया और पवित्र शास्त्र का अध्ययन किया। उस वर्ष वह शिष्य नहीं बना लेकिन क्रूस के द्वारा बहुत संकल्प पाया। उसका बीता हुआ कल उसका पीछा कर रहा था। और क्रूस ने उसे सांत्वना दिया। कुछ ही महिनों पहले वह अपने गाँव से लौटा और फिर से नई शुरुवात की। दो वर्षों तक वह आतंकवादी संगठन का एक भाग बना रहा जिसे सरकार ने निषेद करार दिया था।

रावत स्वास्थ सम्बन्धी मदद गुट में शामिल हुआ जो आतंकवादियों को उनके प्रमुख ठिकानों और अनेक छिपते की जगहों पर दवाईयाँ और अन्य वस्तु पहुँचाया करते थे। लेकिन बातें उस समय बदल गई जब उन्हें एक दुकान के मालिक का अपहरण करने की आज्ञा मिली, जो सरकार का भेदी था। बार - बार आतंकवादियों से चेतावनी मिलने के बावजूद भी यह व्यक्ति जासूसी करता और इस गूट के बारे में सरकार का खबर पहुँचाता था। सो आज्ञा मिलने के बाद रावत और उसके साथी ने उस व्यक्ति को अगुवा किया, और खेत में जाकर उसके सिर में गोली दाग़ कर उसे मार दिया।

उस गुट में रावत यह काम करने के लिये शामिल नहीं हुआ था, और जिस काम में उसने भाग लिया था उससे वह बहुत विचलित हुआ। वह उस आतंकवादी गुट को छोड़ना चाहता था, लेकिन साथ ही यह भी जानता था कि उसकी यह चाल उसकी जान ले सकती हैं। वह इस्तिफा नहीं दे सकता था, इसलिए भाग गया। और वह छिपा रहा क्योकी वे लोग उसकी तलाश में थे। उसके इस चाल के बाद तुरंत उसे कलीसिया आने का आमंत्रण मिला था, और क्षमा की ओर उसकी यात्रा शुरु हुई। इस बात पर विश्वास करना उसको बहुत कठिन लग रहा था, कि जो उसने किया उसके लिए परमेश्वर कैसे उसे क्षमा कर सकते थे। वह भय और भयानक सपनों में जीता रहा, और यह चिंता उसे खाए जा रही थी कि जाने किस घड़ी वो लोग उसे ढूँढ निकालेंगे।

अगले वर्ष संतो के बहुत मेहनत के बाद उसने एक निर्णय बनाया और मसीह में बप्तिस्मा लिया। बाद में, उसके बुरे डर साकार हुए - वह एक छोटे गांव में था और उसके पुराने साथीयों ने उसे ढूँढ निकाला। उन्होंने उस पर

हमला किया लेकिन गाँव वालों ने और परमेश्वर के अनुग्रह ने उसे बचा लिया।

रावत अब एक मजबूत और विश्वासी शिष्य और अगुवा है। उसका परिवार जो गैर मसीही है अब भी उसके मसीही बनने पर नाखुश है। उन्हें उसके बीते दिनों का या आतंकवादियों से उसके सम्बन्ध का कुछ भी पता नहीं है। उसके परिवार से कोई भी उसके विवाह में शामिल नहीं हुआ क्योंकि उनके गाँव ने उसकी माँ को यह चेतावनी दी कि जो कोई इस विवाह में मदद (मसीही) करेगा उसे - समाज से बहिष्कृत किया जाएगा। लेकिन रावत रात में चैन की नींद सोता है - पुराने दोष या डर अब उसका पीछा नहीं करते - क्योंकि यीशु मसीह का प्रेम उसके साथ है।

हमारे बारे में क्या?

जब हम हेरोदेस के जीवन की झलक देखते हैं, तो हम देख सकते हैं कि वह एक साधारण मनुष्य था जिसकी पार्श्वभूमि भयंकर थी। हम सभी की तरह उसने गलतियाँ की। उसने दूसरों को भयंकर चीज़ें करते देखा। अपने किये पर वह पच्छताया। लेकिन वह स्पष्टता और सच्चाई के मार्ग पर चलना नहीं चाहता था: "मैं गलत था मुझे क्षमा की आवश्यकता है। उसने गड़बड़ी (कन्फ्युज़न) का चुनाव किया। उसने यातना के द्वारा कृपालू और उत्तम बननें की बजाए क्रूर और कटू बनने का चुनाव किया। उसने पवित्रता के बजाए मौज मस्ति का मार्ग चुना। उसने परमेश्वर के बजाए मनुष्यों को खुश करने का चुनाव किया। और उन चुनावों का फल उसने पाया।

प्रतिदिन हम सभी के ऐसे ही चुनाव होते हैं। हजारों छोटे निर्णयों से चरित्र बनता है। जब हेरोदेस यीशु के सामने था, तब वह क्षमा के लिए तैयार न था। तथा उसने सैनिकों के साथ मिलकर यीशु को और पीड़ा पहुँचाया। हम सभी एक दिन यीशु से मिलेंगे - ऐसा हो कि हमारे चुनाव हमें क्षमा के लिए तैयार रखें।

मन के लिए

१) हेरोदेस के सामने भयंकर परिस्थितीयाँ उत्पन्न हुईं। वे कौनसी चुनौती-पूर्ण परिस्तिथीयाँ हैं जिनका सामना आपने अपने जीवन में किया? उनका आप पर क्या प्रभाव पड़ा?

२) आप अपने वैयक्तिक पवित्रता में कैसे हैं? क्या कुछ ऐसी बातें हैं जिस में आपने समझौता किया हैं और जिन्हे कोई नहीं जानता था? यदि हाँ, तो अब समय हैं कि आप ईनामदार बनें।

३) एक शब्द में, क्या आपकी यातनाओं ने आपको उत्तम बनाया या कटु? क्या आपके बीते दिनों की कुछ ऐसी घटनाएँ हैं जो आज भी आपका पीछा कर रही हैं? क्या आप के सामने यह बात स्पष्ट हैं कि उस समय में आप कैसे पाप में गिरे (यदि गिरे हों तो)? क्या आपको अपने अनुभवों के फल के कारण "उत्तम" बनने में परमेश्वर और दूसरों से मदद मिलेगी?

२४

इम्माऊस के मार्ग पर जानेवाले व्यक्ति

उनके हृदय भीतर ही भीतर उत्तेजित हो रहे थे

यीशु ने उनसे कहा, "हे निर्बुद्धियों! तुम नबियों की सब बातों पर विश्वास करने में कितने मंदमति हो। क्या यह आवश्यक नहीं था कि मसीह यह दुःख उठाता और तब अपनी महिमा में प्रवेश करता?" तब यीशु ने मूसा तथा सब नबियों से आरंभ करके संपूर्ण पवित्र शास्त्रों में से अपने विषय में लिखी गई बातों का अर्थ उन्हें समझा दिया।

इतने में वे उस गाँव के पास पहूँचे जहाँ वे जा रहे थे। यीशु के ढंग से ऐसा लगा कि वे उस गाँव से आगे जा रहे हैं। परंतु उन्होंने यीशु से दृढ़ अनुरोध किया, "हमारे साथ रहिए क्योंकि संध्या हो चली है और दिन अब बहूत ढल गया है।" अतः यीशु उनके साथ रहने के लिए भीतर गए।

जब वह उनके साथ भोजन करने बैठे, तब यीशु ने रोटी ली। यीशु ने परमेंश्वर को धन्यवाद दिया, और उसे तोड़कर उनको देने लगे। तब शिष्यों की आँखे खुल गईं और उन्होंने यीशु को पहचान लिया। किंतु वह उनकी आँखो से छिप गए। उन्होंने आपस में कहा, "जब वह मार्ग में हमसे बातें कर रहे थे, और पवित्र शास्त्र का अर्थ हमें समझा रहे थे, तब क्या हमारे मन में उत्तेजना नही उत्पन्न हुई थी?

लूका २४:२५-३२

यीशु के क्रूस पर जाने के बाद, यीशु के अनुयायीयों ने अलग-अलग रुप से प्रतिक्रिया दिखाई। पवित्र शास्त्र हमें दो व्यक्तियों के बीच हुई वार्तालाप की कहानी बताता हैं, जो इम्माऊस नामक एक गाँव में जा रहे थे, जो येरूशलेम से कुछ ही घंटो की दूरी पर हैं (करीब ७ मील)। जैसे वे गाँव की ओर चल रहे थे यीशु उनके साथ हो लिए और किसी तरह से ऐसा किया कि वे उसे पहचान न सके। हम नही जानते कि वे शारीरिक रुप से अलग दिख रहे थे या फिर उन्हें पहचान न पाएँ इसलिये उन व्यक्तियों की आँखे बंद कर दी गई थी (लूका २४:१५-१६)। उसने उनसे पूछा कि वे किस बारे में बात कर रहे थे। तब उन्होंने उदास चेहरे से यीशु से कहा, "हमें आशा थी कि, यही वह है जो

इस्त्राएल का उद्धार करेंगे" (लूका २४:२१)। इन व्यक्तियों ने उनके स्त्री दोस्तों की कही हुई अचंभित बातें उनको बताई। जिन्होंने यह कहा था कि यीशु अभी भी जीवित है और उनकी कब्र खाली है (लूका २४:२२-२४)।

यीशु ने उनकी यह दुःखद कहानी सुनी, और इसकी प्रतिक्रिया में तीक्ष्ण चुनौती दी। पुराने नियमों के वचनों का उपयोग करके उन्होंने बताया कि मसीह को इसी प्रकार से यातना सहना था और यीशु इस तरह चलने लगे जैसे उन्हे और आगे जाना है, लेकिन उन व्यक्तियों ने उनसे उस रात वहीं ठहर जाने का दृढ़ अनुरोध किया क्योंकि शाम बहुत ढल चुकी थी। वे उनके साथ रूक गए, और रात के खाने के समय, रोटी ली, धन्यवाद दिया और उसे तोड़कर उन्हें दिया। उस क्षण चमत्कारी रूप से उनकी आँखे खुल गई और उन्होंने यीशु को पहचान लिया। इसके तुरंत बाद उन्होंने देखा के यीशु वहाँ से जा चुके थे, गायब थे वे यूँही जा चुके थे। तब उन्होने जाना, "जब वह मार्ग में हमसे बातें कर रहे थे और पवित्र शास्त्र का अर्थ हमें समझा रहे थे, तब क्या हमारे मन में उत्तेजना नहीं उत्पन्न हुई थी?" (लूका २४:३२)

इन व्यक्तियों ने जो देखा और सुना था उस कारण वे उदास हो गए थे। पतरस की तरह, उन्होंने यीशु पर से आँखें हटा लीं और सिर्फ हवा और लहरों को देख रहे थे (मत्ती १४:३०)। जब उन्होंने परमेश्वर का वचन सुना उनके हृदय नए हो गए और उन्होंने फिर से यीशु को देखा।

सच्चाई उत्तेजित करती है

परमेश्वर के वचन की शक्ती में कुछ असाधारण है। वह एक दोधारी तलवार की तरह काटती है और हमारी आत्मा को बेपर्दा करती है (इब्रानियों ४:१२-१३)। बोए जाने पर वह खाली नहीं लौटता (यशायाह ५५:१०-११)। परमेश्वर के लिए वह हमारे मन को ज्वलंत करता है ताकि हम जो हैं उससे बेहतर बनें, वह बनें जो परमेश्वर हमें बनाना चाहता है। हम हमारे जीवनों से कुछ बदलाव लाने के लिए बेताब रहते हैं। हम दूसरों को खुश खबर सुनाने को बेचैन रहते है।

यिर्मयाह ने परमेश्वर के प्रति अपने चाहत के बारे में कहा, "क्योंकि जब मैं बातें करता हूँ, तब मैं जोर से पुकार-पुकारकर ललकारता हूँ कि उपद्रव और उत्पात हुआ, हां उत्पात। क्योंकि प्रभु का वचन दिन भर मेंरे लिए निन्दा और ठट्टा का कारण होता रहता हैं। यदि मैं कहूं, मैं उसकी चर्चा न करूंगा न उसके

नाम से बोलूंगा, तो मेंरे हृदय की ऐसी दशा होगी मानो मेंरी हड्डियों में धधकती हुई आग हो, और मैं अपने को रोकते-रोकते थक गया; पर, मुझ से रहा नहीं जाता" (यिर्मयाह २०:८-९)।

यिर्मयाह लिखता है कि परमेश्वर कहता है, "क्या मेरा वचन आग सा नही हैं?" (२३:२९)। सन्तों की चिंता में प्रेरित पौलूस चाहत की आग में जलने लगा। अपने जीवन की यातनाओं का वर्णन करने के बात अंत में वह यह कहता हैं, "अन्य और भी बातों को छोड़कर जिनका वर्णन मैं नहीं करता, सब कलीसियाओं कि चिंता प्रतिदिन मुझे दबाती हैं। किसकी निर्बलतासे मैं निर्बल नहीं होता? किसके ठोकर खाने से मेंरा जी नहीं दुखता?" (२ कुरू ११:२८-२९)।

यीशु ने खुद लूका १२:४९-५० में कहा, "मैं पृथ्वी पर आग लगाने आया हूँ। और मैं क्या चाहता हूँ? केवल यह कि वह आग अभी सुलग जाए। मुझे एक बप्तिस्मा लेना हैं और जब तक वह न हो ले, तब तक मैं कितना व्याकुल रहूँगा।"

इतिहास में वह जला

सारे इतिहास में कितने ही महान स्त्री-पुरुष यीशु के सुसमाचार की चाहत में जल उठे (उत्तेजित हुए)। जॉन वेसली ने कहा, "मैं अपने आप को हर दिन वचन के उत्साह से जलाता हूँ और लोग दूर और पास से आते हैं, ताकि मुझे जलता हुए देखें।" हर एक काल में महान नायक उठाए गए, जो करीब-करीब हर पीढ़ी में परमेश्वर के वचनों से प्रेरित हुए। हजारों की संख्या में इस पूरे काल में यीशु पर विश्वास लाने के कारण शहीद हुए, जो उनके वचनों की शक्ति के लिए अंतिम बलिदान को भी तैयार थे।

कलीसिया के इतिहास और परंम्परा के अनुसार, यूहन्ना को छोड़ बाकी सभी मौलिक (ओरिजिनल) प्रेरित शहीद की मौत मरे। कहा जाता है कि पतरस को रोम में क्रूस पर उल्टा टांगा गया। अन्द्रियास को ग्रीस में एक 'X' आकार के क्रूस पर टांगा गया। याकूब का सिर धड़ से अलग करके हेरोदेस ने मरवाया (प्रेरित १२:१-२)। फिलिप्पुस को कोडे मारे गए और क्रूस पर टांगा गया। बरतुल को बोरे में बान्धकर समुद्र में फेंका गया था या क्रूस पर टांगा गया। थोमा को भारत में एक भाले से मारा गया। मत्ती को ईथियोपिया में परशु (कुल्हाड़ी जैसा औजार) से मारा गया। हलफई के पुत्र याकूब को पत्थरों से

मारकर मारा गया। तद्दी को गदा से मारा गया। शिमौन कनानी को ट्राजन ने क्रूस पर चढ़ाकर मारा। मथायास को पत्थरों से मारकर और सिर धड़ से अलग करके मारा गया।

कलीसिया के शुरुआती दिनों में हजारों लोग रोमी सरकार के द्वारा सताए गए और अपने विश्वास के कारण उन्हें मरना पड़ा। तरतुलियन ने कहा, "शहीदों का लहू कलीसिया का बीज हैं।" उनकी कबूली ने अनेकों को उनके विश्वास में मजबूत रहने के लिये प्रेरित किया। एक कलीसिया के लोकप्रिय मुखिया, पॉलीकार्प को १५६ ए.डी. में स्मॅरना में शहीद किया गया। मसीह का इन्कार करने को कहा गया, तो उसने कहा, "मैंने ८६ वर्ष तक उसकी सेवा की हैं और उसने कभी मेंरे साथ कुछ गलत नहीं किया। कैसे मैं अपने राजा के विरुद्ध अधर्म की बाते कहूँ जिसने मुझे बचाया हैं?" बाद में उसे खूंटे से लटकाकर जला दिया गया।

विल्यम टायण्डेल को पवित्र शास्त्र का भाषांतर आम अंग्रेजी में करने के कारण शहीद कर दिया गया। उसने कहा, मैंने जानना चाहा कि किसी भी साधारण मनुष्य को अपना विश्वास स्थापित करना कितना असंभव है। जब तक कि उसकी खुदकी मातृभाषा में वचनों को साधारण तरीके से उसकी आँखों के सामने न रखा जाए। अपने इस संकल्प से कि लोगों तक परमेश्वर का वचन पहूँचेगा, उसे अपनी जान गंवानी पड़ी।

आर्क की जोऍन परमेश्वर के लिए मन में और वास्तविकता में भी जली। उसने कहा, "हमें केवल एक ही जीवन मिलता है और उसे हम वैसे जीते जैसे हम जीने में विश्वास करते हैं। लेकिन आप जो हैं उसका बलिदान करना और एक विश्वास के बीना जीना, यह मरने से भी भयंकर दुर्भाग्य है।" जब मैं ऐसे नायकों के बारे में सुनता, और पवित्र शास्त्र के वचनों को पड़ता हूँ तो मेरा भी मन जल उठता है।

आग बुझ सकती है

पौलूस ने थिस्सलुनीकियों को चेतावनी दी, "आत्मा की आग को न बुझाओ (१ थिस्स ५:१९)। इब्रा. २:१-२ में हमें परमेश्वर से भटक जाने की चेतावनी दी है। हमें विश्वास में टिके रहने के लिये शिष्यों को प्रतिदिन एक दूसरे को प्रोत्साहन देने के लिए समझाया गया (इब्रा ३:१२-१३)। १ कुरू १५:५८ में पौलूस ने कहा, "हे मेरे प्रिय भाईयों, विश्वास में दृढ़ और अटल रहो

और प्रभु के काम में सदा आगे बढ़ते जाओ : क्योंकि तुम यह जानते हो कि प्रभू में किया गया तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ नही है"। प्रकाशित वाक्य २:१-५ में इफिसूस की कलीसिया को ताड़ना दी गई क्योंकि वे अपना पहला प्रेम खो चुके थे।

इम्माऊस के मार्ग पर जाने वाले व्यक्ति उदास थे क्योंकि वे मानव घटनाओं पर केन्द्रीत थे और यीशु के शब्द भूल गए थे। जब उन्होंने उन्हें पवित्र शास्त्र की सच्चाई को याद दिलाया तब उनके मन फिर से उत्तेजित हो गए। हमारे लिये भी यही सही है जब हम दूसरों के पापों को देखते हैं, और हमारे पापों को देखते हैं तो निराश हो जाना बहुत आसान हो जाता है। हम आशा खो सकते हैं। लेकिन जब हम फिर से परमेश्वर के वचनों में छलांग लगाते हैं, और यीशु के क्रूस और जी उठने की शक्ति को देखते हैं, तब हमारे मन फिर से जल सकते हैं। ऐसे जलो और इस निराशापूर्ण संसार में एक बदलाव लाओ जिसे हमारे प्रभू की बुरी तरह से जरूरत है।

एक व्यक्ति जो यीशु के लिए जलता है

साजी ऍलेक्स १९८६ में एक कॅथोलिक पादरी बनने के लिए बॅंगलोर आए। करीब चार वर्ष के बाद वे निराश हुए और सॅमिनरी (धार्मिक विद्यालय) छोड़ दिया। उसने बैंगलोर में काम करना शुरू किया और पिता से तनावपूर्ण रिश्ते के कारण वापस घर नही जाना चाहा। एक दिन वह जब काम से घर आ रहा था, तब गिम्स अँड्रयुस ने उसे कलीसिया आने का निमंत्रण दिया। उसने पवित्र शास्त्र का अध्ययन किया, अपना जीवन प्रभू को सौंपा और, बप्तिस्मा लिया। एक नए मसीही के रूप में वह बहुत संकल्पित था लेकिन किसी को भी कभी मसीह की ओर नहीं लाया। फिर भी प्रभू के लिए उसका मन ज्वलंत रहा।

कई वर्षो बाद, कोचिन में कलीसिया की स्थापना करने गए मिशन टीम में साजी भी शामिल हुआ, लेकिन वह बहुत उदास था। साजी कहता है, "मैं मिशन टीम का एक हिस्सा था लेकिन जाने के लिए उत्तेजित न था।" एक कारण था मुझे नौकरी ढूंढनी थी, जो मुझे बहुत कठीन लगा, और दूसरा कारण यह था कि देड़ साल तक मैंने लोगों को प्रभू के पास लाने का प्रयत्न किया लेकिन किसी को भी शिष्य बनाने में असफल रहा, तब मैंने सोचा कि मैं किसी को भी शिष्य नहीं बना पाऊंगा। वह गुट के दूसरे लोगों के साथ मुझसे और ग्वीलर्मो ऍडम से मिला और परमेश्वर का वचन सुना। उस दिन उसने

सुना कि कैसे फसल पककर कटनी के लिए तैयार है; और परमेश्वर ने उसे चुना था। और वचन एक बार फिर उसके मन में जलने लगे।

कोचीन जाने के कुछ ही पहले साजी का भाई नोकरी के लिए बैंगलोर आया। साजी उसे कलीसिया में लाया और कोचीन चला गया। कुछ ही सप्ताह में सोजून को मसीह में बप्तिस्मा दिया गया। जब साजी कोचीन गया तब उसका स्वभाव अलग था। वह चाहत और विश्वास से जल रहा था। और लोगों को मसीह की ओर आते देखने की ऐसी इच्छा उसमें जागी जो कभी उसमें न थी। उस वर्ष उसने आठ लोगों को प्रभू के पास लाया, जो मसीही बने।

साजी की माँ उसकी बहन शेजी के लिए रिश्ते ढूँढ रही थी। वह बुरी तरह से शेजी के उद्धार की प्रार्थना कर रहा था; और उसे कोचीन आने का प्रोत्साहन दिया। उसने आने का निर्णय बनाया, और कुछ महिला शिष्यों के साथ रही और पवित्र शास्त्र का अध्ययन किया। उनकी माँ ने विरोध किया, और यदि उसकी बेटी को बप्तिस्मा दिया गया तो भयंकर अंजाम की धमकी दी। इसके बावजूद शेजी का बप्तिस्मा हुआ और आज वह एक बढ़िया शिष्य की पत्नी हैं।

दो वर्ष बाद साजी का सबसे छोटा भाई कोचीन आया और कुछ ही महिनों में शिष्य बन गया। साजी का अभी एक और भाई था जो, अब तक मसीह के पास नहीं आया था। अंततः वह भी कोचीन आया, पवित्र शास्त्र का अध्ययन किया और वह और उसकी पत्नी शिष्य बने।

साजी और उसकी पत्नी शेबा अब भी यीशु की चाहत की आग से जलते हैं और केरला में कलीसियाओं की अगुवाई करते हैं, उनके क्षेत्र में प्रचार करने के लिए ५०० संकल्पीत शिष्य हैं। उसके बच्चे और उनकी पत्नीयाँ परमेश्वर के परिवार का एक हिस्सा हैं, और उनके माता-पिता सुसमाचार से गर्मी पा रहे हैं। उसका मनपसंद अनुच्छेद हैं; १ कुरू ३:६-७:

मैं ने पौधा लगाया, अपुल्लोस ने सींचा : परंतु परमेश्वर ने उस पौधे को बढाया। इस लिए न तो लगाने वाला कुछ है न सींचने वाला : परंतु परमेश्वर ही सबकुछ है जो बढ़ानेवाला है।

फिर जलने का समय है

उदास और निराश, व्यक्ति जिन्होंने परमेश्वर के लिए सपना देखा, यीशु की मृत्यू के बाद साथ चले। उनकी आशाएँ टूट गईं और वे मनुष्य की आँखों से मानवी घटना को देख रहे थे। यीशु ने कुछ समय उनके साथ बीताया और उन्हें फिर से परमेश्वर की ओर केन्द्रीत किया। उनका दुःख पिघल गया। वचन उनके हृदयों में जलने लगे और उनकी आँखे फिर से खुल गईं। वे यीशु के साथ चले थे। वे उनके लिए दौड़ने और उनके साथ ऊंचे उड़ने को तैयार थे।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि यीशु के क्रूस के पास खड़े होकर उनके शब्दों को सुनने का आप पर और मुझ पर यही प्रभाव पड़े।

मन के लिए

१) क्या यीशु के लिए आज आपका मन जल रहा हैं? यदि नही तो इम्माऊस के मार्ग पर चलते उन व्यक्तियों की तरह आपको किस बात ने उदास किया हैं?

२) आपका पवित्र शास्त्र अध्ययन कैसा है? क्या यह "आपके धार्मिक उत्साह" को बनाए रखने में आपकी मदद कर रहा है? इस क्षेत्र में सुधार लाने के लिए क्या आप को कुछ ध्येयों (गोल) के मदद की जरूरत है? यदि हाँ, तो वे क्या हो सकते है?

३) जब आप प्रेरितों, मसीही शहिदों और दूसरे नायकों के बारे में सोचते हैं तो क्या यह आपको प्रेरित करता है? क्या आप अपने आप को मसीह के मकसद पर फिर से समर्पण करना चाहते है, मसीह के लिये उनके ज्वलंत चाहत और दूसरों के साथ मसीह को बाँटने के बारे में सुनने के बाद?

उद्धारकर्ता का क्रूस

बारह सप्ताह के शिक्षा क्रम की रुपरेखा

इस पुस्तक को आसानी से शिक्षा क्रम के रुप में सिखाया जा सकता हैं, हर सप्ताह दो अध्याय; इस तरह बारह सप्ताह में पूरी पुस्तक (यदि शिक्षक चाहे तो जल्दी भी पूरी की जा सकती हैं।) हर सप्ताह की एक सरल, विशेष चुनौती हैं, पुस्तक के अध्यायों के अलावा। छात्र को कक्षा में लिये जानेवाले अध्यायों को पढ़ना हैं, और फिर प्रत्येक अध्याय के अन्त में लिखे प्रश्नों का उत्तर देना हैं साथ ही नीचे दीये गए सलाहों पर चलना हैं।

सप्ताह - १

परीचय और अध्याय ३ और ४

आत्मग्लानी, अकेलापन, अस्विकृती; बुरे सपनों को गाड़ना

इस सप्ताह, अपने जीवन के कठिनतम् समय के लिये परमेंश्वर को एक प्रार्थना लिखो। "फॉलो मी" यह गीत गाओ फिर मसीह की यातनाओं को याद करो और उनकी तुलना आपकी यातनाओं से करो। उस कागज को जला दो या गाड़ दो; जो भी आपको सही लगे। और अपने मन में, आपके जीवन के भयंकर सपनों को हमेंशा के लिये गाड़ दो और उनकी जगह मसीह के यादों को रखो।

सप्ताह - २

अध्याय १ और ५

एकता और क्षमा : टूटे रिश्तों को फिर से जोडना

इस सप्ताह, प्रार्थना करो, मसीह उनके दुश्मनों, दोस्तों, जिन्होंने उन्हें निराश किया था, और उन लोगों से जिन्होंनें उन्हें गलत समझा उनसे कैसे निपटे या कैसा व्यवहार किया। इस बारे में आपके जीवन में भी प्रार्थना करो। फिर उनसे सम्पर्क करो ताकि उन रिश्तों को फिर से बना सको जो कभी आपके बीच थे। खुद की बात समझाने के लिये नहीं, परन्तु समझने और मिलाप करने का निर्णय करो।

सप्ताह - ३

अध्याय ८ और ९

कठीन समयों में यातना सहते हुए परमेश्वर पर विश्वास रखना; खोए हुए विश्वास को पुनःस्थापित करना

इस सप्ताह, लिखो कि एक नए मसीह के रुप में आप कैसा महसूस कर रहे थे। आपको कैसा महसूस हुआ; आपने क्या किया था? यातनाओं ने आप पर कैसे असर डाले, लिखो। एक विशेष शान्त समय (प्रार्थना समय) रखो जहाँ यीशु उनकी परीक्षाओं से कैसे निपटे इन बातों का विचार करो और परमेश्वर से प्रार्थना करो कि उस विश्वास और भरोसे को लौटाए जो कभी आपके पास था।

सप्ताह - ४

अध्याय २ और १०

परमेंश्वर की क्षमा और मकसद् को स्विकारना : परमेश्वर के मकसद् में शामिल होना

इस सप्ताह, अपने उद्धार के लिये आभार प्रकट करने का एक विशेष समय रखो। उन वचनों के बारे में प्रार्थना करो जो यह दिखाता है कि यीशु दूसरों के और अपने मकसद् पर केन्द्रित थे, जब वे क्रूस पर थे तब भी। और अपने विश्वास को और क्षमा के अनुभव को दूसरों के साथ बाँटने का एक विशेष समय रखो।

सप्ताह - ५

अध्याय ६ और १६

सपने और यथार्थ का चित्रण : फिर से सितारों की ओर देखना

इस सप्ताह एक विशेष जगह पर रात भर प्रार्थना का समय रखो। सितारों को देखने का प्रयत्न करो। यीशु को कुकर्मियों के साथ क्रूस पर लटकाए जाने के दृश्य को देखने की कल्पना करो। कभी आपके जो सपने थे उनके लिये और आज आपके जो सपने हैं उनके लिये प्रार्थना करो। परमेश्वर से चमत्कार के लिये प्रार्थना करो जिनके सपने देखने से भी आप घबराते थे।

सप्ताह - ६

अध्याय ७ और २०

विस्तार में प्रेम है : उनसे प्रेम करो जिन्हें परमेश्वर ने आपको दिया है।

इस सप्ताह प्रार्थना में ऐसा समय रखो जहाँ दूसरों से यीशु ने कैसे प्रेम किया, खास तौर पर जब वह क्रूस पर थे, इस विषय पर प्रार्थना करो। अपने परिवार से संपर्क करने का समय निकालो (जो आपके साथ नहीं रहते)। उन्हें बताओ (लिखकर या बोलकर) कि आपके लिये वे कितना मायने रखते हैं, और जो कुछ उन्होंने आपके लिये किया उसका धन्यवाद करो। यही उनके साथ भी करो जिनके साथ आप रहते हो।

सप्ताह - ७

अध्याय ११ और १३

असफलता और संदेहों पर विजय पाना : शैतान के रुकावटों को लांघना

इस सप्ताह, अपने जीवन की सबसे बड़ी असफलता का विचार करो। प्रार्थना समय रखो जहाँ आप यह विचार करो कि आप कहाँ चूके, और यह भी कि यीशु के क्रूस के पास खड़े लोगों ने कैसे यही गलतियाँ कीं। विचार करो कि कैसे उन असफलताओं का प्रभाव आप पर पड़ा और परमेश्वर से प्रार्थना करो कि आपको पतरस और थोमा सा मन दे, जो अपने विश्वास के निम्नतम् बिन्दु से उभरे।

सप्ताह - ८

अध्याय १२ और २१

भटकना और शिष्यता : अपने जीवन में परमेश्वर की योजनाओं को पुनःस्थापित करना।

इस सप्ताह, यहूदा और बरअब्बा के बारे में प्रार्थना करो, परमेश्वर का धन्यवाद करो कि उनके वचन हमें कैसे शिक्षण देते हैं। एक धार्मिक मित्र के साथ समय बिताओ। अपने जीवन के बारे में बात करो और अपनी शक्तियों और कमज़ोरियों के बारे में खुले रहो। जिन क्षत्रों में आपको मदद की आवश्यकता है उनके लिये मार्गदर्शन माँगो।

सप्ताह - ९

अध्याय १४ और २३

लोगों को खुश करना और बीती बातों से निपटना : अपने मन में निडरता जगाना।

इस सप्ताह, हेरोदेस और पिलातूस को विचारों में रखकर प्रार्थना करो कि कैसे परिस्थितियों ने उन्हे सही चुनावों से दूर धकेला। उन चीजों की सूची बनाओ जो आपको परमेश्वर की बातों से दूर रखते हैं। यह, दूसरे लोगों की आपसे अपेक्षाएँ, हो सकता है, या फिर आपको तनाव में डालनेवाली बातें, या फिर आपके भूतकाल के अनुभव। यदि कुछ बातें हैं जो किसी से, आदरपूर्वक, प्रेमपूर्वक और अकेले में कुछ कहना चाहते हैं तो उनसे मिलो और बात करो।

सप्ताह - १०

अध्याय १५ और १९

परमेश्वर की बातें या मनुष्यों की बातें : मसीह को केन्द्रस्थान देना

इस सप्ताह, अपने आपको क्रूस के चारों और जो सैनिक थे और मृतकों में से जी उठे सन्तों की जगह रखकर देखो। उन्होंने क्या देखा और कैसा महसूस किया होगा इस बारे में विशेष प्रार्थना करो। फिर एक संसारिक उपलब्धि या शौक को परमेश्वर के सामने रखो। शायद आप संसारिक सम्पति किसी को उपहार में दे सकते हैं। शायद आपका शौक या कुछ और आपको आपके परिवार और परमेंश्वर के परिवार - कलीसिया से दूर ले जा रहा है। इसके बारे में अपने मित्र से बात करो और आवश्यकता पड़ने पर परमेश्वर की खातीर इसकी सीमाएँ बान्ध दो।

सप्ताह - ११

अध्याय १७ और १८

निष्ठा और आभार : परमेश्वर और मनुष्यों का धन्यवाद करना।

इस सप्ताह, मरियम मगदलीनी और यूहन्ना को ध्यान में रखकर प्रार्थना करो, यह विचार करते हुए कि यीशु कि मृत्यू के वक्त यीशु के मित्र के नाते कैसे इन परिस्थितियों से वे उभरे। परमेश्वर से उन लोगों को धन्यवाद देते हुए प्रार्थना करो जिन्होंने आपके जीवन में कुछ परिवर्तन लाया : शिक्षक, मित्र, धार्मिक मददगार। उनमें से कम से कम एक से संपर्क कर उन्हें विशेष रुपसे धन्यवाद करें; उन सब बातों के लिये जो उन्होंने आपके लिये किया, और आपके लिये वे कितने खास हैं।

सप्ताह - १२

अध्याय २२ और २४

बदलाव लाने की चाह :
एक समय एक आत्मा द्वारा संसार को बदलना

इस सप्ताह, कुरेन के शिमौन और इम्माऊस के मार्ग के व्यक्तियों के लिये प्रार्थना करो वचनों का एकअनुछेद चुनकर उसे पढ़ो और उसके द्वारा परमेश्वर के साथ मिलकर इस ध्येय के लिये प्रार्थना करो कि, आपके हृदय को फिर से परमेश्वर के लिये जलने में मदद करें। परमेश्वर के बारे में जिनसे बात करना है उन लोगों की एक सूची बनाओ। किसी भी अलग-अलग क्षेत्र के हो सकते हैं जिन्हें परमेश्वर ने आपको दिया है। इन लोगों से परमेश्वर के विषय में बातें करना आरंभ करें।

Bibligraphy

Barclay, William. The Daily Study Bible : The Gospel of Matthew; The Gospel of Mark; The Gospel of Luke; The Gospel of John; The Acts of the Apostles. Edinburgh, Scotland : Saint Andrew Press, 1975.

Chenu, Bruno, Claude Prud'homme, France Quere, Jean-Claude Thomas. The Book of Christian Martyrs. London : SCM Press 1990.

Edwards, Gene. Exquisite Agony : Experiencing the Cross as Seen from the Father. Jacksonville, Florida : The Seed Sowers, 2004.

Hardin, Craig, and David Bevington, eds. The Complete Works of Shakespeare. Glenview, IL : Scott Foresman and Company, 1973.

Mangalwadi, Vishal, Vijay Martis, M.B. Desai, Babu K. Verghese, and Radha Samuel. Burnt Alive : The Staines and the God They Loved. Mumbai : GLS Publishing, 1999.

McBirnie, William Steuart. The Search for the Twelve Apostles. Wheaton, IL : Tyndale House Publishers, 1973.

Rogers, Cleon L. Jr. The Topical Josephus : Historical Accounts That Shed Light on the Bible. Grand Rapids, Michigan : Zondervan Publishing House, 1992.

Shanks, Hershel, and Dan P. Cole. Archaeology and the Bible : The Best of BAR, Volume 2 : Archaeology in the World of Herod, Jesus and Paul. Washington, DC : Biblical Archaeology Society, 1990.

Templer, Mark. The Prayer of the Righteous. Boston : Discipleship Publications International, 2000.